Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान (मासिक)

१६ अप्रैल से १५ मई १९८९

महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती समारोह में अखिल भारतीय जनता पार्टी के महासचिव श्री केदारनाथ साहनी महात्मा जी को श्रद्धा प्रसून अर्पित करते हुए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

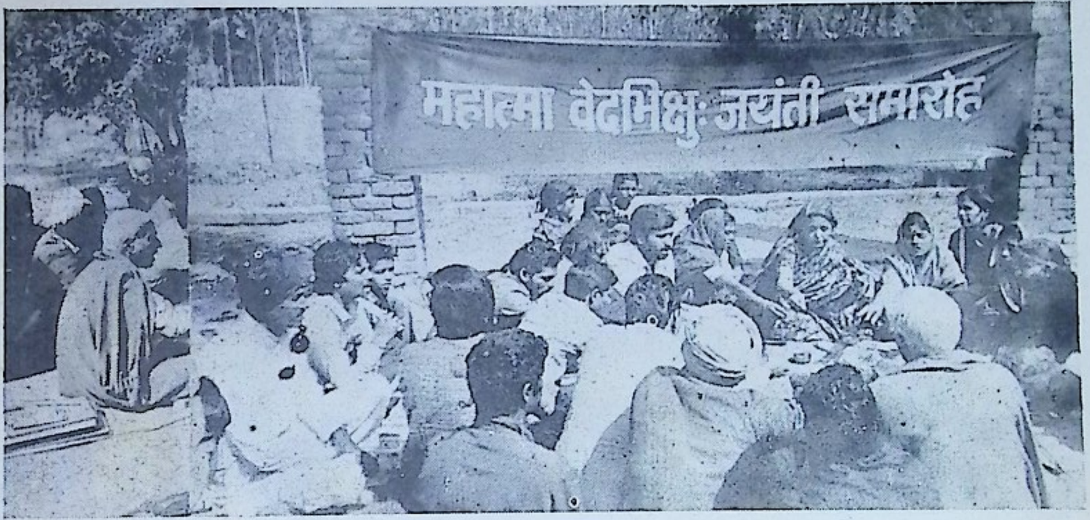

१४ मार्च को इब्राहीमपुर ग्राम के समीपवर्त्ती वेदमन्दिर (महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम) में महात्मा जी के इकसठवें जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित हवन-यज्ञ का दृश्य । चित्र में यजमान पंडिता राकेशरानी जी आहुति देती दिखाई दे रही हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य के लिए संघर्ष करो।

संस्थापक— स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:
सम्पादक—पंडिता राकेशरानी
सह-सम्पादक—विमलचक्षु:
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
मुखमेलपुर, दिल्ली-110036
दूरभाष : 7202325
कार्यालय—2286, आर्यसमाज मार्ग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष—5724741

वार्षिक मूल्य : 35 रुपये
आजीवन : 501 रुपये
विदेश में : विमान से 48 पौंड, 60 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
विदेश में : 1501 रुपये

यह अंक : साढ़े तीन रु०
अप्रैल 1989 वर्ष 21, अंक 12

प्रार्थना

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ॥

भावार्थ—प्रकृति तथा समाज के नियमों पर आचरण का मार्ग ही सत्यमार्ग है। उसी से कल्याण होता है। यहाँ ईश्वर को नियमपालक कहने का विशेष उद्देश्य यह है कि उसके माध्यम से प्रकृति के नियमों की पूर्णता की ओर संकेत किया गया है। उन नियमों में न तो कोई बाधक हो सकता है और न ही कोई उनमें कमी निकाल सकता है। असत्य को छोड़कर सत्य का आचरण करना ही ईश्वरोपासना की पहली सीढ़ी है। यही यज्ञमय जीवन की दीक्षा है। वास्तविक सत्य वही है, जिसमें लोकहित की भावना निहित हो। सत्य वह है, जिसमें वही कहा तथा किया जाये जो मन में हो और वही मन में हों, जो प्रकट रूप में किया जाये अर्थात् छल-कपट, गोपन न हो—वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितम् अर्थात् मेरी वाणी मन में प्रतिष्ठित हो और मेरा मन वाणी पर आधारित हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भगवान् रामचन्द्र जी,
चैत्र शुक्ल नवमी
(१४ अप्रैल) को
जिनका शुभ
जन्मदिन है।

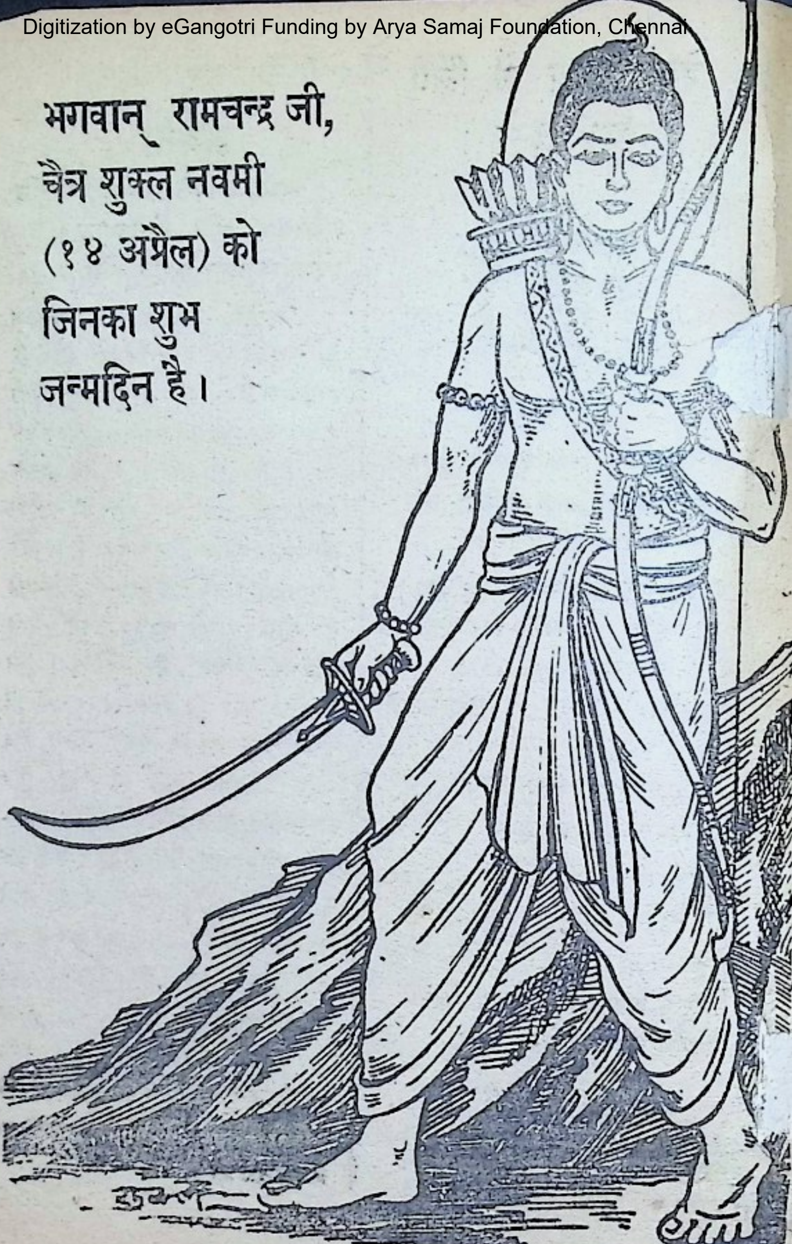

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

नमामि रामं रघुवंशनाथम्, एक यशस्वी साहित्यकार का वियोग (सम्पादकीय) ४

घर को सुधारने के लिए (महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी) १०

महात्मा वेदभिक्षु: जयन्ती समारोह १२

आप ही के पत्र १४

निर्भय हो हुंकार करें (कविता) —राधेश्याम आर्य २०

सामयिक विचार धवन घेरे में २१

प्राचीन गुरुकुलों का शिक्षण विधान —एस. श्री कण्ठमूर्ति २४

आप के मन से ! (कविता) —भारतेन्द्रनाथजी ३०

आर्यों का आदि देश और पाश्चात्य षड्यन्त्र —राजेन्द्रसिंह ३३

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है —रत्नाकर रत्न वर्मा ५१

ऋषि दयानन्द की दृष्टि—होती यज्ञ से वृष्टि —विवेकानन्द सरस्वती ५६

प्रकाश-पुंज आर्य संस्कृति —अमरनाथ आर्य ५९

'अंग्रेज' बनाने वाले कारखानों से सावधान —योगीराज कुमार ६५

वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली का स्वरूप इतना विकृत क्यों ? —ज्योति खरे ६९

राष्ट्रीय एकता के लिए…… —माहेश्वरीदत्त डिमरी ७३

काम में बाधा डालने वालों से न घबरायें —विनायकप्रसाद हिम्मतसिंहका ७६

संस्कृत के प्रति उपेक्षा से भारतीयता नहीं रहेगी —डा. प्रशान्त वेदालंकार ८२

राज्य और राजा क्यों बने ? —जगदीश विद्यार्थी ८७

मन्दिरों पर बनी ये मस्जिदें —अरुण शौरी ९२

भारतीय राजनीति "माफिया तन्त्र" की ओर बढ़ रही है —डा. विद्यासागर ९८

वैकल्पिक चिकित्सायें (स्वास्थ्य-चर्चा) —अशोक गौड़ १०२

सन्तुलित आहार (महिला जगत्) —जया मण्डावरी १०४

बकरीद के अवसर पर जानवरों की कुरबानी गैर-कानूनी —डा श्रीराम आर्य १०६

विषैला वृक्ष (बोध कथा) —कन्हैयालाल गौड़ १०९

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

नमामि रामं रघुवंशनाथम्

देश के एक छोर से दूसरे छोर तक सहस्रों वर्षों से विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी का पावन जीवन-चरित्र श्रद्धा-सहित सुना और पढ़ा जाता है। महर्षि वाल्मीकि ने उनके जीवन का इतिवृत्त लिखकर आदिकवि के रूप में विश्व साहित्य में प्रतिष्ठा अर्जित की है। राम चरित मानस के प्रणेता संत तुलसीदास भी मर्यादा पुरुषोत्तम के गुण-गरिमा-गायक के रूप में अमरत्व प्राप्त कर गए हैं। उनका "मानस" विश्व के विभिन्न अंचलों में जाकर बसे लाखों हिन्दू जनों के मन में "हिन्दूपन" की भावना को जागृत रखने का आधार बना है।

श्री राम की पावन जीवनगाथा ने पराधीनता और हताशा के युग में भी हिन्दू राष्ट्र को आशा की बलवती भावना से अनुप्राणित किया था। अब्दुर्रहीम खानखाना जैसे मुस्लिम श्रद्धालु के श्रीमुख से भी उनकी स्तुति और वंदना के स्वर इन शब्दों में उभरे थे—"चित्रकूट में रम रहे रहिमन अवध नरेश।"

राम का चरित्र स्वयं ही महाकाव्य है। उसका गायन कर अनेक मनीषी और चिंतक महाकवि पद पर अधिष्ठित हो गए, जन-जन में अनेकता में एकता के सत्य के संचरण में भी वह सहायक सिद्ध हुआ है। क्योंकि वह चरित्र एक ऐसे महामानव का है, जिसके जीवन का प्रत्येक पक्ष युगों-युगों से प्रेरणा की गाथा तथा इस देश की महान् संस्कृति के शाश्वत सत्यों का परिचायक रहा है।

वे आदर्श भ्राता, आदर्श पति, आदर्श मित्र, आदर्श सेनानायक और आदर्श शासक के रूप में मानव-मन में प्रतिष्ठित रहे। वे सत्यरक्षार्थ संघर्ष के मंत्रदाता हैं तो जीवनयात्रा के विभिन्न चरणों में जो कुछ श्रेय और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनुकरणीय है, उस सबके भी। अपने बाल्यकाल से ही धर्म का रक्षण और अधर्म का मान-मर्दन उनका जीवन-मंत्र था। युवावास्था में ही श्रीराम अधर्म के विरुद्ध सतत संग्राम के सफल सेनानायक बने थे। उन्होंने पितृ-आदेश को शिरोधार्य कर वन-गमन में भी संकोच न कर एक आदर्श पुत्र की छवि प्रप्त की थी।

वनवास की उस अवधि में भी वेराष्ट्र में अन्याय, दमन और शोषण के विरुद्ध संघर्ष के महान् सूत्रधार रहे थे। स्वदेश में एकता की पुनीत गंगा को प्रवाहित करने का महान् कार्य भी उन्होंने सम्पादित किया था। आध्यात्मिकता महान् वैदिक संस्कृति का सारतत्त्व है। आसुरी प्रवृत्तियों के विरुद्ध शक्ति-संचय भी इसका महान् आधार है। अन्याय के विरुद्ध शर-संधान भी इस महान् संस्कृति का पावन अनुष्ठान है। इन्हीं जीवनमूल्यों के प्रति समर्पित श्री राम ने अपने वनवास की अवधि में इन्हें साकार भी किया था। उन्होंने वनवासियों को धर्म और मर्यादा का ज्ञान प्रदान कर एकता के सूत्र में आबद्ध किया था। सुग्रीव, अंगद, जाम्बवंत और हनुमान् सरीखे पौरुषवान् वनवासियों ने उनके प्रेरक दिशा-निर्देशन में इतिहास के पृष्ठों में जो प्रेरक अध्याय लिखे हैं, सहस्रों वर्षों के उपरान्त भी जन-जन में सत्य की विजय और असत्य की पराजय के प्रति विश्वास की भावना का वे सृजन करते रहे हैं।

उपेक्षित शबरी के बेरों का स्वाद लेने में परम सुख की अनुभूति करने वाले भगवान् राम का प्रेरक जीवन हमें वर्तमान परिस्थितियों में वनवासी और उपेक्षित जनों के प्रति आपके कर्तव्य का बोध करा रहा है। साथ ही इस सत्य का साक्षात्कार करा रहा है कि धन, वैभव, सम्पदा और साधन ही किसी राष्ट्र के जीवन की धारा को अखण्ड रूप में प्रवाहित रखने का मूल आधार नहीं, अपितु साहस और शौर्य तथा सत्य सिद्धान्तों के लिए संघर्ष करने वालों को अन्ततोगत्वा साधन नहीं अपितु ध्येय-साधना ही विजयश्री का वरण कराती है।

सागर-संतरण की वेला में श्री राम के मुख से तुलसीदास द्वारा रचित पंक्तियों में प्रीति का एक शाश्वत मंत्र उजागर हुआ है। जब उन्होंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मर्यादा पुरुषोत्तम के श्रीमुख से इन शब्दों का उच्चारण कराया है:—

विनय न मानत जलधि जड़, गए तीन दिन बीत।
बोले राम सकोप तब, भय बिन होए न प्रीत।।

इन शब्दों में यही तथ्य उजागर होता है कि इस प्रकृति में कतिपय ऐसे जड़ तत्त्व भी सदैव विद्यमान रहे हैं, जो अनुनय-विनय और तुष्टीकरण से सन्मार्ग और प्रीति के मार्ग को न मानकर तभी सन्मार्ग पर आते हैं, जब उनके मन में सत्य की शक्ति के रौद्र-रूप का अनुभव होता है। आधुनिक संदर्भों में भी राष्ट्र की एकता को खण्डित करने में संलग्न कतिपय जड़बुद्धि तत्त्वों को कुमार्ग से हटाने और सुमार्ग पर लाने का मूल मंत्र है—"शठे शाठ्यं समाचरेत्।"

पाश्चात्य अंधानुकरण की प्रवृत्ति से प्रेरित और प्रभावित बुद्धिजीवी आज भौतिक सुख-समृद्धि को राष्ट्रोद्धार का एकमात्र मार्ग मान रहे हैं। उनके समक्ष भी श्रीराम का जीवन एक सत्य का साक्षात्कार कराने का चिरन्तन स्रोत है। श्रीराम के युग में दशकंधर और दशानन कहकर सम्बोधित किया जाने वाला महाबली रावण चारों वेदों का परम विद्वान् होने के बावजूद अहंकार और दर्प के वशीभूत मर्यादा की अवहेलना करते हुए अनीति, अन्याय और अधर्म की शक्तियों का नायक बन जाता है मद, लोभ और अहंकार के वशीभूत हो जाने पर उसे अपने सहोदर विभीषण का परामर्श भी नहीं भाता और वह अपने परिवार के लिए ही नही अपितु प्रजाजनों के लिए भी पराभव की स्थिति का सृजन करता हैं। राम के प्रेरक नेतृत्व में सुसंगठित धर्म, मर्यादा, सत्य, शील और विनय के साथ ही साथ प्रबल पौरुष और पराक्रम की परिचायक शक्ति का संग्रह साधनों नहीं अपितु विश्व में वास्तविक मानवीय भावनाओं के संचरण के लक्ष्य को मूर्त्त रूप देने के लिए प्रचंड साधना के माध्यम से होता हैं और उसके समक्ष आसुरी प्रवृत्तियों के अभेद्य दुर्ग धूलि-धूसरित हो जाते है। आर्य मर्यादाओं को जीवन में साकार करने वाले श्रीराम श्रीलंका पर विजयकेतु फहराने वाले साम्राज्यवादी नहीं अपितु मानवता के संदेशवाहक बनकर श्रीलंका के जन-गण में भी वंदित और पूजित हो जाते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वदेश के समक्ष आज जो परिस्थितियां विद्यमान है, उनमें भी श्रीराम की प्रेरक जीवनगाथा प्रत्येक राष्ट्रभक्त के लिए पथ-प्रदर्शक है। ब्रिटिश राज्य-सत्ता के विरुद्ध संघर्ष के पथ पर बढ़े महात्मा गांधी ने भी इस राष्ट्र से नैराश्य भाव को दूर करने के लिए रामराज्य का महान् आदर्श प्रस्तुत किया था। राम का आसुरी सत्ता के विरुद्ध रण-आह्वान इस देश के श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द और स्वातन्त्र्य वीर सावरकार जैसे क्रांतिधर्मा महापुरुषों के लिए प्रेरणा का प्रकाशपुंज रहा था। राष्ट्र के समक्ष आज विघटन और विखंडन की शक्तियां जो संकटापन्न स्थिति पैदा कर रही हैं, उनसे उबरने का मूल मंत्र मर्यादा पुरुषोत्तम के जीवन का अनुगमन ही है।

आइए, रामनवमी के पावन पर्व पर राष्ट्र में अनेकता, विघटन और विखंडन की शक्तियों के शमन का संकल्प ग्रहण करें। संकल्प ग्रहण करें एकता की उस पुनीत धारा को सतत प्रवाहित रखने का, जिसने सहस्रों वर्षों के कालखण्ड में इसे ऐक्य सूत्र में आबद्ध रखा है। हम प्रेरणा लें ऋग्वेद के उस महान् मंत्र से, जो भगवान् राम के लिए भी प्रेरक बना था, जिसमें कहा गया है कि समाज के सभी व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे के मित्र हों। समस्त दिशाओं से हममें उदात्त विचारों का आगमन हो। राष्ट्र के नागरिकों का एक समान आचरण, समान विचार, समान मन हो। सभी संगठित हों।

वेदमन्त्र का यह महान् आदेश भी आज हम स्मरण करें कि राष्ट्र की स्वतन्त्रता की रक्षार्थ नागरिकों में अदम्य साहस, अटूट देशप्रेम, आत्मोत्सर्ग आदि गुणों की आवश्यकता है। वैदिक ऋषि का यह आदेश भी हम स्मरण करें कि व्यक्ति राष्ट्र की सेवा के लिए पदार्थों का उपभोग करे।

हम यह भी स्मरण रखें कि एक जीवित राष्ट्र कर्म करता है, उसके कर्म आत्मा और मन से अर्थात् ज्ञान और संस्कृति से प्रेरित होते हैं। राष्ट्राभिमान सम्पन्न राष्ट्रभक्त यही कहता है कि "मेरे देश, हम सब लोग आरोग्य और पूर्ण आयु वाले होकर तुझ पर सर्वस्व न्यौछावर करने वाले हों।"

भगवान् राम का पावन स्मरण नवोत्थान का परिचायक है। हम भी मानते हैं कि जो अतीत सदैव के लिए जा चुका है, उसे पुनर्जीवित नहीं किया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जा सकता। परन्तु उनकी उपलब्धियों को समझकर और उन्हें समुचित महत्व देकर ही हम भा ी ग्रगति का आधार बना सकते हैं। हमें विदेशी धार्मिक सांस्कृतिक घुसपैठ का प्रतिरोध तो करना ही होगा। अराष्ट्रीयता के विरुद्ध हमें यह घोषणा करनी ही होगी। राम का जीवन हमें यही शिक्षा प्रदान करता हैं। हमें स्मरण रखना होगा कि लोकजीवन के विकास क्रम में वस्तु-निष्ठ और भावनिष्ठ दोनों प्रकार के ऐतिहासिक तत्वों की परिपक्वता ही विशुद्ध राष्ट्रवाद को संपुष्ट करती है।

आज संकल्प की बेला में राष्ट्र के प्रति सर्वस्व समर्पण की भावना से शुद्ध अन्तकरणसहित हम उच्चारें "नमामि रामं रघुवंशनाथम्' ।

एक यशस्वी साहित्यकार का वियोग

जनज्ञान के पाठकों ने यह समाचार पढ़ ही लिया होगा कि न केवल आर्यजगत् के अपितु समस्त हिन्दी जगत् के यशस्वी साहित्कार और विद्वान डॉक्टर सत्यकेतुजी विद्यालंकार का १६ मार्च को बहादुराबाद के समीप कार दुर्घटना में देहान्त हो गया।

वे इतिहास लेखक के रूप में देश भर में विख्यात थे। उन्होंने सात खण्डों में आर्य समाज का इतिहास लिखा। इस इतिहास में उन्होने अनेक स्थानों पर दयानन्द संस्थान, जनज्ञान प्रकाशन, जन ज्ञान पत्रिका और इन प्रतिष्ठानों के सूत्रधार पण्डित भारतेन्द्रनाथ जी (महात्मा वेदभिक्षु जी) की प्रशंसात्मक शब्दों में चर्चा की। वे "परिचायिका" नामक एक अन्य पुस्तक लिखवाना चाहते थे, जिसमें आर्य पुरुषों का परिचय होता ८६ वर्ष की उम्र में भी वे इसके लेखक और प्रकाशन में सक्रिय सहयोग देने को तैयार थे, क्योंकि इतना बड़ा ग्रन्थ तैयार करना किसी एक व्यक्ति के बूते की बात नहीं। इस प्रकाश्य पुस्तक में दिवंगत भारतेन्द्रनाथजी की जीवनी सम्मिलित करने के लिए उन्होंने हमसे सम्पर्क किया, लेकिन इसी बीच ब्रोंकाइटिस से पीड़ित हो जाने के कारण वे इस कार्य को पूर्ण न कर सके। संस्थान परिवार के लिए उनके मन में गहरा सद्भाव था। कहना चाहिये कि वे संस्थान परिवार के बुजुर्ग थे।

हम अश्रुपूर्ण नयनों से उन्हें अपने श्रद्धाप्रसून समर्पित करते हैं, उनकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं और उनके शोक-सन्तप्त परिवार से गहरी समवेदना प्रकट करते हैं।

१७ मार्च को एक राजनेता भी हमसे वियुक्त हुए। हमारा आशय श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा से है। उनका एक उल्लेखनीय गुण यह था कि राजनैतिक मतभेदों के बावजूद वे पारस्परिक मधुर सम्बन्ध बनाये रखते थे। इसी कारण वे अन्त तक लोकप्रिय बने रहे।

उन्हें भी हमारी श्रद्धांजलि।

वेद मन्दिर में वेदभिक्षुः जी की जयन्ती

१४ मार्च को इब्राहीमपुर ग्राम के समीपवर्त्ती वेद मन्दिर (महात्मा वेद-भिक्षुः सेवाश्रम) में महात्मा जी का जन्मदिन मनाया गया। सन्ध्या और हवन-यज्ञ के बाद भजन-कीर्त्तन का कार्यक्रम चला। समीपवर्त्ती ग्रामों से अनेक श्रद्धालु इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। पूर्णाहुति के अनन्तर हिन्दी निदेशालय के शोध सहायक श्री वेद प्रकाश विद्यार्थी, हिन्दी पत्रकार श्री सत्यपाल शास्त्री और दैनिक नवभारत टाइम्स के संवाददाता श्री अनिल लोढ़ा ने आध्यात्मिक और सामाजिक महत्त्व के विषयों पर अपने विचार प्रकट किये और महात्मा वेदभिक्षुः जी को ससम्मान स्मरण किया। दयानन्द संस्थान के सहयोगी श्री बलदेव जी ने ग्यारह सौ रुपये दान किये।

आवश्यक सूचना

हर चीज का मूल्य बढ़ जाने के कारण जन-ज्ञान (मासिक) के शुल्क में वृद्धि करनी पड़ रही है। मई १९८९ के अंक से पत्रिका का वार्षिक शुल्क ४० रुपये होगा—एक प्रति का चार रुपये। लेकिन जो नये ग्राहक और पुराने ग्राहक (ग्राहक संख्या अंकित करके) पहली मई तक ग्राहक बन जायेंगे, उन्हें वर्षभर ३५ रुपये में ही पत्रिका मिलती रहेगी।

आशा है कि हमें आप सब का सहयोग यथापूर्व मिलता रहेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

घर को सुधारने के लिए

आप अपने बच्चों को अच्छा बनाना चाहते हैं और जनता पर अपना अच्छा प्रभाव डालना चाहते हैं तो इसका एकमात्र मार्ग है प्रतिदिन यज्ञ-संध्या करना।

आप आरम्भ कीजिए। दोनों समय न कर सकें तो एक समय कीजिए, पर कीजिए अवश्य।

छोटे-बड़े, घर-बाहर के व्यक्ति यदि प्रतिदिन एक साथ बैठकर यज्ञ करेंगे तो आपके परिवार का कायाकल्प हो जाएगा। आपका घर स्वर्ग बन जाएगा।

अधिक समय नहीं लगेगा—केवल २०-२५ मिनट। बस आपको अनुभव होगा कि आप असाधारण हो रहे हैं। आपका घर अन्यों से भिन्न है—बहुत सुन्दर।

सत्संग में भी प्रतिसप्ताह एक साथ भाग लें। अपने बच्चों को, मित्रों को साथ लेकर सत्संग में जाएं।

ये सब बहुत छोटी-छोटी बातें हैं, पर इनका प्रभाव बहुत दूरगामी होगा जिसकी आप इन पंक्तियों को पढ़ते हुए कल्पना भी नहीं कर सकते।

क्या आप आरम्भ करेंगे ?

मम्मी-डैडी मुर्दाबाद, पैन्ट-टाई मुर्दाबाद,
अंग्रेजियत मुर्दाबाद, भारत माता जिन्दाबाद।

अंग्रेज चले गए, पर हम स्वयं अंग्रेज बन गये। १८४७-१९४७ के १०० वर्षों में विदेशी सभ्यता उतनी नहीं उभरी, जितनी इन २५-३० वर्षों में। हर बच्चा मम्मी-डैडी बोलता है। माताजी-पिताजी को तो मार दिया गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पैंट बिना सभ्यता नहीं आती ! अंग्रेजी बोले बिना अनपढ़ रहते हैं और घरों में हर प्रथा विदेशी आवरण ओढ़ कर पनप रही है।

गुंडागर्दी, डाके, भ्रष्टाचार की जड़ में है फैशन, अंग्रेजियत। खर्चे बढ़ा लिए, दिखावा बढ़ गया और खर्चा पूरा करने के लिए अवैध उपाय अपनाने आवश्यक हो गए।

आप स्वयं सब कुछ जानते हैं पर कुछ बोलते नहीं। आखिर क्यों ?

समय आ गया है जब मम्मी-डैडी शब्द और इनके पीछे छिपी नाशकारी परम्परा को मिटाने के लिए हम कमर कस कर तैयार हों।

जनसभाएं कीजिए

आर्यसमाजों के अधिकारी सर्वत्र जनसभाओं की व्यवस्था करें। वर्ष में १२ जनसभाएं, की जाएं जिनमें आर्यसमाज के आध्यात्मिक स्वरूप को प्रखर रूप से मुखरित किया जाए।

जनसभाओं पर व्यय कम से कम हो। जो भी व्यय हो वह प्रचार के लिए मुनादी, इश्तिहार, स्टेज आदि पर हो। वक्ताओं का प्रबन्ध यथासंभव अपने समीप से किया जाए या प्रांतीय सभाओं से सहयोग लिया जाए।

भवनों से बाहर निकलो, मैदान में आओ और युग को अपने साथ लेकर बढ़ने का संकल्प लो।

ऐसी अग्नि प्रज्वलित करो कि पाप-अधर्म, भ्रष्ट आचरण उसमें जल कर स्वाहा हो जाएं।

कर्मक्षेत्र में क्रांतिदूत बन कर आओ। धर्मक्षेत्र में विजय प्राप्त करो। जनता के मन तक पहुंचो। जनमानस का स्नेह-सहयोग आपको अवश्य मिलेगा; यह हमारा विश्वास है।

वार्षिक अवकाश में

जो आर्य बन्धु प्रचार में रुचि रखते हैं, वे अपना ग्रीष्मावकाश का समय प्रचार में लगाएं।

ईसाई प्रभावित क्षेत्रों में जाएं। सारी व्यवस्था संस्थान करेगा। साहित्यादि वितरण का भी प्रबंध करेगा।

आप अपना समय दीजिए और ग्रामों में, पर्वतों में, पिछड़े क्षेत्रों में वैदिक प्रचारक बन कर पहुंचिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षु: जयन्ती समारोह

विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों द्वारा श्रद्धा-प्रसून समर्पित

नई दिल्ली। दयानन्द संस्थान और अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के संस्थापक व अनेक उपक्रमों के माध्यम से आजीवन राष्ट्र की सेवा के लिए सर्वस्व समर्पित करने वाले दिवंगत देवपुरुष महात्मा वेदभिक्षु: जी के इकसठवें जन्म-दिवस के अवसर पर यहां अनेक समारोह आयोजित हुए। १४ मार्च को पंजाब केसरी, वीर अर्जुन, मिलाप संदेश आदि समाचारपत्रों ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर विशेष लेख प्रकाशित किये।

मुख्य समारोह १२ मार्च को आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग में हुआ। वक्ताओं ने जहां वेदभिक्षु: जी तथा उनके कार्यों का गुणानुवाद किया, वहीं राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर अपने विचार भी प्रकट किये।

श्री अजयकुमार भल्ला महात्माजी का गुणानुवाद करते हुए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज मन्दिर का सभागार श्रोताओं से खचाखच भरा था। अनेक वर्गों के प्रतिनिधि महात्मा जी को श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए दूर-दूर से आये थे।

हिन्दी संवाद समिति "भाषा" के प्रधान सम्पादक डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने महात्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए खोमैनी—रशदी विवाद की चर्चा की और कहा कि आय तुल्ला खोमैनी तथा सलमान रशदी दोनों ही कायर हैं। एक निहत्थे आदमी के खिलाफ हत्या का फतवा दे रहा है तो दूसरा अपनी बात लिखकर मौत के भय से माफी मांग रहा है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज शस्त्र का जवाब शस्त्र से और शास्त्र का जवाब शास्त्र से देने में विश्वास करता है। हम शास्त्र का जवाब शस्त्र से देने के विरोधी हैं। कुरान शरीफ और बाइबिल पर महर्षि दयानन्द ने आपत्तियाँ उठाई, तो उन्होंने पुराणों और दूसरे हिन्दू धर्मग्रन्थों की भी आलोचना की। आर्यसमाजी जो बात कहता है, उसके लिए तर्क-वितर्क एवं शास्त्रार्थ के लिए तैयार रहता है, लेकिन मौत के डर से माफी नहीं माँगता। महात्मा वेदभिक्षु: इसी परम्परा के साधक थे, जिन्होंने महर्षि दयानन्द के काम को आगे बढ़ाया और पूरी ताकत तथा निर्भीकता से सच को सच कहा।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव श्री केदारनाथ साहनी ने कहा कि आज हमारे समाज में संस्कारहीनता का जो आंतरिक खतरा है, वह किसी भी बाहरी खतरे से अधिक भयावह है। महात्मा वेदभिक्षु: ने संस्कार-हीनता के इस खतरे को सही समय पर समझा और राष्ट्रीय स्वत्व को जगाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। हालांकि ऐसे महान् साधकों को कुछ लोग प्रतिगामी कहने से भी नहीं चूकते, यदि परन्तु देश आज बचा है तो वह ऐसे ही लोगों की साधना का फल है।

राज्य सभा के सदस्य श्रीरामचन्द्र विकल ने कहा कि महात्मा वेदभिक्षु: ने जिस तरह वेदों का हिन्दी भाष्य प्रकाशित कर घर-घर पहुँचाया, उसके लिए आर्यसमाज सदैव उनका ऋणी रहेगा। आर्यसमाज करौलबाग के प्रधान श्री अजय भल्ला और दयानन्द संस्थान के प्रतिनिधि श्री अनिल लोढ़ा ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे। समारोह का सभापतित्व श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने तथा संचालन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप ही के पत्र

मान्यवर,

पत्र के लिए हार्दिक धन्यवाद। यदि मैं स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः जी के जयन्ती समारोह में सम्मिलित हो सकता तो मुझे हार्दिक प्रसन्नता होती। कृपया मेरी ओर से बहन राकेशरानी जी से क्षमा मांग लें। समय मिला तो अवश्य ही किसी ऐसे समारोह में, जहां महात्मा वेदभिक्षुःजी को श्रद्धांजलि भेंट करनी हो, सम्मिलित होने का प्रयास करूंगा।

बहन राकेशरानीजी को मेरी नमस्ते कहें। भवदीय—वीरेन्द्र

प्रधान, आर्य प्रतिनिधिसभा

पंजाब, गुरुदत्त भवन, जालन्धर

प्रियवर आदरणीय धर्मवीर जी,

सादर सस्नेह नमस्ते।

आदरणीय श्रीमान् वेदभिक्षु जी के जयन्ती कार्यक्रम का पत्र मिला। धन्यवाद।

भगवान् से मेरी प्रार्थना है कि आपका कार्यक्रम पूर्ण सफलता प्राप्त करे और देश की बिगड़ती स्थिति सुधारने में समर्थ हो।

आज तो रेडियो और टेलीविजन पर पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गांधी और राजीव गांधी को ही महापुरुषों और नेताओं के रूप में चित्रित किया जाता है, मानो इस देश में कोई अन्य महापुरुष पैदा ही नहीं हुआ। यह सब जानबूझकर किया जा रहा है। आपका—

वृन्दावन (ज़िला मथुरा) विशनचन्द्र सेठ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रिय धर्मवीर जी, नमस्ते।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि महात्मा वेदभिक्षु जी की जन्मजयन्ती १२ मार्च को मनाई जा रही है। इस अवसर पर उनकी साहित्य-सेवा का बरबस स्मरण हो आता है। उन जैसा कर्मठ और दिलेर व्यक्ति हमने नहीं देखा। उन्होंने अकेले ही जितना कार्य किया, उतना अनेक संस्थायें मिलकर भी नहीं कर सकीं। मेरी विनत श्रद्धांजलि। भवदीय—

भवानीलाल भारतीय, चंडीगढ़

महोदया,

वैदिक ऋषिपरम्परा के महात्मा तपोमूर्ति वेदभिक्षु जी की पुण्यस्मृति पर यज्ञाहुति प्रेषित है। कृपया स्वीकृत करें। शशिभूषण श्रेष्ठ,

शीतलमाझा (देवरिया)

प्रिय श्रीमती राकेशरानीजी,

सस्नेह नमस्ते।

प्रिय बन्धु महात्मा वेदभिक्षु जी की इकसठवीं जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह का निमन्त्रण पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद। हमारी मंगल कामनायें आप सबके साथ हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि वह आपको महात्मा वेदभिक्षु जी के कार्यों और आदेशों को निरन्तर सफलता की ओर बढ़ाने का सामर्थ्य प्रदान करे। सबको सस्नेह नमस्ते कहें। भवदीय—

लक्ष्मण कुमार शास्त्री, कानपुर

प्रियवर धर्मवीरजी,

नमस्ते।

स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु जी की इकसठवीं जयन्नी के समारोह का

प्रिय बहनजी, सप्रेम नमस्ते।

आपके भेजे दोदों निमन्त्रणपत्र प्राप्त हुए। मैं आना तो चाहता था, लेकिन स्वास्थ्य यात्रा की अनुमति नहीं देता। आप की प्रसन्नता और उन्नति के लिए ईश्वर से सदा प्रार्थना करता रहता हूं। आपका शुभचिन्तक

ज्ञानेन्द्र सिंह, रिवाड़ी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदरणीय श्री धर्मवीरजी,

स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु जी की जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित श्रद्धांजलि सभा की सूचना प्राप्त हुई। अस्वस्थ होने के कारण उपस्थित न हो सका।

पूज्या बहन राकेशरानीजी को मेरी नमस्ते कहें। श्रद्धा सहित आपका—

प्रेमचन्द गुप्त

रूपनगर, दिल्ली

बन्धु श्री धर्मवीरजी, प्रणाम।

आपका भेजा आमन्त्रण मिला। आपकी कृपा है। स्मरण रखने के लिए अनुगृहीत हूं। आशा है कि जयन्ती समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ होगा।

शेष शुभ।

अभयदेव, अजमेर

प्रिय महोदय,

आप द्वारा प्रेषित निमन्त्रणपत्र से यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु जी की जयन्ती के शुभ अवसर पर समारोह का आयोजन किया जा रहा है। धन्यवाद। कतिपय अपरिहार्य कारणों से समारोह में उपस्थित न हो पाने का मुझे खेद है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वचेतनाहेतु इस प्रकार के सत्संग एवं आयोजन अत्यन्त आवश्यक हैं। इनके माध्यम से आम लोगों को भी पूर्वज महापुरुषों के व्यक्तित्व और कृतित्व की जानकारी प्राप्त होती है। मैं समझता हूं कि आप लोग एक पुनीत कार्य कर रहे हैं। उपस्थित न होने के लिए आपसे पुनः क्षमा प्रार्थी हूं। कार्यक्रम की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभ कामनायें स्वीकृत करें।

शुभकामनाओं के साथ

मायापति त्रिपाठी ७, विधानसभा मार्ग, लखनऊ

आर्यसमाजों के निर्वाचन

आर्य समाज फोर्ट, बम्बई के निर्वाचन में श्री रामेचपाल अग्रवाल प्रधान श्री प्रकाश चन्द्र त्यागी उपप्रधान, श्री सुदर्शन कुमार त्रेहन मन्त्री, श्री सदाशिव, आर पन्नावूर उपमन्त्री, श्री निर्मल कपूर कोषाध्यक्ष और श्री बी. टी. शालीयान पुस्तकाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

आर्यसमाज होशंगाबाद के निर्वाचन में डॉक्टर धर्मेन्द्र प्रसाद प्रधान, श्री नारायण दास आर्य उपप्रधान, श्री यतेन्द्र आर्य मन्त्री, सर्वश्री अम्बाप्रसाद कुशवाह और विवेक मिश्र उपमन्त्री, श्री रामावतार राजपूत कोषाध्यक्ष श्री कमल मतवाला पुस्तकाध्यक्ष और सर्वश्री आनन्द अदलिया और शिवदयाल नावड़ा प्रचार मन्त्री निर्वाचित हुए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य ५०० रु.
२.	सामवेदः आध्यात्मिक भाष्य (पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	८० "
३.	वेद-ज्योति	१५ "
४.	वेदांजलि : (वर्ष के ३६५ दिनों के लिए ३६५ वेद मन्त्रों की व्याख्या)	३० "
५.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या)	२० "
६.	अथर्ववेद परिचय	६ "
७.	संस्कार विधि (सजिल्द)	२० "
८.	सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	३० "
९.	यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) (डा. रामनाथ वेदालंकार)	२५ "
१०.	सत्यार्थ-प्रकाश (१०" x १५") स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर)	१५१ "
	" " (आर्ट पेपर पर)	२०१ "
११.	ज्योति-स्तम्भ	१० "
१२.	वैदिक सम्पत्ति	१०१ "
१३.	योगासन	२ "
१४.	योग और ब्रह्मचर्य	३ "
१५.	Concept of God	५० "
१६.	श्रीमद् दयानन्द प्रकाश	२५ "
१७.	LIGHT OF TRUTH	५० "
१८.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	६ "
१९.	वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य)	५० "
२०.	संक्षिप्त महाभारत	५० "
२१.	संक्षिप्त रामायण	१० "
२६.	गायत्री मन्त्र का चार्ट हिन्दी व्याख्या सहित	१.५० "

दोनों ओर पत्ती लगा। कम से कम दस प्रतियां मंगवायें। सूचीपत्र मुफ्त मंगायें। आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

कार्यालय :
२२८६, आर्यसमाज रोड़
करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
मायापुरी, दिल्ली-११००३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अ. भा. हिन्दू रक्षा समिति की माँगें

१. मजहब के आधार पर पुलिस, सेना व सभी सरकारी विभागों आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

२. कश्मीर, असम व देश के सभी भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरि को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

३. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

४. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विद्यालय खोलने की अनुमति दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान कि जाए।

५. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण नीति समाप्त की जाए।

६. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम औ अधिकार बनाए जाएं।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहाँ भारत नागरिकों के बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पु शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथप भरने का नियम बनाया जाए, जिसमें वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपन मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त समाप्त किया जाए।

आप भी अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कर इन माँगों को भारत सरकार के पास भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचारक साहित्य बाँटिए

१.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० पसे
२.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु:	६० पैसे
३.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	३० पैसे
४.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	६० पैसे
५.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	६ रु०
६.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	६० पैसे
७.	पोस्टर दो प्रकार के	१.२० पैसे
८.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	६० पैसे
९.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	६० पैसे
१०.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	६० पैसे
११.	इस्लाम—एक परिचय	६० पैसे
१२.	A Challenge to the Christian Faith	६० पैसे
१३.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	६० पैसे
१४.	पादरियों को चुनौती	६० पैसे
१५.	बाइबिल को चुनौती	६० पैसे
१६.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	६० पैसे
१७.	...और पादरी भाग गया	६० पैसे
१८	Christianity Unmasked	१ रु०
१९.	The Clarion Call	६० पैसे
२०.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	६० पैसे
२१.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	६० पैसे
२२.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	६० पैसे
२३.	हिन्दू जागेगा देश का संकट भागेगा ?	६० पसे

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और
५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन
प्रत्येक आदेश के साथ १/४ धन अगाऊ भेजें।

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली—5

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निर्भय हो हुंकार करें

☐ राधेश्याम आर्य

कहाँ विवेकानन्द-दयानन्द की सन्तानें है सोयीं ?
शिवि-दधीचि की सन्तानें हैं, देखो क्योंकर रोयीं ??
भारत की पावन धरती पर, आज हो रहा किसका नर्त्तन ?
कान खोल कर सुनो आर्यो ! आता आज कहां से क्रन्दन ?
धर्मज्योति है कहाँ तुम्हारी—कहाँ वेद का है केतन ?
कौन धूर्त्त है वह, जिसने—श्मशान बना दिया नन्दन ?
भारत की माला में किसने, हिंसावलियाँ आज पिरोयीं ?
कहाँ विवेकानन्द-दयानन्द की सन्तानें सोयी ?
अज्ञान तिमिर की है प्रतीक, संस्कृति भारत में फैल रही।
पुरन्दर के नन्दन में कैसे, तिमिर वायु है डोल रही ?
कौन चुनौती देता हमको—करके हिंसा-गरल वमन,
राम-कृष्ण की संतति जागो—करो अभी गम्भीर मनन।
अक्षय सारी निधियां रक्षित, कहां तुम्हारी हैं खोयीं ?
कहां विवेकानन्द-दयानन्द की सन्तानें हैं सोयी ?
जागो ! भारत-भू के वीरो ! आओ शक्ति-पुकार करें।
देश तथा धरती पर फैली दानवता के तत्व हरें।
उठो ! धरा के अमर सपूतो ! निर्भय हो हुंकार करें।
दानवता का सर्वनाश कर वैदिक धर्म प्रचार करें।
आज कहाँ सो रहे धनुर्धर, पचानन जगता कोई ?
कहां विवेकानन्द-दयानन्द की सन्तानें हैं सोयी ?

"हिन्दू जागेगा—देश का संकट भागेगा"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

धवन घेरे में

भारतवर्ष का भाग्य आजकल ऐसे लोगों के हाथों में है, जो न तो यहाँ की परम्पराओं को जानते हैं और न ही अपने दायित्वों को। देश स्वतन्त्र हुआ तप-त्याग और बलिदानों की धरती पर खड़ा होकर, लेकिन पहुँच गया स्वार्थ, अन्याय और द्रोह के मार्ग पर। भारतीय संस्कृति की आत्मा में रचे-बसे मूल्यों को नकारने वाली पीढ़ी पाप के रंग में रंगी हुई है। भारतीय जन-मानस में उन मूल्यों को पैदा किया और पनपाया जा रहा है, जो किसी भी देश-काल में मानवता के हित के अनुकूल नहीं माने जा सकते।

दुनिया में शायद ही कोई ऐसा देश हो, जो उन अपराधियों को संरक्षण देता हो, जो देशद्रोही हों, जो देश को बेच कर खा जाना चाहते हों, जो स्वार्थों के कारण अपने ही देश के हजारों स्त्री-पुरुषों को बच्चों सहित काल के गाल में जाने को बाध्य कर डालते हों। शासन में रहने के लिए यदि दंगों को भड़काना, लोगों को कत्ल कराना और विदेशियों ले साँठ-गाँठ करना ही नाज-नीति है तो कुनीति क्या है ?

स्वतन्त्रता के बाद की कांग्रेस का नेतृत्व उन लोगों के हाथ में रहा, जो पाश्चात्य अपसंस्कृति के अन्धानुयायी थे। कथित उन्नति और प्रगतिशीलता की अन्धी दौड़ में उन्होंने देश के चरित्र और नैतिक मूल्यों को विनष्ट कर दिया। सत्ता में ऐसी अफसरशाही दान में दे गए, जो मात्स्यन्याय में विश्वास रखती थी और रखती है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या में यदि न्यायमूर्ति ठक्कर राजेन्द्र कुमार धवन के हाथ होने का शक करते हैं, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। हमारे देश की राजनीति में लम्बे समय से ऐसे तत्त्व स्थापित होते रहे हैं, जो 'खाओ, पियो और मौज करो, के सिवा कोई धर्म-ईमान नहीं मानते। यही खाना-पीना और भोग देश के शासक वर्ग की पहचान रह गई है। पैसे के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारण बड़े-बड़े अफसर और मन्त्री बिक जाते हैं। पाठकों को स्मरण होगा कि १९७१ के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान भारतीय मन्त्रिमण्डल की एक बैठक की खबर लीक होकर सी. आई. ए. के हाथों में जा पहुँची। आज तक नहीं बताया गया कि तत्कालीन मन्त्रिमंडल में सी. आई. ए. का एजेण्ट वह मंत्री कौन था। तत्कालीन शासकों को निश्चित रूप से पता था कि वह देश द्रोही कौन है, किन्तु देश की परवाह थी किसे ! सबको सत्ता से मोह था। समय-समय पर भारत के शीर्षस्थ नेताओं के विरुद्ध गम्भीर आरोप लगते रहे हैं, परन्तु, कुछ समय तक अखबारों में छाए रहने के बाद सब मुद्दे गायब हो जाते हैं।

धवन के बारे में श्री ठक्कर के शक को देश की जनता सही मान रही है। विपक्षी पार्टियों और अखबारों की भी यही राय है, परन्तु कांग्रेस धवन को वफादार मानती है अतः धवन निर्दोष हैं। कांग्रेस धवन को गले लगा चुकी है; अब उसे ठुकरा नहीं सकती, क्योंकि अब सवाल नाक बचाने का है। लेकिन सवाल यह है कि नाक बड़ी है या न्याय और राष्ट्र ? यहाँ की सरकार चलाने वाले कठघरे में खड़े होने चाहिए, जो पहले तो ठक्कर आयोग की रपट को छिपाने के लिए कानून तक बनवा चुके थे और जब रपट दिखानी ही पड़ी, तो काट-पीटकर पेश कर दी। कांग्रेस दल धवन को क्यों बचाना चहाता है ? महीनों तक जांच करने वाले श्री ठक्कर, जो धवन पर सर्वाधिक सन्देह करते हैं, क्या अंधेरे में तीर चलाते रहे ? रपट के अनेक हिस्सों से यह सिद्ध होता है धवन दोषी हैं। सरकार ने धवन की पीठ पर हाथ रखा है तो सम्भवतः इस कारण से कि धवन के साथ और भी कई बड़ी-बड़ी हस्तियाँ बेनकाब हो जाएँगी। धवन की डायरी से धवन के ऊपर लगा शक और गहरा होता है, क्योंकि उनमें लिखे सांकेतिक शब्दों का धवन ने कोई सही स्पष्टीकरण नहीं दिया। इससे स्पष्ट होता है, कि धवन बड़ी-बड़ी बातें छिपा रहे हैं। लगता है सी. आई. ए. का शिकंजा भारतीय शासक-वर्ग पर लम्बे समय से कसता ही चला आ रहा है। उसमें कोई ढील नहीं पड़ी।

देश की जनता को याद रखना चाहिए कि कांग्रेस दल एक ऐसे आदमी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो अपनी ताकत के बल पर निर्दोष सिद्ध करना चाहता है, जो भारत के शीर्षस्थ नेता की हत्या के आरोपों के घेरे में है। अभी भी उन सवालों का कोई जवाब नहीं मिला, जो ठक्कर आयोग की रपट से उभरे हैं। कल को इस देश में क्या होगा और कौन सुरक्षित रहेगा, जबकि देश की राजनीति पर ऐसे आदमी की पकड़ रहेगी, जो बड़े से बड़े व्यक्ति की हत्या करा सकता है। निस्सन्देह कांग्रेस दल की यह नीति अनुचित है, जिसपर चलकर वह धवन को बचाने का प्रयत्न कर रहा है, परन्तु धवन जिस कांग्रेसी संस्कृति की पैदाइश हैं, उसका दोषी कौन है ? देश के बड़े-बड़े रहस्य बेच दिये जाते हैं, रिशवतें खाई जाती हैं और दूसरे देशों के लिए जासूसी की जाती है। यह सब क्या देश का गरीब आदमी करता है ? नहीं, यह सब तो वे करते हैं, जो दिन-रात पैसे से खेलते हैं और जो देश की जनता से उधार लिए हुए अधिकारों को आज चुरा कर बैठे हैं। ये वे लोग हैं, जो भोपाल गैस काण्ड में मरे हजारों लोगों की जान की कीमत कुछ अरब रुपये लगाते हैं और अपराधी को छुट्टा बैल की तरह देश के लोगों की हत्याएँ करने के लिए छोड़ देते हैं।

कभी देश के शासकगण आत्मविश्लेषण करें तो उन्हें पता लगेगा कि देशद्रोह, अन्याय, अत्याचार, और अनैतिकता के कीचड़ में वे ऊपर से नीचे तक सने हुए हैं। इससे छुटकारा तभी मिल सकता है, जब 'खाओ पियो और मौज करो' से हटकर कर्त्तव्य, न्याय, धर्म और सदाचार को दैनिक जीवन का अंग बनाया जाएगा। ★

भारतवर्ष हमारा प्यारा तीन लोक से न्यारा है।
चप्पा-चप्पा इस भारत का हमें प्राण से प्यारा है॥
जाने कितने लाल देश के हँस-हँस कर कुर्बान हुए।
इसकी गौरव-गाथा देखो बड़े-बड़े बलिदान हुए॥
राणा और शिवाजी जैसे देशभक्त बलवान् हुए।
इस धरती पर तेगबहादुर जैसे गुरु महान् हुए॥
आजादी के लिए यहां पर बही खून की धारा है।
भारतवर्ष हमारा प्यारा तीन लोक से न्यारा है॥

— रूपकिशोर गुप्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राचीन-गुरुकुलों का शिक्षण-विधान

—एस. श्रीकण्ठम्

"कभी भारत सुशिक्षित था, धनी था, संपन्न था, व्यापार-वाणिज्य में अग्र
था, कलाओं में, उद्योगों में पूर्ण विकसित था, न्याय में निष्पक्षपात
कलाकार, शिल्पी तथा कृषक चतुर और निपुण थे, भारत की जनता सा
तथा दयालु थी। अपरिचितों के प्रति उदार एवं अतिथि-सत्कार में निरत
ये सारी चीजें तत्कालीन शिक्षण के आदर्शों के ही फल रहे।"

डॉ. अन्नी बेसेंट का उपर्युक्त कथन भारत की प्राचीन-कालीन ऐ
साधना तथा पारमार्थिक प्रगति का परिचय देने के साथ-साथ स्पष्ट करता
कि इन सभी साधनाओं एवं प्रगति का मूल कारण तत्कालीन उत्तम शिक्ष
विधान रहा।

शिशु के शिक्षण का, उसके जन्म लेने के पूर्व ही, माता के गर्भ में
प्रारम्भ होता है। जन्म देने के बाद माता अपने बच्चों को नित्यकर्म, स्वच्छत
शील, शिष्टाचार आदि का अभ्यास कराती है। प्राचीन काल में पिता अ
बच्चों को अपने कुल, शील, आचरण एवं लोक-व्यवहारज्ञान का परि
कराता है, साथ ही अक्षर-ज्ञान करता है। यदि पिता न हो तो कुल-पुरो
या ग्राम के उपाध्याय द्वारा बच्चों को अक्षराभ्यास कराया जाता तथा
वाचन, लेखन एवं बोलने का अभ्यास कराया जाता था। उपनयन संस्कार
बाद बच्चे को गुरुकुल भेजा जाता था। गुरुकुल में अपने-अपने वर्ण के कर्त
के अनुकूल निःशुल्क शिक्षा-दान दिया जाता था। गुरुकुलों की, राजा त
अन्य श्री संपन्न लोग उदारता से सहायता करते थे, पर गुरुकुल की व्यव
तथा कार्यों में किसी भी प्रकार हस्तक्षेप नहीं करते थे।

गुरुकुल का आश्रम साधारणतया किसी नदी या विशाल स्वच्छ सरो
के किनारे, कोलाहाल-रहित उपवन में स्थापित किया जाता था, जहाँ स्व
हवा बहा करती थी। साथ ही जहाँ आश्रम के मवेशियों के लिए चराने, द
समित् आदि को पैदा करने, गुरु एवं शिष्यों के निवास करने, अध्ययन, श

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यायाम, क्रीड़ा आदि के लिए, कहीं-कहीं धनुर्विद्या सिखाने के लिए आवश्यक विशाल स्थान हो।

माता-पिता अपने पुत्र को लाकर गुरुकुल में भर्ती कर देते थे। गुरुकुल में प्रत्येक बालक की आवश्यकता एवं क्षमता को ध्यान में रखकर विविध रीति से निम्न प्रकार समग्र शिक्षण देने का प्रबन्ध था—

(१) सांस्कृतिक शिक्षण के अंग वेद, वेदांग, दर्शन तथा नीतिशास्त्र सिखाये जाते थे। भिन्न-भिन्न वर्णवालों के लिए उन-उनकी शाखाओं का अध्ययन कराया जाता था।

(२) नैतिक शिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता था। यह शिक्षण उपदेश से तथा आश्रम की परस्पर सेवा, सहकार, स्नेह के वातावरण से प्राप्त हो जाता था। बच्चों को यह शिक्षण भी दिया जाता था कि अननुकूल परिस्थितियों में स्वयं कष्ट सहकर दूसरों को सुख प्रदान करना चाहिए तथा सबके साथ सहनशीलता का व्यवहार करना चाहिए।

(३) शारीरिक शिक्षण के अंतर्गत प्राणायाम तथा अन्य प्रकार के व्यायाम कराये जाते थे। जंगल से लकड़ी काटकर ले आना, नदी या सरोवर से पानी लाना, तैरना, गायों को चराना, होम के लिए आवश्यक दर्भा, अरणि और समित् का संग्रह करना आदि कार्यों से शरीर का व्यायाम कराया जाता था। इनके साथ क्षत्रियों के लिए अस्त्र-शस्त्र-संचालन, अश्वारोहण का शिक्षण भी दिया जाता था।

(४) व्यावहारिक शिक्षण के अन्तर्गत संध्या के समय होम आदि से निवृत्त होने के बाद आश्रमवासियों को इतिहास, पुराण, धर्मशास्त्र, पुण्यकथाएँ, भौगोलिक वर्णन, नये समाचार आदि सुनाए जाते थे।

(५) विद्यार्थियों को उनके अपने वर्ण के अनुकूल औद्योगिक शिक्षण भी दिये जाने की व्यवस्था थी। ब्राह्मणों के लिए पौरोहित्य, दर्शन, कर्मकांड आदि, क्षत्रियों के लिए दंडनीति, राजनीति, सैन्यशास्त्र, अर्थशास्त्र, धनुर्वेद आदि तथा वैश्यों के लिए पशुपालन, कृषिशास्त्र, अर्थशास्त्र, व्यापारशास्त्र आदि का शिक्षण मिलता था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस प्रकार प्रत्येक छात्र को उसकी आवश्यकता के अनुसार सांस्कृतिक, नैतिक, शारीरिक, व्यावहारिक तथा औद्योगिक शिक्षण गुरुकुल में प्राप्त होता था।

गुरुकुल में छात्रों की दिनचर्या निम्न प्रकार रहा करती थी—

(१) अरुणोदय के समय शय्या से उठना, नित्यकर्म, शौचस्नान, संध्या-वंदन आदि से मुक्त होकर आश्रम के लिए जल, दर्भा, समित् आदि ले आना; आश्रम में झाड़ू देकर उसे स्वच्छ करना, गायों को दुहना, हवन-होम में भाग लेना, क्षीरपान, तदनंतर गुरु के पास जाकर हाथ जोड़कर तथा उनके पैर छूकर अपनी पंक्ति में जा बैठना, गुरु के पाठ-प्रवचन को ध्यान लगाकर सुनना; पाठ के पूर्ण होने पर गुरु की अनुमति लेकर शंका-समाधान कर लेना आदि छात्र के प्रातःकाल के कार्य थे।

(२) मध्याह्न के समय छात्र गुरुकुल के पास के ग्राम या नगर में जाकर शुद्ध सात्विक पक्वान्न को "भिक्षा" के रूप में लाकर गुरु को समर्पित करते थे और उनके दिये हुए अन्न को ग्रहण कर भोजन करते थे। तदनंतर प्रातः काल सीखे गए पाठ का आपसी चर्चा के द्वारा पुनरावर्तन किया करते थे।

संध्या के समय व्यायाम, गो-सेवा, आश्रम को स्वच्छ करना, जल, लकड़ी, दर्भा, समित् आदि ले आना, शौच, नित्यकर्म, संध्यावंदन करना, दूध दुहना, होम में भाग लेना, गुरु या अन्य किसी ऋषि, मुनि, साधु या विद्वान् से इतिहास पुराण कथा, वार्ता आदि श्रवण करना और रात्रि में पहले प्रहर के बाद दो प्रहरों तक सो जाना इत्यादि।

इस प्रकार छात्र को प्रातःकाल से रात्रि सोने तक की क्रियाशीलता के कारण समग्र जीवन के लिए उपयुक्त एवं आवश्यक पूर्ण शिक्षण प्राप्त होता था।

गुरुकुल के शिक्षण-क्रम में प्रश्नोत्तर पद्धति ही मुख्य साधन रही। गुरु के प्रश्नों का छात्र उत्तर दिया करते थे और छात्रों के संदेहों का गुरु उत्तर देकर समझा देते थे। वह समय ऐसा था कि छपी पुस्तकें तथा अप्राप्य हस्तलिखित पुस्तकें दुर्लभ थीं। अतः ज्ञानार्जन का कार्य कंठपाठ के द्वारा ही चलता था। ज्ञान के प्रत्येक अंश को कण्ठस्थ कर लेना पड़ता था। अध्ययन-विधान के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रवण, मनन, निदिध्यासन, इस प्रकार तीन सोपान थे।

गुरु किसी एक विषय या शास्त्र को लेकर व्याख्यान देते जाते तो छात्र मौन होकर तथा ध्यान लगाकर उस व्याख्यान को सुनते रहते। अंत में शिष्य अपने मन के संदेह गुरु के सम्मुख रखकर उनका निवारण कर लेते थे। शिक्षण में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि को विशेष स्थान दिया जाता था।

आचार्यात्पादमाधत्ते, पादं शिष्यस्स मेधया।
पादं स ब्रह्मचारिभ्यः पादं कालक्रमेण तु

ज्ञान का एक चौथाई भाग गुरु मुख से, एक चौथाई भाग शिष्य की बुद्धि-सामर्थ्य से, एक चौथाई भाग सहयोगियों के साथ किए गए विचार विमर्श से, प्राप्त हो जाता है और अन्तिम चौथा भाग समयोचित ही स्वयं छात्र को ज्ञात हो जाता।

गुरुकुलों में चार प्रकार के अध्यापक थे—कुलपति, आचार्य, गुरु और उपाध्याय। दश सहस्र ब्रह्मचारियों को तथा ऋषियों को भोजन, विद्या, निवास आदि की व्यवस्था करने वाले कुलपति कहातेथे। शिष्य को उपनयन संस्कार के बाद कल्प, वेद आदि सिखाने वाले आचार्य थे; वेदांग के एक अंश को सिखा कर उसी पर अपनी जीविका चलाने वाले गुरु थे तथा बच्चों के सभी संस्कारों को पूर्ण करके अन्न आदि से उनका पालन-पोषण करने वाले उपाध्याय थे। कुलपति गुरुकुल की व्यवस्था पर अधिक ध्यान देते थे; आचार्य और गुरु उच्च वर्गों को पढ़ाया करते थे। उच्च वर्ग के छात्र निचले दर्जे के छात्रों को पढ़ाया करते थे। इस प्रकार सभी एक न एक रीति से गुरु ही बने हुए थे। इस पद्धति से गुरुकुल में विनय, शील आदि व्यापक रूप से व्याप्त थे। सभी परस्पर शिष्टाचार का व्यवहार किया करते थे। दुश्शीलता, अविनय, दौष्ट्य, मार-पीट, झगड़ा, चुगलखोरी, शिकायत करना आदि का गुरुकुल में अभाव था।

गुरु का कर्तव्य केवल सिखाने तक सीमित नहीं रहता। गुरु शिष्यों के आचार-विचार का परिमार्जन करके उनमें सद्विचार, सदाचार के भाव भरकर उनकी योग्यता के संवर्द्धन में सहायक होते थे। शिष्य की कुशलता तथा प्रतिभा की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समयोचित प्रशंसा करके उसके सर्वांगीण विकास में सहायता देते। छात्रों के भोजन-वस्त्र, निवास की व्यवस्था करने के साथ-साथ रुग्ण हो जाने पर उनकी सेवा-शुश्रूषा किया करते थे। संक्षेप में, छात्रों को गुरु स्वयं अपने बच्चे मानकर उनकी समस्याओं को हल करते तथा उनकी कार्यनिपुणता से स्वयं प्रसन्न हो जाते थे।

शिष्य भी गुरु को अपने पिता तथा देवता मानते थे। उनका प्रत्येक वाक्य अमृतवाणी रहता था। शिष्य गुरु की सेवा करना परम गौरव का कार्य मानते थे तथा सदा गुरु को प्रसन्न रखकर उनके कृपाशीर्वाद प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्न किया करते थे। इसी कारण से उस समय के छात्र एक से बढ़कर एक मेधावी, विद्वान्, तेजस्वी तथा सच्चरित्र बनकर समाज में गौरव और आदर के पात्र बन जाते थे। गुरुकुल में गुरु के पैर दबाना, उनके पात्रों को साफ करना, उनके लिए पानी ले आना, अन्य आवश्यक वस्तु लाकर देना आदि शिष्य किया करते थे।

सभी छात्र गुरुकुल में ही निवास करते थे। जब तक विद्यार्जन पूर्ण न होता तब तक उनके घर लौटने का प्रश्न ही नहीं उठता था। छुट्टी की परिपाटी नहीं थी। पर हां, विशेष अतिथि के आगमन पर प्रथमा, अष्टमी, चतुर्दशी, संक्रांति, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, वर्षाऋतु, पर्व, उत्सव, किसी आश्रमवासी की मृत्यु, किसी महापुरुष या राजा की मृत्यु, राजा का राजतिलक आदि दिन 'अनध्ययन' माने जाते और उन दिनों में अध्ययन नहीं चलता था। शिक्षण-सत्र श्रावण मास से आरम्भ होता था।

इन गुरुकुलों में विनय, शील सौजन्य का उदात्त एवं भव्य वातावरण रहता था अतः वहां दण्ड का प्रश्न ही नहीं उठता था। ग्रामीण पाठशालाओं में कपड़े के चाबुक से, टूटी बेंत से या हाथ से पीठ पर मारकर दण्ड देने का क्रम जारी रहा, पर गुरुकुलों में इनकी आवश्यकता न रही। पर हां, यदि कोई कुविचारी, शील, संस्कार में हीन छात्र गुरुकुल में प्रवेश पाकर विद्यालय तथा गुरुकुल की शांति भंग करने का प्रयत्न करता तो उसे अवश्य दंड दिया जाता था। छोटे-मोटे अपराधों के लिए प्रायश्चित्त करने का विधान था। जाने-अनजाने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किए गए अपराधों के लिए शिष्य विविध प्रकार के प्रायश्चित्त स्वयं करके आत्मशुद्धि पा लेते थे।

इस प्रकार गुरुकुल का वातावरण अत्यन्त शुद्ध एवं सात्त्विक जीवन से भरपूर था।

परस्पर स्नेह, सेवाभावना, सहानुभूति, सत्संकल्प, तप, ज्ञानार्जन, स्वार्थ-त्याग, सहनशीलता, विवेकशीलता आदि में आश्रम शोभायमान था वहाँ स्वामी-सेवक, उच्च-नीच, उत्तम-अधम, धनी-निर्धन आदि का भेद-भाव नहीं रहा। सभी लोग समानता का व्यवहार किया करते थे। सबकी रीति-नीति सरल थी। सबके पास दर्भासन, कंबल, मृगचर्म, पलाशदंड, मेखला, जलपात्र, पादरक्षक-इन वस्तुओं के अतिरिक्त दूसरी कोई वस्तु नहीं रहती थी। छात्रों का जीवन उन्मुक्त, स्वच्छ, स्वाभाविक वातावरण में चलता रहा तो उनके शरीर में स्फूर्ति और दृढ़ता रहती थी। उनके मुख पर तेज तथा शरीर में क्रांति दृग्गोचर होती थी। सेवा-सहनशीलता के फलस्वरूप उनके मन में उदारता, आत्म-त्याग आदि सत्संकल्प उत्पन्न होते थे। वेद-शास्त्रादि के अध्ययन से उनकी बुद्धि में विवेक प्रस्फुरित होता था। शिष्य निश्चिन्त होकर अपने अध्ययन-अभ्यास में निरत रहते थे।

उन दिनों गुरुकुलों में, आज की तरह, परीक्षाओं को चलाने का क्रम नहीं रहा। गुरु जो कुछ सिखाते थे उसे स्वीकार शिष्यों को दूसरे दिन गुरु के सामने सुनाना था। पिछले दिन के पाठ को पूर्णरूप से सीख जाने के बाद ही अगले पाठ का अध्यापन होता। इस प्रकार छात्रों की प्रतिदिन परीक्षा ली जाती थी। गुरु को सुनाने के साथ-साथ छात्र आपस में चर्चा-समाधान, विचार-विनिमय द्वारा स्वयं अपनी परीक्षा कर लेते थे। परस्पर विचार विनिमय से त्रुटियां-कमियां सुधारी जाती थीं। कभी-कभी छात्रों की सामूहिक परीक्षा "शास्त्रार्थ" के रूप में ली जाती थी। किसी एक अंश को लेकर पक्ष-विपक्ष में छात्र चर्चा किया करते थे और गुरु निर्णायक बनकर अन्तिम निर्णय दिया करते थे। जीतने वाले पक्ष के छात्र गर्व न करते, हारने वालों के प्रति तिरस्कार न रखते बल्कि उनके विकास में सहयोग देते थे। हारने वाले भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दुःखी न होते, जीतने वालों से ईर्ष्या न करते, बल्कि और अधिक उत्साह से अध्ययन निरत हो जाते थे। इस प्रकार की स्वस्थ, सात्त्विक योग्यता-स्पर्धा में भाग लेकर छात्र अपनी अर्हता-योग्यता का परिचय स्वयं प्राप्त कर लेते थे। कभी-कभी दो गुरुकुलों के छात्रों के बीच इस प्रकार का शास्त्रार्थ चला करता था। इसके अतिरिक्त समय-समय पर बुद्धि और कुशलता की वैयक्तिक परीक्षाएँ भी चलाई जाती थीं।

इस प्रकार गुरुकुल में निश्चित अवधि तक रहकर अध्ययन करने के बाद तथा उपयुक्त शिक्षा-ग्रहण करने के बाद छात्र, "स्नातक" बनकर गुरु के विशेष उपदेश के साथ गुरुकुल से विदा होता था। इस विदाई समारोह को "समावर्तन" कहते थे। इस अवसर पर गुरु छात्रों को उनके अपने भावी जीवन के कर्तव्यों का परिचय देते हुए कहते—

"सत्य बोलो, धर्म का पालन करो, स्व-अध्ययन को न छोड़ो। आचार्य को उनकी प्रिय वस्तु दे दो। परम्परा का भंग न करो। सत्य को कभी न छोड़ो। धर्म को कभी न छोड़ो। योगक्षेम की उपेक्षा न करो। संपत्ति कमाओ। अध्ययन-अध्यापन को न छोड़ो। देव-पितृकार्य को न छोड़ो। माता को भगवान् समझकर प्यार करो। पिता को भगवान् मानो। आचार्य का आदर करो। अतिथि का सत्कार करो। केवल अ-निंद्य कार्य ही करते रहो। व्यवहार में शुभ का अनुसरण करो। दूसरों को कुछ देना हो तो श्रद्धा, संतोष, नम्रता, भय और सौहार्द के साथ दिया करो। अपने कर्म और व्यवहार संबंधी उत्पन्न होने वाले संदेहों का विचार दक्ष, अनुभवी, निष्पक्षपाती, दयालु, धर्मशील, ज्ञानों से निवारण करके तदनुसार कार्य करो इत्यादि।"

इस समावर्त्तन संस्कार के अवसर पर साधारणतया गुरुदक्षिणा देने का क्रम रहा। प्रत्येक छात्र अपनी शक्तिसामर्थ्य के अनुसार गुरु को कुछ न कुछ दे जाने का संकल्प कर लेता था। यदि गुरु कोई वस्तु मांगे तो उनकी इच्छा की पूर्ति करना वे अपना धर्म मानते थे। गुरुदक्षिणा धन, कोई वस्तु या कोई कार्य करने की प्रतिज्ञा के रूप में होती थी।

यद्यपि गुरुकुल के सभी छात्रों के भोजन की व्यवस्था 'भिक्षाटन' से ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप के मन से !

मरने का दिन आया है, इस लिए जीने की तैयारी करो।
समय बहुत बलवान् है, उस से डरो नहीं, सामना करो।
वह झुक जाएगा, और तुम्हारा होगा, तुम्हारे साथ दौड़ेगा, गीत गाएगा।
इस लिए शक्तिसंग्रह करो,
और समय को अपना अनुचर बनाओ।
क्रन्दन की भाषा भूल जाओ,
रुदन के स्वर भूल जाओ।
कायरता, निराशा जला कर, हे वीर !
अब विजय की देवी की माला ग्रहण करो।
कांपते हुए दुर्बल मर जाएं, अच्छा है,
आज जो जीतता हैं, बस वही सच्चा है।
सत्य तभी सत्य है, जब बलिदान देकर

जाती थी, फिर भी उनकी अन्य आवश्यकताओं का जैसे वस्त्र, निवास आदि का प्रबंध करने की आवश्यकता रहती थी। गुरुकुलों में आधुनिक काल की तरह भव्य भवन नहीं होते थे। जंगल में सुगमता से प्राप्त होने वाली दर्भा, घास, बांस, लकड़ी आदि ले आते थे और मिट्टी तथा नारियल के पत्तों का उपयोग करके सुन्दर तथा दृढ़ कुटियों का, छात्र स्वयं निर्माण कर लेते थे, पर छात्र के लिए आवश्यक वस्त्र, क्षीर के लिए गायें, गायों का पालन, आवागमन आदि के लिए राजा-महाराजा तथा धनिक लोग स्वयं आकर धन-सहायता दे दिया करते थे। राजपरिवार के तथा धनी परिवार के शिष्यों की गुरु दक्षिणा के रूप में भी पर्याप्त धन प्राप्त हो जाता था।

इस प्रकार ज्ञानवृद्ध वयोवृद्ध और गुरु अपने गुरुकुल को सरल जीवन के साथ निष्काम भाव से चलाया करते थे। इसी कारण से वैसे गुरुओं की आज्ञा या आदेश के विरुद्ध कुछ कहने-करने का राजा-महाराजा को भी साहस नहीं होता था। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम उस सत्य को चमकाते हैं।
कफन बांध कर, रक्तार्पण करने वाले वीर!
सौगन्ध तुम्हें गौ-गंगा-गायत्री की।
सौगन्ध तुम्हें प्रताप-हकीकत के रक्त की,
४७ में बहे लाखों शरीरों के खून की।
अब मरने की नहीं, जीने की वारी है,
जीवन लाचारी नहीं, एक सबल स्वर है।
ऐसा स्वर, जो हार को जीत में ढाल सकता है,
हिमालय उठा कर समुद्र में उछाल सकता है।
मेरे प्राण! राम-कृष्ण के नाम संकट है।
वेद-शास्त्र-धर्म सब को मिटाने के लिए,
असुर दल बढ़ता चला आता है।
मैं तुम्हें बुलाता हूं—इस लिए हे वीर!
कि तुम मर कर भी अमर हो जाने की कसम खाओ,
लहू देकर भी मां का सुहाग बचाने की कसम खाओ।
मरोगे खाट पर सड़कर, तो क्या होगा?
मरोगे दुश्मन के हाथों से, तो क्या होगा?
जब सब-कुछ जल जाएगा, मेरी माँ का,
तो जी कर भी कहो, जीवन का क्या होगा?
इस लिए कहता हूं, खड़े हो जाओ, धर्म जलता है,
खड़े हो जाओ, हे कृष्ण! गौएं कट रही हैं आज,
बुझ रही है गीता की आवाज धरती से,
खड़े हो अर्जुन, उठाओ गांडीव हाथों में।
संभालो ओ३म् का झण्डा, उठालो ओ३म् का झण्डा,
जहां भी बस चले, वहां लगा दो ओ३म् का झण्डा।

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यों का आदि देश और पाश्चात्य षड्यन्त्र

—राजेन्द्र सिंह

आज जो भारतीय इतिहास हम पढ़ते हैं, उसके प्रणेता अंग्रेज रहे हैं। भारतीय इतिहास को क्रमबद्ध करने के बहाने उन्होंने इस देश की पवित्र परम्पराओं के साथ खिलवाड़ किया। शासक होने के नाते उन्होंने इतिहास में जिन दोषपूर्ण (हानिकर भी) मान्यताओं का प्रवेश कराया, हमारे देश के उच्छिष्टभोजियों ने उनको सहर्ष स्वीकार किया। अंग्रेज सिद्ध करना चाहता था कि यहाँ के मूल निवासी 'आर्य' भी बाहर से आए हैं। यदि विदेशी होने के कारण अंग्रेज को यहाँ राज करने का अधिकार नहीं तो आर्यो—हिन्दुओं को भी नहीं। 'भारत में आर्य विदेश से आए' इस कपोल कल्पना को श्री बाल गंगाधर तिलक जैसी विभूतियों ने स्वीकार किया और इसका समर्थन करते हुए 'ओरायन' नामक ग्रन्थ की रचना की। प्रस्तुत लेख इस धारणा का आमूल-चूल खण्डन करते हुए यह सिद्ध करने में समर्थ है कि यह अंग्रेजी दुरभिसन्धि थी।

—सम्पादक

भारत में जब अंग्रेजों ने अपना शासन स्थापित कर लिया, तब उन्होंने अपने राज्य को सुदृढ़ और दीर्घजीवी बनाने हेतु भारतीय सांस्कृतिक चेतना के मूल स्रोत वेद और वैदिक साहित्य को भ्रष्ट करने की अनेक योजनाएं विकसित कीं। सर्वप्रथम भारत के प्रारम्परिक विविध उद्योगों को चौपट किया। इससे भारत का आर्थिक बल धराशायी हो गया। फिर अर्थतन्त्र वंचित और निर्धन बना दिये गये लोगों पर पादरियों ने ईसाइयत की मधुर-विषमयी मल्हम लगाकर उनके घावों को भरने के बहाने जहां एक ओर उन्हें ईसाई बनाना प्रारम्भ किया, वहां दूसरी ओर अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय संस्कृति की मौलिकता, सात्त्विकता और प्राचीनता को नष्ट-भ्रष्ट करने का धूर्ततापूर्ण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अज्ञानमूलक प्रयास किया। अन्ततः देशान्तर से आर्यों के भारत आगमन
कल्पना का प्रचार किया।

गवर्नर-जनरल कौंसिल के सीनियर मैम्बर जार्ज बारलो ने मार्कि
वेल्सली को १२ जुलाई, १८०३ ईसवी को लिखे अपने पत्र में सुझाव दिया
'भारत के भीतर एक भी देशी राज्य ऐसा शेष नहीं रहने देना चाहिये
ब्रिटिश सत्ता के आश्रय स्थापित न हो अथवा जिसका समस्त राजनीतिक
पूर्णतः ब्रिटिश सत्ता के वश में न हो।' (Sir George Barlow's
morandum to Marques wellesley, dated, 12th Ju
1803) इस विचार को कार्यरूप में ढालने के लिये मराठा राज्य को
करना आवश्यक था। इस कार्य में पंजाब के कर्नल आक्टरलोनी
राजस्थान में कर्नल जेम्श टॉड को क्रमशः सिक्खों और राजस्थानियों को म
के विरूद्ध अपने (ब्रिटिश सत्ता) पक्ष में फोड़ने के लिये भेजा गया। टॉ
१८०६ से १८१५ के प्रारम्भ तक राजस्थान के विविध क्षेत्रों में घू
सामरिक दृष्टि से उपयोगी मानचित्रों को तैयार किया। टॉड ने अपने प्र
ग्रन्थ 'राजस्थान का इतिहास' भाग एक की भूमिका पृष्ठ ४० पर स्वयं स्वी
किया है कि 'पहले ढाँचे का नक्शा १८१५ ईसवी में मैंने गवर्नर-जनरल
भेंट किया था जो युद्ध के समय बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ था, फिर यु
समय मालवे के विभाग का एक दूसरा नक्शा बनाकर पिण्डारों के युद्ध के
भेंट किया, जो बड़ा लाभदायक हुआ। इसमें भी मुख्य-मुख्य विषय विंध्य
के साधारण स्थान उसमें से प्रत्येक नदी के निकलने के स्थान पर्वत श्रेणि
घाटियाँ जिनकी ऐसे युद्ध के समय जानकारी प्राप्त करना बहुत आवश्यक
सब अंकित था। इसमें सीमाविभाग में कई देशों की सीमा भी बतलाई
थी। यह पेशवा के राज्य को नष्ट करने में बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ।'

उधर पंजाब में कर्नल आक्टरलोनी के आदेश पर कैप्टन मरे ने
सिक्ख सैनिक भाई रत्न सिंह भंगू से विक्रमी सम्वत् १८९४ तदनुसार
ईसवी में भेंट करके सारा सिक्ख इतिहास जान लिया (भाई रत्न सिं
कृत श्री गुर पन्थ प्रकाश २/६-३२)। इस इतिहास से जॉन मेल्कम को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कराया गया। आगे चलकर १८१२ ईसवी में जॉन मेल्कम ने 'ए स्कैच ऑफ द सिक्खस्' नामक ग्रन्थ में सिक्खों की प्रशंसा कर उन्हें अपने पक्ष में फोड़ने के मार्ग को प्रशस्त किया। जब भारत में ऐसा कूटनीतिक जाल बुना जा रहा था, उन्हीं वर्षों में उधर इंग्लैंड में एक और ही खिचड़ी पकाई जा रही थी।

आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी में कर्नल बोडन ने एक विपुल धनराशि देकर 'बोडन चेयर' की स्थापना की। इस चेयर की स्थापना का उद्देश्य बताते हुए कर्नल बोडन ने १५ अगस्त १८११ ईसवी को अपने इच्छापत्र (वसीयत) में लिखा कि 'इस प्रदत्त विपुल धनराशि से ईसाई मत के ग्रन्थों का संस्कृत में इस प्रकार अनुवाद किया जाये जिससे हमारे देशवासी (ब्रिटिश लोग) भारतीय नागरिकों को ईसाइयत में दीक्षित करने में अग्रसर हो सकें।' (बोडन चेयर के द्वितीय अधिकारी मोनियर-विलियम कृत संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी, भूमिका पृष्ठ)

१८१३ ईसवी में ब्रिटिश पार्लमेंट के मेम्बर टीरने ने ब्रिटिश सदन मे व्याख्यान दिया कि 'अब से सामान्य नियम यह होगा कि इंग्लैंड अपने निर्माताओं के समस्त उत्पादन भारत में बलात् बेचे और उसके विनिमय में भारत-निर्मित एक भी वस्तु न ले।' (मिस्टर टीरने इन हाउस ऑफ कॉमंस, १८१३)। इसी वर्ष जॉन मेल्कम (१८१२ में प्रकाशित सिक्खों की प्रशंसा में लिखित पुस्तक ए स्कैच ऑफ दि सिक्खस् के लेखक) ने ब्रिटिश सदन की जांच कमेटी के सम्मुख कहा कि 'इस समय (१८१३ ईसवी के काल में) हमारा साम्राज्य इतनी दूर तक में फैला हुआ है कि जो असाधारण प्रकृति का शासन हमने उस देश (भारत) से स्थापित किया है, यह तभी तक बना रह सकता है जब तक भारतवासी जातियों में बँटे रहेंगे। जब तक वे इस प्रकार विभाजित रहेंगे, तब तक कोई विद्रोह हमारी सत्ता को हिला नहीं सकता। जितनी-जितनी एकता लोगों में उत्पन्न होती जायेगी और उनमें वर्तमान अंग्रेजी सरकार की सत्ता को अपने ऊपर से हटा कर फेंक पाने का बल आता जायेगा, उतना-उतना ही हमारे लिये शासन करना कठिन हो जायेगा।...अत: मेरा विचार है कि ऐसी शिक्षा, जिससे हमारी भारतीय प्रजा के वर्तमानकालिक जातिगत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भेद धीरे-धीरे टूट जाने की सम्भावना हो, अथवा जिसके माध्यम से उनके मनों से यूरोपियनों का आदर न्यून हो, अंग्रेजी राज्य के राजनीतिक बल को बढ़ा नहीं सकती।' (Sir John Malcolm before the Pirlia-mentary committee of 1013)

भारतीय शिक्षा-प्रणाली पाश्चात्य शिक्षा पद्धत्ति से निश्चित रूप से श्रेष्ठ थी। अंग्रेजों ने अपने देश इंग्लैंड में उसको अपना लिया और भारत में जनता को जातियों और उपजातियों में विभाजित कर देने वाली पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार किया। ३ जून १८१४ ईसवी को कम्पनी के डायरेक्टरों ने बंगाल के गवर्नर-जनरल को लिखा कि 'जो शिक्षा प्रणाली प्राचीन काल से भारत में वहाँ के आचार्यों के अधीन कार्यरत है, उसकी सर्वाधिक विशेषता यही है कि रेवरेण्ड डाक्टर बल, जो मद्रास में पादरी रह चुका है, के अधीन वही प्रणाली इस देश (इंग्लैंड) में प्रचलित की गयी है। अब हमारी राष्ट्रीय संस्थाओं (इंग्लैंड गत) में इसी प्रणाली (भारतीय प्राचीन शिक्षा-पद्धत्ति) के अनुसार शिक्षा दी जाती है क्योंकि हमें विश्वास है कि इससे भाषा सीखना-सिखाना अत्यन्त सरल और सुगम हो जाता है।' (लैटर फ्राम दि कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स टु गवर्नर इन कौंसिल ऑफ बंगाल; डेटिड ३, जून १८१४)

परन्तु भारत के लिये इस शिक्षा-प्रणाली की आवश्यकता अब नहीं रह गई थी। उसके लिए जातियों-उपजातियों में विभाजित कर देने वाली शिक्षा अंग्रेजों की दृष्टि में लाभदायक थी। उक्त पत्र में डायरेक्टरों ने आगे लिखा कि 'कहा जाता है कि हिन्दुओं की इस अत्यन्त प्राचीन और लाभदायक संस्था (शैक्षणिक संस्था) को राज्य-क्रान्तियां भी हानि नहीं पहुंचा सकीं।'

इस प्रकार कम्पनी के डायरेक्टरों ने बंगाल के तत्कालीन गवर्नर-जनरल को स्पष्ट संकेत कर दिया कि भारतीय शैक्षणिक संस्थाओं को हानि पहुंचाने में जुट जाना चाहिए। १८१३ ईसवी में ब्रिटिश पार्लमेंट में पारित चार्टर एक्ट १८१३ की एक धारा में कहा गया था कि 'ब्रिटिश भारत की वार्षिक आय की बचत में से साहित्य की उन्नति और पुनरुज्जीवन के लिये तथा विद्वान् भारतीयों को प्रोत्साहित करने के लिये प्रतिवर्ष एक लाख रुपया व्य-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया जाये।' यह प्रोत्साहन-कार्य किस प्रकार का होना चाहिये, इसकी जानकारी देते हुए कम्पनी के डायरेक्टरों ने गवर्नर-जनरल को अपने ३ जून १८१४ ईसवी के पत्र में लिखा कि उक्त धन 'बनारस और एक दो अन्य स्थानों के पण्डितों, विचारवान् भारतीयों के हार्दिक भावों का पता लगाने, प्राचीन संस्कृत साहित्य का अंग्रेजी में अनुवाद करने, संस्कृत सीखने के इच्छुक अंग्रेजों की सहायता, भारत में अवशिष्ट प्राचीन प्रणाली के शिक्षा-संस्थानों का पता लगाने और ब्रिटिश साम्राज्य के स्थायित्व की दृष्टि से अंग्रेजों और भारतीय नेताओं में व्यक्तिगत सम्पर्क बनाने के उद्देश्य से दिया गया है।' (अफेयर्स ऑफ ईस्ट इण्डिया कम्पनी; १८३२, खण्ड एक, पृष्ठ ४४६, ४४७)

उसके पश्चात् जिस-जिस प्रान्त में ज्यों-ज्यों कम्पनी सरकार का प्रभुत्व बढ़ता गया, उस-उस प्रान्त में त्यों-त्यों भारतीय शिक्षा की प्राचीन प्रणाली, जिसे अंग्रेजों ने अति श्रेष्ठ जानकर अपने यहां अपना लिया था, लुप्त होती चली गयी। कई वर्ष व्यतीत होने के पश्चात् अंग्रेजों ने भारतीयों की दयनीय स्थिति जानने के लिए स्थान-स्थान से रिपोर्ट मंगाई। तब बेलारी जिले के कलेक्टर ए. डी. कैम्बल ने १८२३ ईसवी की अपनी रिपोर्ट में लिखा कि 'जिस व्यवस्था के अनुसार भारतीय पाठशालाओं में बालकों को लिखना सिखाया जाता है और जिस विधि से उच्च श्रेणी के विद्यार्थी निचली श्रेणी के विद्यार्थियों को शिक्षा देते हैं और साथ ही अपना ज्ञान भी परिपक्व करते जाते हैं, वह सम्पूर्ण प्रणाली निस्सन्देह प्रशंसनीय है और इंग्लैण्ड में जो उसका अनुसरण किया गया है, वह प्रणाली उसके सर्वथा योग्य है।······इस जिले (बेलारी) में अब शिक्षा संस्थाएं घटते-घटते ५३३ रह गयी हैं और मुझे यह कहते लज्जा आती है कि इनमें से किसी एक को भी अब सरकार (अंग्रेजी) की ओर से किसी प्रकार की सहायता नहीं दी जाती। ···इसमें सन्देह नहीं कि प्राचीन काल में, विशेषकर हिन्दुओं के शासनकाल में, विद्या प्रसारार्थ राजा की ओर से भूमि और धन दोनों का बहुत बड़ा अनुदान दिया जाता था। ···किन्तु हमारे शासन में शिक्षा की अवनति यहां तक हुई है कि राजकीय आय से अब अज्ञान को उन्नत किया जाता है। (The report of A. D.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Campbell, Collector of Bellary, dated 17th August, 1823, from the Report of the Select Committe etc. Vol. 1, Published 1832)

इसी प्रकार वाल्टर हैमिल्टन ने अपनी सरकारी रिपोर्ट (१८२८) में लिखा कि 'भारतीयों में साहित्य और विज्ञान की दिन-प्रतिदिन अवनति होती जा रही हैं। विद्वानों की संख्या घटती जा रही है और जो विद्यार्थी विद्याध्ययन अभी तक करते है, उनमें भी अध्ययन के विषय अत्यन्त न्यून होते जा रहे हैं। दर्शन-विज्ञान का पढ़ाना लोगों ने छोड़ ही दिया है, और अब धार्मिक कर्म-काण्डों और फलित-ज्योतिष् आदि विषय सम्बन्धी विद्या के अतिरिक्त वे किसी भी अन्य विद्या को नहीं पढ़ते। साहित्यिक अवनति का मुख्य कारण यह प्रतीत होता है कि इससे पूर्व स्वदेशी शासन में राजा, सामन्त और धन-वान् सभी विद्या-प्रचार को प्रोत्साहन और सहायता दिया करते थे। वे अब सदा के लिये मिट चुके है और अब प्रोत्साहन और सहायता साहित्य को नहीं दी जाती।' (उक्त खण्ड १, पृष्ठ २०३)

उक्त विविध रिपोर्टों से अंग्रेजों को ज्ञात हो गया कि उनकी नीति से भारतीय शिक्षा प्रणाली नष्टप्राय हो चुकी है और भारतीयों की बुद्धि पूर्व की भाँति परिपक्व, तीव्र और उद्देश्य-पूर्ण नहीं रही। अतः ऐसी परिस्थिति में यदि भारतीयों में पाश्चात्य शिक्षा को प्रत्यारोपित कर दिया जाय तो उत्तम होगा। पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली से भारतीयों के जातीय और उपजातीय मत-भेदों को उभारने में सफलता प्राप्त होगी जिससे भारत शताब्दियों तक हम अंग्रेजों का दास बना रह सकेगा।

सन् १८३३ ईसवी के चार्टर एक्ट में गवर्नर-जनरल कौंसिल में एक नये सदस्य 'लॉ मेम्बर' के पद पर टामस वैबिंगटन मैकाले को नियुक्त करके भारत भेज दिया गया। मैकाले १८३४ में भारत आया। १८३५ में मैकाले ने कहा कि 'हमें भारत में एक ऐसी श्रेणी उत्पन्न करने का भरसक प्रयास करना चाहिए जो हमारे और हमारे द्वारा शासित लाखों भारतीयों के बीच दुभाषिये का काम कर सके और वह एक ऐसी श्रेणी हो' जो रक्त और रंग से भारतीय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परन्तु रुचि, विचारों शब्दों और प्रज्ञा में इंग्लिश हो।' (मैकालेज मिनट ऑफ १८३५)

मैकाले के उक्त विचारों से पूर्णतः सहमत होते हुए तत्कालीन गवर्नर-जनरल विलियम बेंटिंक ने ७ मार्च १८३५ को आज्ञा दे दी कि 'जितना धन शिक्षा के उद्देश्यों के लिए स्वीकृत किया जाय उसका सर्वोत्तम उपयोग यही है कि उसे केवल अंग्रेजी शिक्षा पर व्यय किया जाय।' (लार्ड बेंटिंक्स् रेजोल्यूशन, डेटिड ७ मार्च १८३५)

गवर्नर-जनरल की उक्त आज्ञा का तुरन्त पालन किया गया। इस प्रकार मैकाले ने भारत में राष्ट्रघाती पाश्चात्य शिक्षा का बीजारोपण किया। इस शिक्षा के विषाक्त प्रभाव को दर्शाते हुए मैकाले ने १२ अक्तूबर १८३६ को कलकत्ता से अपने पिता को लिखा कि 'हमारे अंग्रेजी स्कूल आश्चर्यजनक रूप से पनपते जा रहे हैं। इस शिक्षा का प्रभाव हिन्दुओं पर अद्भुत हुआ है। जो भी हिन्दू एक बार अंग्रेजी शिक्षt ग्रहण कर लेता है, उसका अपने धर्म से गम्भीरतापूर्वक लगाव नहीं रह पाता। कुछ तो ईसाइयत को मान लेते हैं। मेरा यह विश्वास है कि यदि हमारी शिक्षा योजनाओं को चालू रक्खा गया तो आगामी तीस वर्षों में बंगाल की प्रतिष्ठित जातियों में एक भी मूर्तिपूजक (हिन्दू) नहीं रह पाएगा। और यह सब बिना मत-परिवर्तन का प्रयत्न किये और साम्प्रदायिक (मजहबी) स्वतन्त्रता में किंचित् भी हस्तक्षेप किये बिना ज्ञान एवं चिन्तन-मनन की स्वाभाविक प्रक्रिया से हो जायेगा। इस भावी आशा से मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। (दि लाइफ एण्ड लैटर्स ऑफ लार्ड मैकाले पृष्ठ ३२९-३३०। बाई राईट आनरेबल सर जार्ज ओटो ट्रैवल्यन बार्ट।)

इस प्रकार पाश्चात्य शिक्षा भारत में चलती रही और लोगों को अहिन्दू बनाती रही। उधर १८२३ में लंदन में 'रायल एशियाटिक सोसायटी' की स्थापना हो चुकी थी। उसकी शाखाएं बंगाल, बम्बई और लंका (सीलोन) में स्थापित की गयी। १८३२ ईसवी से रायल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल ने अपना जर्नल (सामयिक पत्र) निकालना प्रारम्भ कर दिया। १५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सितम्बर १८४२ ई० को भारत के तत्कालीन गवर्नर-जनरल लार्ड आक्लैंड के ए. डी. सी. लैफ्टिनेंट ए. डी. कनिंघम (पश्चात् जनरल कनिंघम के रूप में प्रसिद्ध) ने २३-वर्षीय अवस्था में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लन्दन स्थित डायरेक्टर कर्नल साइक को सुझाव दिया कि 'इन पुरातात्त्विक सर्वेक्षण कार्यों को प्रारम्भ करके इसका बीड़ा उठाना भारत की सरकार (अंग्रेजी) के लिए राजनीतिक दृष्टिकोण से तथा ब्रिटिश जनता के लिए मजहबी दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण होगा। सरकार (भारत की अंग्रेजी सरकार) के लिये यह (सर्वेक्षण कार्य) दर्शायेगा कि भारतीय लोग सामान्यतः असंख्य समुदायों में विभाजित रहते रहे हैं। ब्रिटिश जनता को यह (पुरातात्त्विक सर्वेक्षण कार्य) बतायेगा कि ब्राह्मणवाद अपेक्षाकृत आधुनिक मूल वाला (अल्प प्राचीन) था और इसमें निरन्तर परिवर्धंव और परिवर्तन होते रहते हैं। ये तथ्य सिद्ध करेंगे कि भारत में ईसाई मत की स्थापना अन्ततः अवश्य सफलीभूत होकर रहेगी।' (जर्नल ऑफ रायल एशियाटिक सोसायटी, लंदन, वाल्यूम ७, पृष्ठ २४६, १८४३)

कनिंघम का उक्त पत्र सोसायटी की लन्दन-सभा में भी दिसम्बर १८४३ में पढ़ा गया था। भारत में ईसाइयत के प्रचार-प्रसार के महत्त्व को देखते हुए कनिंघम का उक्त सुझाव अत्यन्त लाभदायक समझा गया। तब १८४४ ईसवी में रॉयल एशियाटिक सोसायटी ने राज्य की ओर से इस कार्य को किया जाना आवश्यक समझकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी को निवेदन किया। कार्यार्थ व्यय की फिर १८४७ में लार्ड हार्डिंग के प्रस्ताव पर 'बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स' ने सर्वेक्षण स्वकृति दे दी यद्यपि १८६० ईसवी तक उसको कार्यरूप में ढाला नहीं जा सका। इस काल तक लेफ्टिनेंट कनिंघम कर्नल कनिंघम बनकर संयुक्त प्रान्त में चीफ इंजीनियर के रूप में काम करने लगा था। कर्नल कनिंघम ने पुरातात्त्विक सर्वेक्षण कार्य की एक पूर्ण योजना बनाकर १८६१ ईसवी में भारत के तत्वकालीन गवर्नर-जनरल लार्ड केनिंग की सेवा में प्रस्तुत की जिसे तुरन्त स्वीकार कर लिया गया। तब इसी वर्ष अंग्रेजी सरकार की ओर से 'आर्कलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' नामक विभाग स्थापित किया गया, जिसको जनरल कनिंघम (भूतपूर्व लैफ्टिनेंट और कर्नल) की अध्यक्षता में सौंप दिया गया। (रायबहादुर पण्डित गौरीशंकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हीराचन्द ओझा कृत भारतीय प्राचीन लिपिमाला, भूमिका पृष्ठ ४, १९१८ ईसवी)

इससे स्पष्ट है कि पुरातात्त्विक सर्वेक्षण का कार्य भारत के भले के लिए नहीं अपितु भारत में ब्रिटिश सत्ता के राजनीतिक दीर्घजीवन और ईसाइयत प्रसार को दृष्टि में रखकर प्रारम्भ किया गया था। जनरल कनिंघम ने अपने १९ वर्ष पूर्व दिये गये सुझाव के अनुरूप सर्वेक्षण कार्य करना प्रारम्भ कर दिया और इस प्रकार भारतीय इतिहास को अपने संकल्पित विचारों के अनुरूप ढालकर भारतीय संस्कृति की उज्ज्वलता और प्राचीनता को भ्रष्ट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस कार्य को सफल बनाने हेतु जनरल कनिंघम को ऐसे अनेक सहयोगी मिल चुके थे जो लार्ड मैकाले के शब्दों में रक्त और रंग में भारतीय होते हुए भी रुचि, विचार और प्रज्ञा में अंग्रेज थे। उनका सर्वेक्षण विभाग स्थापित होने से पूर्व ही अनेक अंग्रेज अधिकारियों ने मैकाले के बीजारोपण से पलवित और पुष्पित अभारतीय रुचि व विचारों वाली भारतीय श्रेणी का परिचय पा लिया था। इस श्रेणी का परिचय देते हुए लार्ड मैकाले के बहनोई सर चार्ल्स ट्रैवेलियन ने १८५३ ईसवी की पार्लेमेंटरी कमेटी के समक्ष प्रस्तुत अपने लेख में लिखा था कि 'वे (इस श्रेणी वाले) हमारे महापुरुषों का उल्लेख उसी उत्साह के साथ करते हैं; हमारी ही जैसी शिक्षा और रुचि और हमारे सदृश रहन-सहन के कारण इनमें भारतीयता न्यून होकर अंग्रेजीपन अधिक आ जाती है···फिर इसकी अपेक्षा कि वे हमारे तीव्र विरोधी हों, अथवा यदि हमारे अनुयायी भी हों तो उनके मन में हमारे लिए क्रोध भरा रहे, वे हमारे उत्साही और कुशल सहायक बन जाते हैं।···भारत के राष्ट्रीय विचारों को दूसरी ओर मोड़ने का केवल एक यही उपाय है कि उनके भीतर पाश्चात्य विचारों को उत्पन्न किया जाय।' (ए पेपर ऑन दि पालिटिकल टैन्डेन्सी ऑफ दि डिफरेन्ट सिस्टम्स ऑफ दि एजुकेशन इन यूज इन इण्डिया, बाइ सर चार्ल्स ई० ट्रैवेलियन, सबमिटेड टु दि पार्लेमेन्टरी कमेटी ऑफ १८५३)

इसी प्रकार बोडन चेयर के प्रथम अधिकारी होरेस हेमन विल्सन ने पार्लेमेन्ट की सिलेक्ट कमेटी के समक्ष ५ जुलाई १८५३ ईसवी को कहा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

था कि 'वास्तव में हमने अंग्रेजी के विद्वानों की (भारत में) एक ऐसी जाति बना ली है जिन्हें अपने देशवासियों के साथ या तो सहानुभूति है ही नहीं, और यदि है तो अत्यल्प।' (प्रोफेसर एच. एच. विल्सन बिफोर दि सिलेक्ट कमेटी आफ दि हाउस आफ लार्डस्, ५ जुलाई १८५३)

कर्नल आक्टरलोनी, कर्नल टाड, जान मेल्कम इत्यादि अधिकारीगणों के प्रयासों से भारत को विविध समुदायों में बंटा हुआ सिद्ध किया जा चुका था। काल्पनिक कथाओं द्वारा इस बात को इतना अधिक तूल दिया गया था कि इंग्लैण्ड में विद्यमान रहते हुए भी प्रसिद्ध द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विचारक कार्ल मार्क्स (१८१८-१८८३ ईसवी) को भारत के विषय में सत्यासत्य का ज्ञान न हो सका। इसी कारण अंग्रेजी प्रचार से प्रभावित होकर भारत को 'कबीले और वर्ण-वर्ण में बंटा हुआ' और भारतीय समाज को 'परस्पर विरोधी और वैधानिक अलगावों के ऊपर आधारित समझते हुए मार्क्स ने (८ अगस्त १८५३ के न्यूयार्क डेली ट्रिब्यून अंक ३८४० में प्रकाशित अपने लेख में) लिखा कि 'उसका (भारत का) सम्पूर्ण पिछला इतिहास अगर कुछ भी है, तो वह उन लगातार जीतों का इतिहास है, जिनका शिकार उसे बनना पड़ा है। भारतीय समाज का कोई इतिहास नहीं है; कम से कम ज्ञात इतिहास तो बिल्कुल नहीं है।'

अंग्रेजों ने जैसा प्रचार किया था, मार्क्स ने भारत को वैसा समझ लिया। अपनी ओर से उसने सत्यासत्य को जानने का प्रयास नहीं किया। यदि वह सर्व प्राचीन जीवन मीमांसा और इतिहास के धारक भारतीय समाज को उसके वास्तविक परिवेश में जान लेता तो वर्ग-संघर्ष पर आधारित अयुक्तिसंगत अर्थव्यवस्था की कल्पना न करता। जिस प्रकार अंग्रेजी दुष्प्रचार से कार्ल मार्क्स इंग्लैण्ड में रहते हुए भी भ्रमित हो गया था, उसी प्रकार पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त करके भारतीय जनमानस भ्रमित हो रहा था।

इस काल तक पंजाब पर ब्रिटिश सत्ता का शासन स्थापित हो चुका था। १८३९ ईसवी में महराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात् दश वर्ष के भीतर २९ मार्च १८४९ को तत्कालीन गवर्नर लार्ड डलहौजी ने पंजाब को ब्रिटिश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये जाने की घोषणा कर दी। इन दस वर्षों में अनेक कूटनीतिक षड्यन्त्रों और युद्ध की सहायता से लाहौर राज्य को क्षीण कर चुका था। जिन सिक्ख योद्धाओं ने अंग्रेजों का साथ दिया था उन्हें यथा योग्य पारितोषिक दिया गया था। इससे बहुत पूर्व २५ अप्रैल १८०९ ईसवी को अंग्रेजों और रणजीत सिंह के बीच हुई संधि के अनुसार सतलुज के इस पार (लाहौर की ओर) का क्षेत्र महाराजा रणजीत सिंह के अधीन मान लिया गया था। वैसे भी इस सन्धि के पूर्व लुधियाना क्षेत्र अंग्रेंज रेजीडेन्ट के अधीन था। इसी लुधियाना में कर्नल ऑक्टरलोनी के आदेश से कैप्टेन मरे (एक सैनिक डाक्टर) ने भाई रत्न सिंह भंगु से १८०७ ईसवी में सिक्ख इतिहास जाना था। मरे भारत में ईसाई मिशनरी के रूप में आया था और जिसका उद्देश्य था कि बाईबल का भारत की सभी प्रमुग भाषाओं में अनुवाद किया जाये ताकि उसके माध्यम से भारतीयों को ईसाई बनाना सरल हो जाय। १७९९ ईसवी में विलियम कैरी सहयोग देने के लिय दो अन्य बैप्टिस्ट मिशनरी मार्शमैन और वार्ड भी आ गये। इन्होने सीरामपुर में अपना एक प्रेस लगा लिया था। १८०१ ईसवी में बिलियन कैरी ने मिस्टर टामस और एक बंगाली पंडित के सहयोग से बाइबल का बंगला अनुवाद किया। छापा खाना (प्रेस) खोलने में ईस्ट इण्डया कम्पनी के कमर्शल रेजिडेन्ट ने अपना पूर्ण सहयोग दिया था। (सीरिल ब्रूस फिल्थ कृत ऐन इन्ट्रोडक्शन टु इण्डियन चर्च हिस्टरी, पृ. १४२)]

कैप्टन मरे से प्राप्त जानकारी से विलियन कैरी को बड़ा लाभ हुआ। विलियम कैरी ने मार्शमैन और वार्ड के सहयोग से अनेक भारतीय भाषाओं के टाइप अक्षर तैयार करवाये, जिनमें पंजाबी भी थी। पंजाबी टाइप से बाइबल का पंजाबी अनुवाद १८११ ईसवी में छापा गया। १८१२ ईसवीं में विलियम कैरी ने पंजाबी भाषा का व्याकरण प्रकाशित किया। यह व्याकरण आगे चल कर पंजाब के धर्मान्तरण कार्य हेतु ईसाई मिशनरियों के लिये बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ। १५ अक्तूबर १८३३ ईसवी को एक अन्य ईसाई मिशनरी जान सी. लौरी कलकत्ता पहुंचा। मार्शमैन और वार्ड की प्रेरणा से वह पंजाब को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चल दिया। (ई. एम. व्हैरी कृत अवर मिशन इन इण्डिया, पृष्ठ २४)। वहां वह लुधियाना में अपना कार्य करने लगे। जनवरी १८३६ तक कार्य करके और अपने उत्तराधिकारियों को कार्य भार सौंप कर वह स्वदेश लौट गया। मिशनरियों ने १८३६ से १८४७ तक पंजाब में मिशनरी कार्य की गति लोरी के निर्देश के अनुसार धीमी रक्खी। फिर १८४९ में लार्ड डलहौजी की पंजाब को ब्रिटिश सामाज्य में विलीन कर देने की घोषणा के साथ ही मिशनरी-गति तीव्र हो गयी। उनका समस्त पंजाब में विस्तार हो गया। पंजाब का तत्कालीन चीफ कमीशनर सर जान लारेन्स मिशनरी-गतिविधियों को प्रतिवर्ष ५०० रुपयों की सहायता देता रहता था और जब पंजाब में रेलमार्ग का विस्तार हुआ तो स्वयं महारानी विक्टोरिया को ईसाइयत फैलाने की आशा से हार्दिक प्रसन्नता हुई। २४ नवम्बर १८५४ के अपने पत्र में क्वीन विक्टोरिया ने गवर्नर-जनरल लार्ड डलहौजी को लिखा कि 'भारत में रेलमार्ग के विकसित होने पर ईसाइयत की लक्ष्य पूर्ति सहज हो जायेगी।' (लैटर्स आफ क्वीन विक्टोरिया, १८३७-१८६१, वाल्यूम ३, पृष्ठ ६८-६९)।

जिन दिनों लेफ्टिनेन्ट कनिंघम के सुझाव को कार्यरूप देने के लिये लन्दन में रायल एशियाटिक सोसायटी ईष्ट इण्डिया कम्पनी से सर्वेक्षण विभाग की स्थापना हेतु स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयास (१८४४-१८४७) कर रही थी, उन्हीं दिनों आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी एक नयी भारत-विरोधी योजना में संलग्न थी। इस काल तक मैकाले भारत में पाश्चात्य शिक्षा का बीजारोपण करने के पश्चात् उसके राष्ट्रघाती प्रभाव से सन्तुष्ट होकर इंग्लैण्ड लौट चुका था और लार्ड मैकाले के नाम से जाना जाने लगा था। ६ दिसम्बर १८२३ को जन्मे जर्मन भारतविद् (प्राच्यविद्=ओरियन्टलिस्ट) फ्रेडरिक मैक्समूलर, जिसने फ्रांस के संस्कृत प्रोफेसर यूजीन बुर्नूफ से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की थी और अपने गुरु बुर्नूफ के निर्देश और सहयोग से ऋग्वेद के सायणभाष्य पर कार्य किया था, की प्रशिया के राजदूत बुन्शेन (मैक्समूलर के पिता का एक मित्र) से भेंट हो गयी। उस समय मैक्समूलर द्वारा सम्पादित उक्त सायणभाष्य प्रकाशनार्थ तैयार था। बुन्शेन ने मैक्समूलर को बोडन चेयर के प्रथम अधि-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारी संस्कृत प्रोफेसर होरेस हेमन विल्सन से मिला दिया। विल्सन के कहने पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने मैक्समूलर द्वारा सम्पादित ऋग्वेद के सायणभाष्य के प्रकाशन का व्यय-भार वहन करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार १८४६ ईसवी में जब प्रकाशन कार्य प्रारम्भ हुआ जो १८७३ तक चलता रहा। इसके माध्यम से मैक्समूलर-विल्सन का सम्पर्क अनेक वर्षों तक बना रहा।

उक्त सम्पर्क का परिणाम यह हुआ कि मैक्समूलर धीरे-धीरे बोडन चेयर के भारत को ईसाई बनाने के कार्य के साथ सहमत होता जा रहा था। जब यह सहमति अंग्रेजों को अपने अनुकूल जान पड़ी तब मैक्समूलर की भेंट लार्ड मैकाले से कराई गयी। मैक्समूलर की जीवनी और पत्रों का कुशल सम्पादन करने वाली मैक्समूलर की धर्मपत्नी जार्जिना के अनुसार मैक्समूलर लार्ड मैकाले से मिला और मैकाले ने अपने दृढ़ विचारों से मैक्समूलर को अवगत कराया। मैकाले एक घण्टे तक बोलता रहा और मैक्समूलर चुपचाप सुनता रहा। आक्सफोर्ड लौटने पर मैक्समूलर ने कहा कि 'एक दुःखी और बुद्धिमान् व्यक्ति के रूप में मैं वापिस आक्फोर्ड लौट आया।' (दि लाइफ एण्ड दि लैटर्स आफ फ्रेडरिक मैक्समूलर, खण्ड १, पृष्ठ १७१)।

२८।१२।१८५४ ईसवी के अपने पत्र में मैक्समूलर ने अपनी माता को लिखा कि 'इस बार मैंने लार्ड मैकाले से लन्दन में (१० दिसम्बर से २८ दिसम्बर के बिच किसी दिन) भेंट की और उससे भारत भेजे जाने वाले युवकों की आवश्यक शिक्षा के विषय पर एक लम्बा वार्त्तालाप किया। वह अत्यन्त स्पष्ट विचारक और असाधारण प्रवक्ता है।' (वही खण्ड १, पृष्ठ १७०)। बोडन प्रोफेसर विल्सन से निरन्तर सम्पर्क में रहने और लार्ड मैकाले की उद्देश्यपूर्ण स्पष्टवादिता के प्रभाव ने मैक्समूलर की विद्वत्ता को ईसाइयत के पल्ले बाँध दिया।

८ मई १८६० के दिन बोडन चेयर के प्रथम अधिकारी विल्सन का एक शल्य-कर्म मे देहान्त हो गया। इस काल तक मैक्समूलर बोडन-मैकाले की उद्देश्यपूर्ण (भारत में ईसाइयत प्रसारित करने वाली) परंपरा में दीक्षित हो चुका था। उसी का प्रभाव था कि विल्सन ने अन्तिम संस्कार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के तुरन्त पश्चात् मैक्समूलर ने बोडन चेयर के रिक्त स्थान के लिय स्वयं को उसका प्रत्याशी घोषित कर दिया और अपने प्रमाणपत्रों सहित नामांकन भर दिया जबकि चुनाव दिसम्बर १८३० से पूर्व होने वाला नहीं था। मैक्समूलर की यह उतावली बड़ी महत्त्वपूर्ण है और उसको बोडन-मैकाले परम्परा से जोड़ती है। अनेक अंग्रेज अधिकारियों की दृष्टि में मैक्समूलर बोडन-चेयर के दूसरे अधिकारी के रुप में एक सर्वथा उपयुक्त प्रत्याशी था। ब्रिटिश म्यूजियम के डब्ल्यू० एस० डब्ल्यू० वाक्स ने २६ मई १८६० (डाक्टर ऑफ डिविनिटी) डा० ई० सी० पुसे ने २ जून १८६० और शिमला (भारत) से विशप ऑफ कलकत्ता रैवन्सवुड ने १३ जुलाई १९६० को अपने पत्रों में मेक्समूलर के लिये अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। (वही खण्ड १, पृष्ठ २४७-२४६)।

रैवन्सवुड ने मैक्समूलर को लिखा कि 'हमारी मशिनरियों के लिय संस्कृत समझना, है हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों और दर्शनशास्त्रों का अध्ययन और (भारतीय) पण्डितों से उनके अपने आधर पर शास्त्रार्थ हेतु स्वयं को योग्य बनाना अत्यन्त आवश्यक है। इस बडे लक्ष्य की प्राप्ति के लिय तुम्हारे (द्वारा सम्पादित) संस्करण और (स्वर्गीय) प्रोफेसर विलसन के ऋग्वेद के अंग्रेजी अनुवाद से अधिक महत्त्वपूर्ण और कुछ नहीं हो सकता। मेरे यिचार में एक बड़े ईसाई विश्वविद्यालय (आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी) के लिये अत्यन्त उपयुक्त होगा कि वह अपनी संस्कृत-चेयर पर एक ऐसे विद्वान् को बैठाये जिसने संस्कृत धर्मग्रन्थों को ईसाई मिशनरियों के लिय सुगम बना दिया है। (दि लाइफ एण्ड लैटर्स आफ फ्रेडरिक मैक्समूलर खण्ड १, पृष्ठ २४७-२४८)।

इसी प्रकार डा० ई० बी० पुसे ने मेक्समूलर को लिखा कि 'जिसने पहले ही हमें उन (भारतीयों), जिनको हमें ईसा-वचनों द्वारा जीतना है, की धार्मिक पद्धतियों से पूर्ण अवगत कराने में पर्याप्त काम किया है, उस तुमको चूनते हुए हमें (बोडन-चेयर के) संस्थापक की इच्छाओं (भारत के ईसाई बनाने वाली इच्छाओं) को सर्वाधिक सफल बनाना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिये। यह सुस्पष्ट है कि इसकी (भारतीय पद्धति की) जानकारी के बिना एक मिशनरी निरन्तर त्रुटि करता रहेगा। तुम्हारी सेवाएं भारत के धर्मान्तरण के प्रयास में एक नवयुवक का निर्माण करेंगी और आक्सफोर्ड इसके लिये तुम्हारा कृतज्ञ रहेगा। (खण्ड १, पृष्ठ २४६)

चुनाव के अवसर पर डा० पुसे ने वोटरों को अवगत कराया कि 'मैक्समूलर ने भारत में ईसाइयत के प्रचार हेतु पहले ही किसी भी अन्य संस्कृतज्ञ (ओरियन्टलिस्ट) से अधिक काम किया है और उसके चुने जाने पर इस कार्य में और भी लाभ होगा। (वही खण्ड १, पृष्ठ २५३)। ७ दिसम्बर १८६० के दिन चुनाव हुआ परन्तु जैसा कि बोडन-चेयर का नियम था, अंग्रेज न होने के कारण मैक्समूलर का चुनाव न हो सका और उसके प्रतिद्वन्द्वी अंग्रेज संस्कृतज्ञ मोनियर-विलियन को बोडन चेयर के दूसरे अधिकारी के रूप में चुन लिया गया। दूसरी ओर बोडन पद के लिये चुने न जाने पर भी भारत के धर्मान्तिरण हेतु एक योग्य संस्कृतज्ञ होने के कारण मैक्समूलर की आवश्यकता अनुभव की गई। चुनाव होके दूसरे दिन ८ दिसम्बर १८६० ईसवी को क्राइस्ट चर्च से ए० पी० स्टैनले ने मैक्समूलर को अपने पत्र में सम्मति दी 'बोडन प्रोफेसर न होते हुए तुम अब भी अपनी लेखनी द्वारा यह दर्शा सकते हो कि ईसाइयत के लिये भारत और विश्व में क्या हो सकता है।' (वही खण्ड १, पृष्ठ २५५)

इधर बोडन-चेयर का दूसरा अधिकारी बनने के पश्चात् १८६१ ईसवी में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'दि स्टडी ऑफ संस्कृत इन रिलेशन टु मिशनरी वर्क इन इण्डिया' में लिखा कि 'अतः ब्राह्मणत्व का नाश सुनिश्चित है। वास्तविक बात यह है कि अति सामान्य वैज्ञानिक विषयों से सम्बन्धित असत्य विचार ब्राह्मणत्व के सिद्धान्त से इतने संमिश्रित से हो गये हैं कि ईसाइयत की सहायता के विना साधारण से साधारण शिक्षा, यथा भूगोल विद्या के अतिसामान्य पाठ भी निश्चय ही ब्राह्मणत्व की जड़ उखाड़ फेंकेंगे। (और) जब ब्राह्मणवाद के शक्तिशाली दुर्ग की दीवारें घेर ली जायेंगी, उनके नीचे सुरंग लगा दी जायेगी और अंत में क्रॉस (ईसाइयत) के सैनिक उन पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धावा बोल देंगे, तब ईसाइयत की निश्चय ही अपूर्व और पूर्ण विजय होगी।' (माडर्न इण्डिया एण्ड दि इण्डियन्स (पृष्ठ २६१-२६३, तृतीय संस्करण १८७६ ईसवी)

उक्त घटना के कोई ५ वर्ष पश्चात् १८६६ में मैक्समूलर के लिये विशेष रुप से 'चेयर ऑफ फिलासफी' की आक्सफोर्ड मैं स्थापना की गयी। इस काल तक मैक्समूलर' बोडन-प्रोफेसर विल्सन, लार्ड मैकाले और ईसाई मिशनरियों के प्रभावाधीन अपनी विद्वत्ता को ईसाइयत की सेवा में समर्पित कर चुका था जबकि प्रचार यह किया गया था कि वह एक भारत-प्रेमी महान् संस्कृतज्ञ है। अंग्रेजों के उद्देश्य की पूर्ति का माध्यम होने के कारण उनकी पक्षपाती दृष्टि में वह भले ही महान् संस्कृतज्ञ था परन्तु मैक्समूलर के समकालिक सस्कृत और वैदिक विद्या के प्रकाण्ड पण्डित स्वामी दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में मैक्समूलर का पाण्डित्य ' वृक्षहीन देश मैं एरण्ड ही को एक बड़ा वृक्ष मान लेने' के समतुल्य था। स्वामी जी ने अपनी विश्वविख्यात कृति सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखा है कि ' जो लोग कहते हैं कि जर्मनी देश में संस्कृत विद्या का बहुत प्रचार है और जितना संस्कृत मोक्षमूलर साहब पढ़े है उतना कोई नही पढ़ा, वह कहने मात्र की है। यस्मिन् देशे द्रुमो नास्ति तत्रैरण्डोऽपि द्रुमायते अर्थात् जिस देश में कोइ वृक्ष नही होता, उस देश में एरण्ड ही को बड़ा वृक्ष मान लेते हैं। वैसे ही यूरोप देश मैं संस्कृत विद्या का प्रचार न होने से जर्मन लोगों और मोक्षमूलर साहब ने थोड़ा-सा पढ़ा, वही उस देश के लिये अधिक है।' (रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ सोनीपत से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश का आर्यसमाज शताब्दी संस्करण पृ० ४३२

स्वामी दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में मैक्समूलर के अल्प संस्कृत पाण्डित्य को ईसाइयत की संकीर्णता ने ग्रस लिया था। इसके परिणामस्वरूप मैक्समूलर ने वेदों के अपने अनुवाद और संस्करण को इस प्रकार भ्रष्ट रूप में प्रस्तुत किया जिससे भारत में ईसाइयत फैलाने का कार्य सुगम हो जाय। १८६६ ईसवी में 'चेयर ऑफ फिलासफी' पर अधिष्ठित होने के पश्चात् अपने हृदय की बात को उजागर करते हुए मैक्समूलर ने ६ दिसम्बर १८६६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ौर संस्करण आगे चल कर भारत के भाग्य और उस देश के लाखों वासियों
ꣳ विकास पर बड़ी दूर तक प्रभाव डालेगा। यह (वेद) उनके धर्म का मूल
। मैं निश्चयपूर्वक अनुभव करता हूं कि विगत तीन सहस्र वर्षों से इस मूल
उद्‌भूत सब कुछ को उखाड़ कर फैंकने का एकमात्र उपाय यह है कि उन्हें
ता दिया जाय कि उनका मूल क्या है। (लाइफ एण्ड लैटर्स ऑफ फ्रैडरिक
क्समूलर, खण्ड, पृष्ठ ३४६, लौंगमैन्स ग्रीन ऐण्ड कम्पनी, बौम्बे-लन्दन
यूयार्क, १९०३ ईसवी)

इसी प्रकार अपनी एक दूसरी पुस्तक में मैक्समूलर ने लिखा कि 'वैदिक
क्तों की की एक बड़ी संख्या अत्यन्त बचकाना, जटिल, निम्न कोटि की और
ाधारण है।' (चिप्स फ्रॉम ए जर्मन वर्कशॉप, पृष्ठ २७, १८६६ ई०)।

इसी वर्ष ९ अप्रैल १८६६ ई० के दिन रॉयल एशियाटिक सोसायटी की
न्दन में राइट आनरेबल विस्काउंट स्ट्रैंगफोर्ड की अध्यक्षता में वह महत्त्वपूर्ण
ोष्ठी हुई जिसमें 'आर्यों के भारत आगमन' की कल्पना प्रस्तावित हुई। इस
ोष्ठी का विवरण जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसायटी, न्यू सिरीज, पृष्ठ
२० के टिप्पण में अंकित है। यह कितना विचित्र संयोग है कि भारत के
ल निवासियों को 'बाहर से आकर भारत में बसा हुआ' बताने वाली इस
ार-सौ-बीस-पूर्ण कपोल कल्पना का विवरण पृष्ठ ४२० पर प्रकाशित
पाया है। सोसायटी के जर्नलमें प्रकाशित विवरण के अनुसार एडवर्ड टॉमस
गोष्ठी के एकमात्र प्रमुख विषय (जो फोर्थ हैड के अन्तर्गत विचारणीय था)
र सबका ध्यान आकर्षित करते हुए विचार व्यक्त किया कि 'अपने मूल स्थान
मु दरया (मध्य और पश्चिमी एशिया में बहने वाली ऑक्सस नामक नदी)
संक्रमण करते हुए आर्यों ने अनेक झुण्डों में आर्यानिया और हिन्दूकुश के
र्वतीय प्रदेशों से होते हुए और वहां से नीचे की ओर आगे बढ़ते हुए गडरियों
रूप में सर्वप्रथम पंजाब में प्रवेश किया। वहां उन्होंने (नवागन्तुक आर्यों ने)
रस्वती नदी के तटों पर कृषि प्रधान ब्राह्मण-संस्थानों की संस्थापनार्थ वैदिक
क्तों के अप्रौढ़ गीतों का गठय किया और तक्षशिला में संस्कृत व्याकरण
विस्तार किया। अपने वाङ्मय को समृद्ध बनाने हेतु उन्होंने अपनी वर्ण-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माला को आर्यनिया प्रदेश की अत्यन्त अविकसित पूर्ववर्ती फिनिशिय
माला जिसकी सुलिखित कार्यक्षमता भोजपत्रों के सतत प्रयोग और
के कारण निखरी हुई थी, से सरल परन्तु संवर्धित रूप में विकसित किया

यह पाश्चात्यों का भारतीय संस्कृति की मौलिकता का उच्छेदक प्र
प्रहार था, जो अंग्रेजों की कपोल-कल्पना से प्रभावित देशी-विदेशी विद्वा
अज्ञान के गर्त्त की ओर धकेल रहा है। पूर्वोल्लिखित पंक्तियों से
हो जाता है कि भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के काल में ब्रिटिश सत्ता, ई
और पाश्चात्य शिक्षा परस्पर पूरक पर्यायवाची बन चुके थे। ईसाइ
भारत में प्रचार और प्रसार ने उन्हें इतना अन्धा बना दिया कि आर्यों के
आगमन' को सिद्ध करने की धुन में वे अज्ञानता में अपने श्रद्धेय ग्रन्थ
के उस लेख का भी विरोध कर गये जिसके अनुसार संक्रमण पश्चिम
को नहीं अपितु पूर्व से पश्चिम की ओर हुआ है।

जो भी है हिन्दू का घर, गूंजे वहां वेद का स्वर

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित)

लागत मूल्य 500 रु.। साथ में 251 रु. का बढ़िया वैदिक साहि
(वैदिक सम्पत्ति, महाभारत एवं गीता हिन्दी भाष्य सहि
अन्य उपयोगी साहित्य) उपहार में प्राप्त करें।

साहित्य न लेना चाहें तो सम्पूर्ण वेदभाष्य 375 रुपये में प्राप्त

वेद-मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम

इब्राहिमपुर पो० मुखमेलपुर, दिल्ली-110036

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद सब सत्य विद्याओं का : पुस्तक है

—रत्नाकर रत्न वर्मा

महात्मा वेद भिक्षु: ने लिखा था—

"हम सब मानते हैं कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, परन्तु अब तक प्रकाशित भाष्य पढ़ कर तो यह विश्वास नहीं होता। स्वामी दयानन्द सरस्वती तो अपना कार्य पूरा कर गये, लेकिन उनके बाद के विद्वानों ने उतना अनुसंधान नहीं किया।"

महात्मा जी की प्रेरणा रूप में एक मंत्र उदाहरण स्वरूप ऋ. १।१६४।४८ देखिये—

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नाभ्यानि क उतच्चिकेत।
तस्मिन्साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिता: षष्टिर्नचला चलास:।

जन-ज्ञान मसिक वैशाख १९४४ अंक में श्री आचार्य रघुनन्दन शर्मा का "हवन यज्ञ के व्यापक आयाम" लेख में भारतीय ज्योतिष की गरिमा दिखाई है। लेख अतीव सुन्दर है। उसमें इस मंत्र का अर्थ संवत्सरपरक है।

श्री बालकृष्ण दीक्षित ने "भारतीय ज्योतिष का इतिहास" में यही अर्थ लिया है, एवं महर्षि यास्क भी निरुक्त में ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त को तीन नाभियां मान कर संवत्सर ही अर्थ करते हैं।

परन्तु संवत्सर में ३६० दिन नहीं होते। सौर निरयण वर्ष में ३६५, २५६३ और सायन सौर में ३६५, २४ २१ दिन होते हैं। चन्द्रमा के वर्ष में भी ३५४, ३६७०८ दिन होते हैं।

वैसे कभी भारत में भी ३६० दिन के वर्ष का प्रचार था। मय जाति जो शिल्प और ज्योतिष में निपुण थी ३६० दिन का वर्ष मानती थी। मयों का २० दिन का एक मास और १८ मास का एक वर्ष था।

आधुनिक विद्वान् कहते हैं कि मैक्सिको ही मयों का मूल स्थान है, परन्तु यह भ्रम है। मयों का मूल स्थान मयराष्ट्र (मेरठ जनपद) है और मेरठ का प्राचीन नाम मयरथ या महीरथ है। महीदन्त नामक रावण का श्वसुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मयों का राजा था। और हेमा अप्सरा के कारण इन्द्रके प्रचण्ड आक्रम
इस जाति को यहां से भागना पड़ा। और इन्होंने दक्षिण में निवास बना
जहाँ बाली द्वारा इनके मायावी और दुन्दुभि दो नायक मारे गये,
इन्हें मैक्सिको में अपना वास स्थान बनाना पड़ा। मैक्सिको का संस्कृत
मयक्षयिका है।

यह ३६० दिन का वर्ष वृहस्पति के आधार पर होगा। यत: वृह
की एक राशि गति ३६१.०४७०३ दिन है अत: निश्चय ही १७ महीने
दिन के और १८ वाँ महीना २१ दिन का होता होगा, और ६० वर्ष में
पूरा करते होंगे भारतीय ज्योतिष में इन ६० संवत्सरों के प्रभव
नाम हैं।

पर बाद में यह परिपाटी छोड़ ही दी। इस ऋक् मंत्र में यदि ३६०
के वर्ष मान भी लें तो ऋतुएं छ: होती हैं। दूसरी ऋतुओं को नाभि क्यों
माना। अत: यह मंत्र "क्रांति वृत्त का वर्णन करता है। क्योंकि चलाचल
स्पष्ट ही निरयण (अचलास:) और सायन (चलास:) अंशों की
संकेत है। और न ऋतु सम्बन्धी वर्ष ३६० दिन का होता है।

क्रान्ति वृत्त—खगोलस्थ पृथिवी का कक्षा पथ क्रान्ति वृत्त कहल
है। क्रान्ति वृत्त को राशि वलय या भचक्र भी कहते हैं खगोलों या वृत्त
तीन केन्द्र होते हैं १—गर्भ केन्द्र को और दो पृष्ठ केन्द्र। क्रान्ति वृत्त के
केन्द्र को कदम्ब कहते हैं। यही तीन नाभियाँ हैं।

यदि हम और गहराई से सोचें तो यह दीर्घ वृत्त का वर्णन है।

दीर्घ वृत्त—ग्रहों का परिक्रमा पथ वर्तुलाकार न होकर अंडाकार हो
हैं। इसमें तीन नाभियाँ होती हैं सूर्योच्च बिन्दु और अनुसूर्य बिन्दुओं के म
एक गर्भ केन्द्र।

केपलर के नियमानुसार सौर मंडल के सभी ग्रह दीर्घ वृत्त में सूर्य
परिक्रमा करते हैं, और सूर्य दीर्घ वृत्त की एक नाभि रहता है। जिस न
पर सूर्य रहता हैं, उसके पास वाला परिक्रमा पथ का बिन्दु अनुसूर्य बि
है। अनुसूर्य बिन्दु पर ग्रह का वेग महत्तम होता है तथा सूर्योच्च बिन्दु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेग न्यूनतम होता है इसके पास ही दूसरी नाभि होती है।

३६० इस वृत्त के अंश हैं जिन्हें मंत्र में शंकु कहा है, और अथर्व वेद में खील (इकील लोकभाषादु) कहा है। ये ३६० अंश ही निरयण और सायन हैं, जिन्हें चलास: और अचलास: कहा है। समस्त पद चलाचलास: है।

सायन और निरयण—क्रान्ति वृत्त पर हमारी भूमि कुछ तिरछी है अत: भूमध्य से यह आकाश में २३॥ अंश उत्तर और आधा २३॥ अंश दक्षिण दिखाई देता है। इसके अंशों की गणना चित्रा तारे को १८० अंश पर मानकर करते हैं। पहले रेवती नक्षत्र को ० पर मानकर गणना करते थे। इससे पूर्व प्राचीन काल में मृगशिरा से गणना करते थे। इस वृत्त के १२ विभाग राशियाँ हैं, और २६ विभाग नक्षत्र।

इससे पूर्व २८ विभाग थे। २८वां अभिजित् नक्षत्र था। इससे पहले २४ विभाग भी थे जब महीनों का नामकरण हुआ था।

जब अभिजित् नक्षत्र अपनी परिक्रमा के कारण ध्रुव स्थान में आया तो इसे निकाल कर २७ ही नक्षत्र रक्खे। यह काल योरोपियन मतानुसार १२ हजार वर्ष है, और हमारी गणना से १०८५० युगाब्द ५०८६ में होते हैं। यह निरयण विभाग है।

भूमध्य रेखा के समानान्तर आकाश में विषुवत् वृत्त है। विषुवत् वृत्त क्रान्ति को दो स्थानों पर काटता है। इन क्रांति वृत्तीय बिन्दुओं को संपात बिन्दु कहते है। जिस बिन्दु पर सूर्य २१ मार्च को निकलता है वह वसन्त संपात है और जिस पर २३ सितम्बर को निकलता है वह शरद्-संपात हैं। इन दोनों बिन्दुओं पर रात, दिन समान होते हैं।

खगोलीय विषुवत् वृत्त दोलायमान है। यत: अस्थिर है, अतएव संपात बिन्दु भी चल है। एक बिन्दु के चलायमान होने पर सारे बिन्दु चलते हैं। इन विन्दुओं की गणना वसन्त संपात से होती है। यही सायन अंश है।

यह संपात बिन्दु ५० विकला प्रति वर्ष की गति से इस समय पश्चिम को चल रहा है। योरोपियन मत है कि यह इसी प्रकार संपूर्ण क्रान्ति वृत्त की परिक्रमा करेगा। पर सूर्य सिद्धान्तादि का मत है कि यह २७ अंश पश्चिम को जाकर पुन: लौटेगा और अश्विनी से २७ अंश पूर्व तक जायेगा। इस प्रकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह दोलन करता है।

मेरा मत भी है कि संपात बिन्दु दोलन करता है, पर २७-२७ अंश नहीं अपितु ३५-३५ अंश। ऋग्वेद का वृषाकपि सूक्त यही कहता है और महाभारत का ऐतिहासिक प्रमाण भी यही बताता है।

यह सिद्ध हो जाने पर कि मंत्र का प्रतिपाद्य क्रान्ति वृत्त है तो प्रधियां (दूयुट्ठियाँ लोकभाषा) ५ महीने नहीं हो सकते। ये राशियाँ ही हैं क्योंकि वृत्त विभाग राशि, अंश कला विकला है, मास, दिन आदि नहीं।

राशियों का नामकरण—जब वेदों ने मनुष्य को राशि रूप विभागों से परिचित कराया तो इनके नाम भी बताये होंगे।

छागमश्विभ्याम् ॥ **यजु**. २१। ४०—अश्विनी से चाग राशि का प्रारम्भ। मेष राशि का प्राचीन नाम छाग है जो रामायण काल तक प्रचलित रहा। मुहूर्त चिन्तामणि में छाग को मेष के पर्याय में प्रयुक्त किया गया है **मेष सरस्वत्यै**। सरस्वती अर्थात् कृत्तिका नक्षत्र से मेष राशि की गणना करनी चाहिये। कृत्तिका का ही नाम सरस्वती है। **ऋषभमिन्द्राय** इन्द्र अर्थात् मृगशिरा के काल पुरुष नक्षत्र से ऋषभ या वृष राशि का प्रारम्भ है।

इसी इन्द्र और सरस्वती की संवाद रूप कथा वृषाकपि सूक्त में है।

ऋग्वेद १०। ८५। ८ सूर्या सूक्त **कुरीरं छन्द ओपशः**। यहाँ कुरीर या कुलीर अर्थात् कर्क राशि का निर्देश है।

पुराणों के अनुसार वीरभद्र ने दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करके सिर उसका काट लिया और पश्चात् दक्ष के बकरे का सिर लगाया गया। दक्ष यही क्रान्ति वृत्त है। जिसकी अश्विनी आदि २७ कन्याएं हैं। पहले इसका शीर्ष स्थान मृगशिरा था। अब अज या छाग राशि जो आधुनिक मेष राशि है, इस दक्ष के शीर्ष स्थान पर है। यही दक्ष के बकरे का शिर लगाना है।

ऋग्वेद १०। ७२। ६ में दक्ष को अजभर्तन नाम से पुकारा है। अज (छाग) राशि को भरण करने वाला है। दक्ष तो १२ राशियों को ही भरण करता है पर विशेष राशि कथन का अर्थ है शीर्ष स्थान पर भरण करना।

इसा मंत्र से पौराषिक कथा का जन्म हुआ है। इस प्रकार वेद ही हमें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राशियों से परिचित कराता है, क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का ग्रंथ और आदि ज्ञान है। कोई इसे ईश्वरीय ज्ञान माने या न माने पर इससे प्राचीन साहित्य संसार के पास नहीं है।

भले ही योरोपियन मिश्र, बाबुल या ग्रीस में राशि विभाग का उद्गम खोजते फिरें, परन्तु यदि भारतीय भी उधर ही भटकते हैं तो कहना पड़ेगा—

न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं, स तस्य निन्दां सततं करोति।
आभीर देशे किल चन्द्रकान्तम् त्रिभिर्वराटैर्विपणन्ति गोपाः॥ ★

प्रेरक प्रसंग

गणित में बहुत कमजोर होने की वजह से उसके सहपाठी और अध्यापक उसे बुद्धू ही नहीं समझते थे बल्कि बुद्धू लिखी पर्ची उसके कोट के पीछे चिपका दिया करते थे। फिर सब मिलकर ताली बजाकर उसकी हंसी उड़ाया करते थे। उसने अपने सह-पाठियों के इस कार्य का विरोध किया। उसने कहा, माना कि मैं गणित में कजजोर हूँ किन्तु इसका यह अर्थ तो नहीं कि तुम सब लोग मेरा इस तरह मजाक उड़ाओ।

लेकिन उसके इस तरह के विरोध करने पर सहपाठी और दूने वेग से उसका मजाक उड़ाते। उसने एक-दो लड़कों के साथ लड़ाई-झगड़ा भी किया और उसने अध्यापक से भी इस बात की शिकायत की।

चुप रहने और कक्षा में सबसे पीछे की बैंच पर बैठने की वजह से अध्यापक ने उसकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया और उल्टे एक दिन कक्षा में कहा, यह बुद्धू और किसी विषय में पास हो सकता है लेकिन गणित में तो सात जन्मों में भी सफल नहीं हो सकता। अध्यापक का यह व्यंग्य बालक के कोमल हृदय को वेध गया। उसने सोचा इस तरह विरोध करने, लड़ने-झगड़ने याशिकायत करने से कोई लाभ नहीं होता। उसने कमर कस कर दिन-रात हिम्मत के साथ गणित की पुस्तकों को शुरू से पढ़ना-समझना प्रारम्भ कर दिया।

हिम्मत न हारने के कारण ही गणित उस लड़के के जीवन का गीत बन गया। गणित के ज्ञान ने विज्ञान में उसकी दिलचस्पी पैदा कर दी।

बचपन में बुद्धू कहलाने वाला यही बालक सुप्रसिद्ध गणितज्ञ और वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टाइन था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषि दयानन्द की दृष्टि–होती यज्ञ से वृष्टि

—विवेकानन्द सरस्व

१. "आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिए एक वर्ष में १००००) हजार रुपये के घृतादि का जिस रीति से होम हुआ था, उसी रीति प्रति वर्ष होम कराइये। परन्तु उनमें से ५०००) पाँच हजार के सुगन्धि घृत मोहन भोग का होम वर्षा ही में कि जिस दिन वर्षा का आर्द्रा नक्ष लगे उस दिन से लेके विजय दशमी तक चारों वेदों के ब्राह्मणों का व करा एक सुपरीक्षित धार्मिक पुरुष उन पर रख के होम कराइयेगा। से मेरा आशीर्वाद कहियेगा और इस लेख को यथावत् सफल कीजियेगा ऋ. द. प. वि. पत्र ४८६, पृ. ४४६।

२. "इस देश में वर्षा प्रायः न्यून होती है ; इसके लिए यदि मेरे कहे अनुसा एक-एक वर्ष में १००००) दश हजार रुपयों का घृतादि का नित्य-प्र और वर्षाकाल में चार महीने तक अधिक होम करावेंगे वैसे प्रति व होता रहे तो संभव है कि देश में रोग न्यून और वर्षा अधिक हुआ करे। पुस्तक वही, प० १०२ पृ० ४६३।

३. "होम-हवन से वायु शुद्ध होकर सुवृष्टि होती है, उससे शरीर नीरोग औ बुद्धि विशद होती है। पूना प्रवचन।

४. "इस प्रकार हवन की विशेष योजना के कारण विशेष उष्णता उत्प होकर विशेष वृष्टि उत्पन्न होती है।" वही।

५. "सुवृष्टि और वायु शुद्धि होम-हवनादि से होती है, इसलिए हो हवनादि करना चाहिए।" वही।

६. "यो होमेन सुगन्धयुक्त द्रव्य परमाणु युक्त उपरिगतो वायुर्भवति स वृष्टि जलं शुद्धं कृत्वा वृष्ट्याधिक्यमपि करोति।" जो वायु सुगन्धादि द्रव्य के परमाणुओं से युक्त होम द्वारा आकाश में चढ़ के वृष्टि जल शुद्ध कर देता और उससे वृष्टि भी अधिक होती है, क्योंकि होम करके नीचे गर्मी अधिक होने से जल भी ऊपर अधिक चढ़ता है। ऋ० भूमिका वेद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विषय विचार।

७. "जो होम करने के द्रव्य अग्नि में डाले जाते हैं, उनसे धुआँ और भाफ उत्पन्न होते हैं, क्योंकि अग्नि का यही स्वभाव है कि पदार्थों में प्रवेश करके उनको भिन्न-भिन्न कर देता है, फिर वे हल्के होके वायु के साथ ऊपर आकाश में चढ़ जाते हैं, उनमें जितना जल का अंश है वह भाफ कहाता हैं और जो शुष्क है वह पृथ्वी का भाग है, उन दोनों के योग का नाम धूम है। जब वे परमाणु मेघ मंडल में वायु के आधार से रहते हैं, फिर वे परस्पर मिल के बादल होके उससे वृष्टि, वृष्टि से ओषधि, ओषधियों से अन्न, अन्न से धातु।" वही।

८. "स्त्री-पुरुषों को चाहए कि स्वयंवर विवाह करके अति प्रेम के साथ आपस में प्राण के समान प्रियाचरण, शास्त्रों का सुनना और औषधि आदि का सेवन और यज्ञ के अनुष्ठान से वर्षा करावें।" यजु० १४/८

९. "जैसे अच्छे प्रकार सेवन की हुई गौ दुग्धादि के दान से सब को प्रसन्न करती है, वैसे ही वेदी में चयन की हुई ईंटें वर्षा की हेतु होके वर्षादि के द्वारा सब को सुखी करती हैं।" यजु० १७/२

१०. "वर्षा का हेतु जो यज्ञ है, उसका अनुष्ठान कर के नाना प्रकार के सुखों को प्राप्त करो।" यजु० १/१४

११. "अच्छी प्रकार पदार्थों को इकट्ठा करो यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए जो वृष्टि व बुद्धि बढ़ाने वाला है।" यजु० १/१६

१२. "अग्नि में जो हवन किया जाता है तथा जिसको सूर्य अपनी किरणों से खींच कर वायु के वेग से ऊपर मेघमण्डल में स्थापना करता है और फिर वह उसको वहां से मेघ द्वारा गिरा देता है।" यजु० २/८

१२. मनुष्य लोगों को चाहिए कि जिस मेघ से सब का पालन होता है, उसकी वृद्धि वृक्षों के लगाने, वनों की रक्षा करने और होम करने से, सिद्ध करें, जिससे सब का पालन सुख से होवे। ऋ० ५/८३/४

इन तेरह स्थलों के अध्ययन से ऋषि दयानन्द का मन्तव्य स्पष्ट हो जाता है कि वे वृष्टि यज्ञ के प्रबल पोषक, समर्थक एवं प्रचारक थे। उन्हीं के विचारों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का अनुसरण करने वाले आर्यसमाज के आचार्यों एवं पुरोहितों को अन्धविश्वासी कहना दुःसाहस की पराकाष्ठा है। भविष्य में कोई भी दिग्भ्रान्त व्यक्ति ऋषि दयानन्द का नाम लेकर आर्य जनता को भ्रान्त न कर सके, इसी लिए मैंने वृष्टि यज्ञ परक अनेक स्थलों का एकत्र संकलन कर दिया है, जिससे जिज्ञासु जन लाभ उठायेंगे तथा वृष्टि यज्ञ को अन्धविश्वास मात्र कहने वालों को समुचित उत्तर देंगे।

जन-ज्ञान मासिक के नियम

१. 'जनज्ञान' के पाठक पत्रव्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें। (सदस्य संख्या 'जनज्ञान' के रैपर पर लिखे पते पर अंकित रहती है।)
२. 'जनज्ञान' प्रतिमास तीन या चार तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
३. मास के अन्त तक 'जन-ज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भेज दिया जाता है।
४. कागज, छपाई आदि की लागत में अत्यधिक वृद्धि के कारण मई सन् १९८९ से 'जन-ज्ञान' की एक प्रति का मूल्य चार रुपये कर दिया गया है। वार्षिक मूल्य चालीस रुपये है।
५. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न रहता है।
६. कृपया आगामी वर्ष के लिए नया शुल्क मनीआर्डर द्वारा तुरन्त भेज दिया करें। मनीआर्डर न मिलने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क की वी. पी. द्वारा भेजा जायेगा। वी. पी. में ७ रु. ५० पैसे का डाक व्यय अतिरिक्त होता है, जिसका लाभ न तो सदस्यों को होता है और न ही संस्थान को।
७. 'जन-ज्ञान' की वी. पी. वापिस आने पर संस्थान को ७.५० पैसे की हानि उठानी पड़ती है। अतः सदस्यों से निवेदन है कि वे (हमारे भेजे पोस्ट कार्ड पर) उत्तर देने की कृपा अवश्य किया करें।
८. जन-ज्ञान का विशेषांक न मिलने पर दोबारा रजिस्ट्री से ही भेजा जायेगा। इसके लिए न मिलने की शिकायत के साथ दोबारा भेजने हेतु पांच रुपये अवश्य भेजें।

—प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकाश-पुंज आर्य संस्कृति

—अमरनाथ आर्य

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाश वितता महान्तः ।
तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः ।।

—हे स्वीकरणीय प्रभो ! तेरी सृष्टि में ये सैंकडों और सहस्रों—यज्ञ-सम्बन्धी, अर्थात् वेदज्ञान विषयक जो बड़े-बड़े भ्रमजाल फैले हुए हैं, उनसे आज सर्वोत्पादक और सर्वव्यापक प्रभो ! आपके आशीर्वाद से अच्छी स्तुति करने वाले हमारे ये यशस्वी और पराक्रमी विद्वान् विश्व के जन-जन को छुड़ाकर श्रेय-पथ का पथिक बनाएँ ।

इससे स्पष्ट होता है कि वेदज्ञ विद्वान् एक देश या वर्ग का नहीं, बल्कि समस्त विश्व का होता है । इस लिए इस वेद मंत्र में उसे किसी देश या वर्ग विशेष के अज्ञान-पाश समापन का नहीं प्रत्युत प्राणिमात्र के अज्ञान-वलय-विमोचन का आदेश है ।

इस वेदपदेश का स्वदेश में पालन करते हुए महर्षि दयानन्द ने जब शेष विश्व के विषय में सोचा, तो उन्हें अपनी यह साधना अधूरी लगी । क्योंकि अपनी मातृभूमि के पराधीन होते विदेश में न जाने का वे संकल्प कर चुके थे अतः भारत के पावन वेद-सन्देश को देशान्तर में ले जाने हुतु अपने परम शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा सदृश मेधावी-मनीषी विदेश भेजे, जिन्होंने विलायत-भूमि में वेद-सन्देश पहुंचाया ।

पश्चात् वीर सावरकर, हरदयाल एम० ए०, भाई परमानन्द और स्वामी स्वतन्त्रानन्द जैसे धुरन्धर विद्वानों ने भारत-वाटिका की वेद-सुरभि से विदेश-कानन को सुवासित कर भारत माता को समुन्नत किया ।

ऐसे महानुभाव, जो विदेश-वाटिका को वेद-वीणा से गुंजाते आए हैं—मेरे एक मित्र भी हैं—जो गुरुकुल कांगड़ी के छात्र, अनन्तर आर्य-समाज के अधिकारी, अनेक सामाजिक संस्थाओं के सदस्य, कर्मकाण्डी और प्रभावी वक्ता के साथ-साथ सरकारी अधिकारी भी रह चुके हैं । अब वे कैनेडा स्थित अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डाक्टर पुत्रों के पास हैं जहां वे अपने व्यवसाय के साथ-साथ स्वतन्त्र रूप में वेद प्रचार भी कर रहे हैं।

उनसे जो मेरा पत्र व्यवहार है, वह साभान्यतः समाज वा धर्म सम्बन्धी होता है। अपनी धार्मिक गतियों का वर्णन करते वे लिखते हैं—

'जहां मैं रहता हूँ, वहां गुरुद्वारा और सनातन धर्म मन्दिर के साथ ही आर्यसमाज मन्दिर भी है। वहां मेरे प्रबन्धस्वरूप अब साप्ताहिक सत्संगों में पहले से अधिक श्रोता आने लगे हैं। उनमें कुछ विदेशी सज्जन भी होते हैं, जो वेद-सम्बन्धी विचारों को बड़ी तन्मयता और श्रद्धा से सुनते हैं। वहां जो वेद-विचार-वर्षण होता है, उसकी वे भूरि-भूरि प्रशंसा करते और भारतीय दर्शन और संस्कृति के विषय में अधिक से अधिक जानने को उत्सुक रहते हैं। ऐसे में वहां सहभोज का आयोजन भी रहता है, जिसमें सम्भ्रान्त और उच्चाधिकारी गण भी सम्मिलित होते और प्रवचन तथा प्रसाद का आनन्द उठाते हैं। उनका कथन है कि 'अतिभौतिकता से संत्रस्त मानव को यदि कहीं सच्ची शान्ति है, तो वह भारतीय अध्यात्म-चिन्तन में ही है।'

इस भान्ति वहां अवान्तर रूप से वेद-प्रचार कार्य चल रहा है।

इसे पढ़ कर मुझे महर्षि के ये वचन "सत्य को धारण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए," स्मरण होते हैं कि जिन्हें ये मित्र दूरस्थ देश में भी चरितार्थ कर रहे हैं।

इस पत्र से उत्साहित होते हुए मैंने उन्हें लिखा —यह स्तुत्य है कि व्यवसाय-संलग्न होते हुए भी आप अपनी संस्कृति और धर्म-प्रचार-यज्ञ में निरत रह सुदूर क्षितिज में भी वेद-सन्देश प्रसारित कर रहे हैं एवं वहां के प्रशासक वर्ग से भी सम्पर्क बनाए हुए हैं, जो सोने में सुहागा है। वास्तव में ओजस्वी, सुशिक्षित और हंसमुख व्यक्ति क्या नहीं कर सकता। वह तो सबको अपना बना लेता है। कहते हैं—एक मुस्कान से दुनिया खरीदो जा सकती है।

अस्तु ! अपनों के हाथों क्षतविक्षत अपना यह पंजाब, जो कभी तो भयानक अनावृष्टि से झुलसता और कभी अनवरत वहुदिवसीय झड़ियों की चपेट में उलझता है—और जिसके प्रशासक बेबस, मात्र तमाशा देखते रह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाते हैं। ऐसी शोचनीय दशा वाले इस खड्ग-भुज प्रदेश के अपेक्षया सुरक्षित कोने से आपकी स्वयं-सेवकीय सेवाओं को देखते हुए मुझे आज यह मंत्र प्रेषित करते हुए गर्व हो रहा है।

ऐसे में आप द्वारा वर्णित कैनेडा की आदर्श राज्य-व्यवस्था का ध्यान आता है, जहां अमीर-गरीब की खाई तंग और सौजन्य-समता का मैदान चौड़ा है। जहां स्वार्थ का अन्धकार नहीं, परमार्थ का प्रकाश है और जहां साधारण और विशिष्ट नागरकों से यथायोग्य वर्ताव किया जाता है।

आज राम और कृष्ण, नानर्क और दयानन्द की भूमि बर्बरता के जबड़े में ऐसे न पिसती और न भयानक प्रजा-विनाश ही होता, यदि हमारे कर्णधारों ने अपने महापुरुषों की एक भी मानी होती। हमारा तो आदर्श रहा है—

सो नृप अवसि नरक अधिकारी। जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सम्भवतः इसी विस्मृति स्वरूप हम ऐसे दारुण दुःख भोग रहे हैं। आपकी यह सूक्ति कि 'जब हम भारत में थे, तो समझते थे कि हम भारत में रहते हैं। किन्तु कैनेडा आकर समझते हैं कि हम संसार में रहते हैं'—बड़ी सुन्दर लगी।

परन्तु मित्रवर ! यह तो हमारा आदर्श रहा है—

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानान्तु बसुधैव कुटुम्बकम्॥

—यह अपना है या पराया, यह गिनती तो लघुचित्त लोगों की है। उदार-चरितों का तो सारी पृथ्वी ही परिवार है—जिसे हमने ठुकरा कर अयश और अन्यों ने अपना कर शोभा पाई है।

जानने में आया कि कैनेडा का दयालु और न्यायप्रिय शासन अपनी प्रजा का कितना ध्यान रखता है; उसके कल्याणार्थ वह कितना प्रयत्नशील रहता है ! इसीलिए तो इसकी श्रेष्ठतम देशों में गणना होती है, जबकि लगता है कि भारतीय शासन इतिहास के उस पृष्ठ को भूल गया जो आर्यावर्त की सुन्दर राज्यव्यवस्था का यशोगान करता है। सत्य तो यह है कि 'जो अपने इतिहास को भूल जाता है, इतिहास उसे मिटा देता है।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप के अनुसार वहां समाज मन्दिर में हवन भी होता है और आप सदृश आर्य विद्वानों के प्रवचन भी। तो उन्हें पहुंचा देना—

'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।' यज्ञ श्रेष्ठ कर्म है। तथा 'स्वर्गकामो यजेत'। और स्वर्ग, अर्थात् सुख-विशेष अभिलाषी को यज्ञ करना चाहिए,' जिसमें देवपूजा, सत्संगति व दान की बलवती महिमा और सुअवसरों से जहां परस्पर मैत्री व सहयोग की भावना दृढ़तर होती है और यज्ञ के प्राण रूप— 'इदन्न मम' से प्राणी अपने प्रबल शत्रु अहंकार-अभिमान से छुटकारा पाता है— वहां इसके सुगन्धिसार से पवित्रता और नीरोगता का दिव्य वरदान भी उसे मिलता है।

ऋषियों की ऐसी दिव्य यज्ञ-विद्या का आप वहां अवश्य प्रचार करना तथा यह भी बताना कि सुधा-सागर उपनिषदों का मानवोत्थान में क्या महत्त्व है—मानव की यह आध्यात्मिक उड़ान, अपने में कैसी अनुपम ज्ञान-राशि है। यह भी बताएं कि—

ईश्वर, जीव, प्रकृति, ये अनादि तत्त्व क्या हैं? इनका परस्पर सम्बन्ध, उद्देश्य और प्रयोजन क्या है? जीव, क्यों, कैसे और कहां से आता और इहलोक लीलोपरान्त कहां चला जाता है? जीव की जन्मपूर्व और पश्चात् की स्थितियां क्या हैं? तथा यह विश्व-प्रपंच कब से और क्यों चला आ रहा है? ईश्वरीय वैदिक स्वरूप यथा, वह न्यायकारी वा दयालु, दोनों एक साथ कैसे हैं? मृत्यु क्या है? और—

जिस मरने से जग डरे मेंरे मन आनन्द।
मरने ही ते पाइये, पूर्ण परमानन्द ॥

—की स्थिति कब और किसे मिलती है? स्वर्ग, नरक और मोक्ष—क्या, कैसे, कहां और किन्हें मिलते हैं? एवं जगत् में एक सुखी और अन्य दु:खी क्यों? एक शान्त और दूसरा अशान्त क्यों? आदि-आदि गूढ़ किंवा रोचक विषयों पर आप सुगमता से प्रकाश डाल सकते हैं—और आप अवश्य डालिएगा भी।

इसमें यदि आप कोई सहयोग या सामग्री चाहें, तो मेरी विनम्र सेवाएं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रस्तुत हैं। इससे जहां भारतीयता गौरवान्वित होगी, वहीं आपकी लोकप्रियता भी विभूषित होगी। इस हेतु मैं आप से यथानुरूप पत्र-व्यवहार भी कर सकता हूं।

अत: जो पुण्य प्रचार-कार्य वहाँ आज आप अकेले कर रहे हैं—आप की सत्प्रेरणा से इसमें अन्य भी आ मिलेंगे और आप पाएंगे कि—

हम अकेले ही चले थे जानिबे मंजिल मगर।
लोग साथ आते गए औ' कारवां बनता गया॥

यह मित्र महोदय जो स्वयं पंजाबी हैं और आर्य मर्यादादि वैदिक-पत्रिकाओं के नियमित पाठक रहे हैं—यहां की स्थिति के विषय में पूछते हैं। मैंने उन्हें लिखा—

पुराणों में कथा आती है कि किसी ऋषि ने भगवान् विष्णु की तपस्या की और उनसे 'प्रलय-दृश्य' देखने का विचित्र वर माँगा, जो स्वीकार हुआ और समय पर उसकी वह इच्छा पूरी हुई। किन्तु मैं सोचता हूं कि पंजाब निवासियों ने ऐसा कौन-सा 'वर' माँगा होगा, जो आए दिन उन पर अनेक विपत्तियों के पहाड़ टूटते और आपदाओं के घन गर्जते रहते हैं। और यह तपोभूमि मानवता के शत्रुओं द्वारा अपवित्र हो रही है।

कभी तो यहाँ की 'सुजला' नदियां मानव रक्त से रंजित हो फुफकारती और सर्वस्व निगलती जाती हैं और कभी 'सुफला' वसुन्धरा रुधिर लिप्त हो विधवाओं और असहायों की गगन-भेदी चीत्कारों से गुंजित वधशाला का दृश्य प्रस्तुत करती है।

जन-रंजक नदियों को लहू-लोहित करने, जन-पालक भू को मानव रुधिर से रंगने और वीर-प्रसू धरती को निर्दोष रक्त से रंगने वालों को क्या कभी विधाता क्षमा करेगा ?

तथापि यहाँ जन जीवन गोलियों की बौछार वा आपत्तियों के घटाटोप में भी गतिमान् है। दुर्धर्ष जीवनी शक्ति ने कब हार मानी है ? मानव-चरण चुनौतियों के आगे कब रुके हैं ?

मृत्यु का ताण्डव हो या बिजलियों की वर्षा, मानव की यह जय-यात्रा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अग्रसर रही है। वह आशा का दीप जलाए सुहानी भोर की प्रतीक्षा में है, जो कोमल किरणों से उसके हृदय-घावों को भर दे। वह नहीं चाहता कि—

गजब है जुस्तजूए दिल का यह अंजाम हो जाए।
कि मंजिल दूर हो औ' रास्ते में शाम हो जाए॥

बुद्धिजीवी अपने वातावरण से अप्रभावित नहीं रह सकता। अतः आर्य-समाज शान्ति-सत्प्रयास और धर्म-प्रसार में निरत है और नव-जीवन-दायिनी शान्ति-भोर की आशा में इसकी रचनात्मक गतियां अग्रसर हैं।

सत्य का पुजारी और शान्ति का यह दूत जन-जीवन-घाटी में गाता जा रहा है—

वही प्रेम गंगा यहाँ फिर बहेगी, जो संसार की तापमाला हरेगी॥
पुकारेगा जग फिर इक स्वर में सारा, यही वृद्ध भारत गुरु है हमारा॥

पृथ्वी के आधार

दयालुरमदस्पर्श उपकारी जितेन्द्रियः।
एतैश्च पुण्यस्तम्भैश्च चतुर्भिर्धार्यते मही॥ शिवपुराण॥

दयालु मनुष्य, अभिमानशून्य व्यक्ति, परोपकारी और जितेन्द्रिय—ये चार ऐसे पवित्र खम्भे हैं, जो पृथ्वी को धारण किए रहते हैं।

किसे शान्ति नहीं मिलती ?

द्विषतः परकाये मां मनिनो भिन्नदर्शिनः।
भूतेषु बद्धवैरस्य न मनः शान्तिमृच्छति॥ भाग० ३॥२४॥२३॥

जो अभिमानी और भेददर्शी है, जिसने सम्पूर्ण प्राणियों के प्रति वैर बांध रखा है, अतएव जो दूसरे के शरीर में स्थित मुझ अन्तर्यामी परमात्मा से द्वेष रखता है, उसके मन को कभी शान्ति नहीं मिलती।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'अंग्रेज' बनाने वाले कारखानों से सावधान

– योगीराज कुमार

प्रतिवर्ष छोटे-छोटे शहरों और कस्बों में हजारों की संख्या में कॉन्वेंट तथा नर्सरी स्कूल खोले जाते हैं। इन्हें खुलवा देना बड़ा ही आसान है। आपके पास परकोटे से घिरा हुआ एक खुला सा घर होना चाहिए तथा १००-१०० रुपये महावार वेतन पर हंसी के फूल झाड़ने वाली आधा दर्जन अध्यापिकायें। बस खुल गयी बच्चों की नर्सरी और बाल-बाड़ी केन्द्र।

आज शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित लोग अपवादस्वरूप ही दिखाई देते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे लोगों की भरमार है, जो सुलझे हुए धंधेबाजों की तरह शिक्षा की दूकानें अधिक से अधिक लाभ पाने के लिए चला रहे हैं। जून-जुलाई आते ही शहरों व कस्बों की दीवारें नये खुलने वाले स्कूलों के पोस्टरों तथा बैनरों से ढ़ँक जाती हैं। तथाकथित शुद्ध शिक्षा के ये व्यापारी लाउड़ स्पीकरों द्वारा भी अपने-अपने स्कूलों के विज्ञापनों को जनसामान्य तक पहुंचाते हैं।

शोषण, लूट तथा अंग्रेजी – परस्ती

हास्यास्पद बात यह है कि इस शिक्षा के धन्धे में ऐसे लोग लगे हुए हैं जो खुद भी ढंग से शिक्षित नहीं हैं। इन्हें शिक्षा का तकनीकी ज्ञान नाममात्र को भी नहीं है। शहर के हर गली-कूंचे में इनके कान्वेट तथा नर्सरी स्कूलों के बड़े-बड़े बोर्ड लटके दिखाई देते हैं, जिनका नामकरण भी राजनीति के आकाओं के नाम पर किया जाता हैं। सरकारी प्रशासन पूर्णरूप से वाकिफ होता है कि ऐसे अंग्रेज बनाने के कारखानों में अध्यापक, अध्यापिकाओं से लेकर छोटे कर्मचारियों तक का खुला शोषण होता है। तथाकथित प्रबन्धक ही इनके सोलह आने मालिक होते हैं। अधिकतर प्रबन्धक यानी स्कूल के मालिक वही होते हैं। जिनकी जमीन और मकान में अंग्रेज बनाने के ये कारखाने खुले होते हैं ये प्रबन्धक लोग थाने की नेतागीरी तथा शहर के सांसद और विधायकों की चमचागीरी करते हैं। वैसे इन्हें शिक्षा से कोई सरोकार नहीं, इनका तो एक-सूत्री कार्यक्रम होता है अपनी जेबें दोनों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हाथों से भरना। अधिकतर ये कान्वेंट और नर्सरी स्कूल अंग्रेजी मीडियम के होते हैं। अंग्रेजी एक ऐसी भाषा और मीडियम है जिसे देश की आजादी के ४० वर्षों बाद भी हमारे देश में श्रद्धा की नजर से देखा जाता है।

कान्वेन्ट से अनभिज्ञ

हम लोग भले ही अपनी मातृ-भाषा हिन्दी को शुद्ध न बोल पायें, लेकिन हम अपने नौनिहाल बच्चों के लिए किसी कान्वेंट स्कूल का चुनाव अवश्य बड़ी तत्परता से करते हैं। कान्वेंट का मतलब न अभिभावक जानते हैं न सौ-सौ रुपए पाने वाली अध्यापिकाएं और न सफेदपोश मैनेजर साहब। ऐसे कथित कान्वेंट तथा नर्सरियां मध्यम-वर्गीय अभिभावकों की कमजोरी का लाभ उठाती हैं और खुले रूप से अभिभावकों की जेब साफ करती हैं।

भूलें शिक्षानीति के नाम पर

हमारी सरकारें नई नई शिक्षा नीति का ढिंढोरा पीटती हैं। इन नीतियों की सफलता की संभावना पर गौर किये बिना हमें दिग्भ्रमित करती है और झूठा दावा करती हैं कि नई शिक्षा-नीति से सभी समस्याओं का समाधान हो जायेगा। आज भी शिक्षा-सम्बन्धी माडलों को तैयार करने में करोड़ों रुपये बर्बाद किये जा रहे हैं। पुल और फैक्टरियों के उद्घाटन पर पैसा पानी की तरह बहाया जाता है। इसका पाँचवां भाग भी स्कूलों को खर्च के लिए नहीं मिल पाता। क्या शिक्षाविद् प्रशासन व सरकारें कभी सोचती हैं कि तथाकथित कान्वेंट परम्परा की शिक्षा की दूकानों में १०० रुपये पाने वाली अध्यापिकायें बच्चों को किस तन्मयता के साथ पढ़ाती होंगी ?

प्रवेश कठिन

जून-जुलाई की तपती दुपहरी में अभिभावक भूख-प्यास से त्रस्त और परेशान हाल में कॉन्वेंट और नर्सरी कारखानों में अपने बच्चों का दाखिला कराने के लिये घूमते-फिरते हैं। आज तो छोटे और थर्डक्लास 'अंग्रेज बनाने के कारखाने' में भी बच्चों को दाखिल कराने में अभिभावकों के पसीने छूट जाते हैं। विश्वविद्यालय और इण्टर कालिजों में दाखिला कराना आसान है लेकिन कान्वेंट में नहीं। कान्वेन्ट स्कूल का तो प्रवेश-फार्म ही सौ रुपए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से कम में नहीं मिलेगा और हो गये बेचारे अभिभावक के टखने ढीले। फिर भी जरूरी नहीं कि प्रवेश मिल ही जाय। फिर होगी प्रवेश—परीक्षा जिसमें छोटे-छोटे अवोध बच्चों से ऊल-जलूल प्रश्न पूछे जायेंगे तथा वह भी उस बच्चे से जिसने कभी स्कूल का मुंह तक नहीं देखा। फिर भी यदि अभिभावक चालू पुर्जा हुआ तो डोनेशन देकर बच्चे को दाखिल करा ही सकता है। अंग्रेजी शिक्षा के इन कारखानों में १० हजार रुपये तक डोनेशन लिया जाने लगा है। ऐसे स्कूलों में भरती होकर बन गया आपका बच्चा अंग्रेज और आप हो गये अंग्रेज स्टूडेण्ट के डैडी। डोनेशन के बाद भी प्रवेश-शुल्क के नाम पर ली जाने वाली रकम इतनी ज्यादा होती है कि अभिभावक को नानी याद आ जाती है।

शुल्क और शुल्क

ऐसे कॉन्वेन्ट स्कूलों में शान-शौकत अहम् होती है तथा यहां बच्चों के नाम पर आये दिन ऐसे काम होते हैं तथा हर काम के लिए अभिभावक की जेब ढीली कराई जाती है। प्रकाश-शुल्क, पंखा-शुल्क, स्वास्थ्य-शुल्क, इंक शुल्क, रेडक्रास-शुल्क, विज्ञान-शुल्क, भूगोल-शुल्क, कला-शुल्क, वाहन शुल्क क्रीड़ा-शुल्क, पत्रिका-शुल्क, परीक्षाकार्ड-शुल्क और सुविधा-शुल्क आदि न जाने कितने और कैसे-कैसे शुल्क हैं, जिन्हें चुकाते-चुकाते अभिभावक को रोना आ जाता है। ऊपर से बच्चों को अंग्रेजियत में ढालने वाली तीन जोड़ी ड्रेस, टाई, मोजा, बूट आदि भी होने चाहिये।

सुविधाओं के नाम पर

विकास के नाम पर भवन में जाड़ों में सीलन मिलेगी, गर्मी में टीन तपेगी तथा बरसात में भवन में से होकर पानी टप-टप बरसेगा। डेस्क व कुर्सियां ऐसी होंगी, जिससे बच्चों के कपड़े रोज फटेंगे। स्कूल के पास खेल का मैदान नाम को भी नहीं होगा और बच्चों से भारी मात्रा में लिया जायेगा क्रीड़ा-शुल्क। पीने के पानी की व्यवस्था के नाम पर एक लोटा और एक बाल्टी होगी। बच्चों को हिदायत दे दी जाती है कि प्लास्टिक की बोतलें और पीने के लिए पानी अपने घर से लायें। बिजली की फीस बच्चों से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रतिमास उगाह ली जाती है, लेकिन न तो कभी पंखे चलते हैं और न कभी बल्ब जलते हैं। छोटे-छोटे कमरे होंगे लेकिन उसी में ४० से ५० बच्चे ठूंस-ठूंस कर बैठा लिये जाते हैं तथा इसका नौनिहाल बच्चों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य-शुल्क तो लिया जाता है पर साल में एक बार भी किसी डाक्टर को नहीं बुलाया जाता। यदि कभी कोई बच्चा बीमार हो भी जाता है तो तुरन्त अभिभावक को बुलाकर सौंप दिया जाता है। अब तो स्कूल-स्कूल में ड्रेस, कापियां और किताबें बेचकर भी अपनी कमाई बढ़ाई जा रही है एक बात और, टूर और पिकनिक के नाम पर अभिभावकों की जेब से सैकड़ों रुपये निकलवा लिये जाते हैं।

हमारी सरकार के पास चुनावी खर्च के लिए और पोस्टर छपवाने के लिये तो अपार सम्पत्ति और कागज है लेकिन हमारे देश के भावी कर्णधार नौनिहाल बच्चों को कागज के अभाव में अच्छी किताबों और नोटबुकों के लिए महरूम रह जाना पड़ता है। आज किसी नेता की सुरक्षा पर तो १५ से २० लाख रुपये खर्च किये जा सकते हैं, लेकिन स्कूल भवनों व अध्यापकों की दशा सुधारने के लिए धन का अभाव है। सरकार और प्रशासन क्या जाने कि नगर पालिका स्कूल, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड स्कूल और कान्वेंट पद्धति पर चलने वाले स्कूलों की क्या समस्यायें हैं और वहां क्या धाँधलियां हैं? यदि कहा जाय कि सरकारी प्रशासन इस तरह के भ्रष्टाचारों को संरक्षण देता है तो गलत बात न होगी। अंग्रेज बनाने के कारखाने का सभी लाभ सफेद-पोश प्रबन्धक ले जाता है और अध्यापिकाओं, चपरासियों और अभिभावकों का खुला शोषण होता है। क्या सरकारी प्रशासन कभी इन गैरकानूनी शिक्षा की दूकानों को बंद करने के बारे में सोच-विचार करेगा? यदि नहीं तो हमारे देश के भावी कर्णधारों में वे सभी अवगुण आ जायेंगे जो देश तथा समाज को प्रगति की ओर ले जाने में बाधक होंगे।

अपना सारा कामकाज हिन्दी में कीजिये।
अंग्रेजी का मोह छोड़िए। हमारा नारा हो—
हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्त्तमान शिक्षा-प्रणाली का स्वरूप इतना विकृत क्यों ?

—ज्योति खरे

महात्मा गाँधी ने शिक्षा की आधुनिक पद्धति पर टिप्पणी करते हुए कहा था, "आज जिस ढंग से शिक्षा प्रदान की जाती है, मैं उसके सर्वथा विरुद्ध हूं। यह तो मात्र बाह्य ढकोसला सिद्ध हो रही है। आज उच्च शिक्षा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन की आवश्यकता है। भारत में तो वही शिक्षा सार्थक होगी जो छात्रों में नैतिकता, कर्तव्यपरायणता, विवेकशीलता, आत्मविश्वास व संकल्पशक्ति को जाग्रत कर सके।"

यद्यपि गाँधी जी ने यह बात अंग्रेजों के शासनकाल में कही थी किन्तु खेद है कि सर्वत्र भारत में आज भी शिक्षा का क्रम वैसा नहीं बन पाया है जैसा बनना चाहिये था या जिसकी अपेक्षा की गई थी।

शिक्षा-पद्धति में गिरावट का एक प्रमुख कारण शिक्षा-पद्धति की विकृति है। परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करने वाले को श्रेय मिलता है। अतः बौद्धिक क्षमता बढ़ाने की बजाय विद्यार्थी किसी न किसी तरह अधिक अंक प्राप्त करना अपना ध्येय बना लेते हैं। पाँच-दस वर्ष के दौरान आये कुछ प्रश्न-पत्र ही घुमा-फिराकर लगातार आते रहते हैं। फिर कितने ही परीक्षा गाइड संभावित प्रश्नोत्तरी प्रस्तुत करते हैं। विद्यार्थी इन्हीं गिने-चुने प्रश्नों को याद करके परीक्षा-भवन में बैठ जाते हैं तथा अच्छे अंक भी प्राप्त कर लेते हैं अतः परिश्रम और जिज्ञासा समाप्त होती जाती है।

दूसरी ओर परीक्षा-पद्धति में अंक के आधार पर रैंकिंग का निर्धारण भी बड़ा विचित्र है। निर्धारित अंक से एक अंक कम प्राप्त करने वाला विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी में आता है तथा उससे एक अंक अधिक प्राप्त करने वाला प्रथम श्रेणी में गिना जाता है—उसे अधिक श्रेय मिलता है। बौद्धिक दृष्टि से दोनों एक होने पर भी दोनों का समाज में मूल्यांकन अलग-अलग रूप में होता है। इससे कम अंक प्राप्त करने वाला छात्र निराश तथा हतोत्साही हो जाता है। आगे बढ़ने का सुअवसर वह प्राप्त नहीं कर पाता है।

ऐसी विषम स्थिति में परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों की स्थिति तो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अकथनीय है। आंकड़े बताते हैं कि परीक्षा में प्रतिवर्ष सत्रह प्रतिशत छात्र ही उत्तीर्ण हो पाते हैं। अर्थात् शेष तिरासी प्रतिशत परीक्षा-प्रणाली का ग्रास बन जाते हैं। पढ़ने वाले को कोई पूछता नहीं, फिर अनुत्तीर्ण को कौन पूछेगा। ऐसा छात्र प्रायः कुण्ठाग्रस्त बना रहता है। कुछ आत्महत्या कर लेते हैं अथवा संसार की इस शिक्षा-प्रणाली को कोसते-कोसते बागी हो जाते हैं। ऐसे में अपराध-कृत्य की ओर प्रवृत्ति होकर अपनी घृणा को समाज के ऊपर बरसाते हैं, खूंखार नर-पशु बन जाते हैं।

परीक्षा-पद्धति के विकृत स्वरूप को देखकर ही 'कियनो' ने कहा है कि—"परीक्षा ज्ञान की सही कसौटी नहीं अपितु एक जुआ है।" कितने ही शिक्षा-शास्त्रियों ने इसे "द ग्रेट ब्रेन राबरी" की संज्ञा दी है तथा यह कहा है कि—"वर्तमान शिक्षा-स्तम्भ पर टिकी शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को प्रेरणा, उत्साह और नई दिशा देने में असमर्थ है। इससे तो एक शिथिल तथा मंद-बुद्धि समाज का उदय हो रहा है, जो सामूहिक पतन, और विनाश का संकेत है।"

स्नातक-स्तर की शिक्षा प्राप्त करके प्रायः प्रत्येक विद्यार्थी रोजगार प्राप्ति के लिए आतुर हो उठता है। आज शिक्षा का मूल लक्ष्य भी तो यही बन चुका है। बचपन से ही व्यक्ति को यही प्रशिक्षण मिलता है कि खूब पढ़ने के बाद तुम डाक्टर बनोगे, इंजीनियर बनोगे, अच्छी नौकरी करोगे। सब तो वैसा नहीं बन पाते। असफल व्यक्तियों की संख्या लाखों में होती है। हर वर्ष इस कारण शिक्षित बेरोजगारों की तादाद बढ़ती जा रही है। परीक्षा पास करने की खुशी तो क्षण-भंगुर ही होती है, परन्तु बाद में निराशा का घटाटोप बादल ही दृष्टि-गोचर होता है। हर छात्र के सामने यही प्रश्न उठने लगता है कि क्या किया जाये? कहाँ जाया जाये? निराशा, निरुत्साह, निरुद्देश्यता और मनः-स्थिति को विश्रृंखलित करने वाली परिस्थितियाँ हरेक के सामने उत्पन्न हो जाती हैं।

अभिभावक अलग अपने बच्चे के कैरियर का रोना रोते हैं। बाल्यकाल से लेकर युवावस्था-पर्यन्त लगातार शिक्षा पर एक विशाल रकम खर्च करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर भी जब असफल परिणाम प्रस्तुत होता है तो उनका चिंतित और हतोत्साही होना स्वाभाविक ही है। पैसे वाले तो अपने बच्चों को उद्योग कार्य में लगा देते हैं परन्तु मध्यम-स्तरीय परिवार वालों का जीवन तो नरक-सदृश हो जाता है।

बढ़ती बेरोजगारी को भयावह समस्या को दूर करने के लिए सुधारक विचारकों ने यह सुझाव दिया है कि शिक्षा का तकनीकीकरण कर दिया जाये। सामान्य स्नातक स्तर के उच्च विद्यालय की अपेक्षा पालीटैक्निक जैसे व्यावसायिक संस्थान खोले जायें आमतौर से पौलीटैक्निक से निकले छात्रों में वह कला विकसित हो जाती है कि वह उसका उपयोग अपने भरण-पोषण के लिए कर सकता है। साथ ही इससे देश की उत्पादकता में भी वृद्धि हो सकती है तथा जनशक्ति का उपयोग भी। वर्तमान में तकनीकी कला तथा घरेलू उद्योग से सम्बन्धित विद्यालयों का सर्वथा अभाव ही है।

मन लगाकर पढ़ने और अपनी योग्यता तथा प्रतिभा बढ़ाने की अपेक्षा इन दिनों छात्रों का ध्यान इस बात पर रहता है कि वे उत्तर कापी में किसी भी प्रकार से उत्तीर्ण हो सकें। इसके लिए वे अनैतिक तरीके अपनाने में भी नहीं चूकते। नकल करने के लिए जो बन पड़ता है, दाव-घात लगाते हैं। निरीक्षकों धमकाकर या लोभ देकर इस कार्य को निर्बाध रूप से करना चाहते हैं। उत्तर कापियां जाँचने वालों के घर पहुँचते हैं, बोर्ड कर्मचारियों से मिलकर किसी भी प्रकार नम्बर बढ़वाते हैं। यहाँ तक कि जाली प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए भी हाथ फैंकते हैं, यह सब क्यों होता है ? इसके उत्तर में केवल छात्रों को ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता। इसके लिए वह परीक्षा-पद्धति भी दोषी है जिसमें वार्षिक परीक्षा के नम्बरों पर ही सब कुछ निर्भर है। होना यह चाहिए कि मासिक या साप्ताहिक परीक्षा हुआ करे और उसमें प्रश्न-पत्रों के उत्तर ही नहीं वरन् छात्र की समस्त प्रतिभा एवं शिक्षा का उद्देश्य पूरा करने के लिए अपनाई गई दिलचस्पी या मेहनत का उल्लेख हो। यह जांच-पड़ताल क्लास टीचर ही न करें वरन् इसमें अन्य कक्षाओं या स्कूलों के अध्यापकों का भी सहयोग लिया जाए। इन मासिक परीक्षाओं के अंक जोड़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर ही वार्षिक परीक्षा मान ली जाये। अलग वैस परीक्षा न हुआ करे जैसी आजकल होती है। इस प्रकार परीक्षा-पद्धति बदल देने भर से छात्रों द्वारा अनैतिकता अपनाए जाने का द्वार बन्द हो सकता है और वे पूरे वर्ष अपनी बहुमुखी योग्यता बढ़ाने में संलग्न रह सकते हैं।

व्यक्तिगत आचरण और सेवा-भावना प्रदर्शित करने को भी परीक्षा का एक अंग माना जाए। अनावश्यक पुस्तकीय तोता रटन्त का भार हल्का किया जाए और वह पढ़ाया जाए जिसके आधार पर वे अपना शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर बनाने में समर्थ हो सकें। यह सोचना और करना शिक्षा सम्बन्धी नियम निर्धारकों का काम है। यदि वे इस ओर आँखे बन्द किए रहेंगे तो वे समस्यायें बनी रहेगीं जिनके चलते छात्रों को उद्दण्ड ठहराकर अन्य सभी लोग अपने आपको निर्दोष मानते रहते हैं। ★

दयानन्द संस्थान का कार्यालय
वेदमन्दिर, इब्राहीमपुर स्थानान्तरित

दयानन्द संस्थान और उससे सम्बन्धित सब कार्यालय करौल बाग से वेदमन्दिर (महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम), इब्राहीमपुर स्थानान्तरित किये जा रहे हैं। वहां कार्यालय प्रातः दस बजे से सायं पांच बजे तक खुला रहता है।

निम्नलिखित रूट नम्बरों वाली बसें वहां पहुंचती हैं—

अन्तर्राज्यीय बस अड्डा (मोरी गेट टर्मिनल) से रूट नम्बर १६२—वेदमन्दिर द्वार पर। प्रातः ७.२०, ९.२० और १२ बजे; सायं ४.५०, ७ और ९.३५ पर। रूट नम्बर १९२— नत्थूपुरा मोड़ तक (वहां से वेदमन्दिर केवल दो फर्लांग दूर है।) प्रातः सात बजे से हर आध घंटे बाद बस मिलती है। आजादपुर और अं. ब. अ. से रूटनम्बर १३४—थोड़े-थोड़े समय बाद ग्रा० इब्राहीमपुर तक वहाँ से वेदमन्दिर एक फर्लांग है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीय एकता के लिए.........

— माहेश्वरी दत्त डिमरी

भारतीय संतों का दर्शन और ज्ञान-विज्ञान इतना आकर्षक और मनमोहक है जितना यह संसार, जो जानने के लिए संतप्त मानव-आत्मा के मनो-विनोद के लिये रचा गया है। इस सत्य को आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व भगवान् गौतम बुद्ध ने जाना। उन्होंने कहा—मानव संतप्त और दुःखी न हो तो इन ग्रन्थों को समझने की आवश्यकता न हो। अतः उन्होंने देश, धर्म और संगठन को मनुष्य के सुख का सार कहा है। यहां तक कि ईश्वर के सम्बन्ध में भी वे चुप रहे। देशवासी सुखी हुए, देश में एकता आई।

१. वे कौन से कारण है जिन से बौद्ध धर्म अपनी ही जन्म-भूमि से विलुप्त हो गया? जिसे आज तक भी विश्व का तीन चौथाई भाग मानता है। जब तक जनमत-संग्रह द्वारा इसका वैज्ञानिक विवेचन न हो तब तक हम अपनी लम्बी दासता और स्वतन्त्रता का सही मूल्यांकन नहीं कर सकते हैं।

२. गुलामों का कोई देश धर्म, संस्कृति, परम्परा, राष्ट्रीयता वा समाज नहीं होता है। जिसे हम भारतीय धर्म समझ बैठे हैं उसका विकास हमारी दास्ता के युग में हुआ है। क्या हम इस दास्ता के धर्म को अपना कर पुनः देश को गुलामी की ओर तो नहीं धकेल रहे हैं? इसका सही उत्तर जनता-जनार्दन देगी।

३. हमने देश पाया, परन्तु देश का कोई राष्ट्रीय धर्म न होने से देश धर्म-निरपेक्ष हुआ। धर्मनिरपेक्षता का यह अर्थ नहीं है कि भारत के बहु-संख्यक समाज को संगठित करने के लिए कोई रचनात्मक कार्य न किये जायें। धर्मनिरपेक्षता का एक ही अर्थ है। जैसा गांधी जी ने कहा 'सर्वधर्म-समभाव, समाज व्यवस्थित और संगठित कैसे हो; इसके लिए लोक-संग्रह करना आवश्यक है क्योंकि वे जानते थे कि ईश्वर धर्म की पवित्र भावना है जो कर्म करने वालों के साथ है। जो जाना नहीं जाता, अनुभव किया जाता है।

४. भारत एक प्रजातान्त्रिक देश है। प्रजातन्त्र कोई राज्य पद्धति नहीं है। यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म पद्धति है। धर्म के बिना कोई नैतिकता समाज में नहीं आ सकती है। तब चाहे घर-घर पुलिस चौकी और गाँव-गांव न्यायालय खोल दिये जाएं। धर्म और राज्य को बनाने वाली प्रजा है। हम राज्य के प्रतिनिधियों को लोकमत से बना सकते हैं। तो धर्म को भी लोकमत से बना सकते हैं।

५. लम्बी दासता के युग में जो राज्य विरोधी भावना देश के मानसपटल में घट गई है, उसे दूर अपने ही राजाओं के पुतले जलाकर नहीं किया जा सकता है। लोकमत समाज में विरोधी राष्ट्र भावना का उन्मूलन करने में भारी योगदान दे सकता है।

६. जो मूल्य मानव जीवन के होते हैं, वे ही राष्ट्र के भी होते हैं। अन्तर केवल इतना है, कि जीवन के सम्बन्ध में इन्हें शारीरिक, सामाजिक और मानसिक मूल्य कहते हैं तो राज्य के सम्ब्रन्ध में इन्हें आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक मूल्य कहते हैं। शरीर और राज्य दोनों मूल्यों के विघटने में लड़खड़ाने लगाते हैं।

जब इन तीन मूल्यों में संन्तुलन होता है जीवन और राष्ट्र दोनों सन्तुलित हो जाते हैं। राज्य, समाज और मूल्यों में सन्तुलन को ही राम राज्य कहते हैं। लोकमत द्वारा हमें गाँधी जी के रामराज्य की अवधारणओं को वैज्ञानिक ढंग से समझने और उससे सार्थक करने की प्रेरणा मिलेगी।

२. श्वास प्रति श्वास की भांति राष्ट्र ओर समाज में क्रिया-प्रतिक्रिया होती ही रहती है जो जीवन के लक्षण हैं। परन्तु भारतीय समाज को अंधविश्वासों और रूढ़िगत संस्कारों ने इस प्रकार जकड़ दिया है कि उसके हृदय की गति अवरुद्ध हो गई है। जहाँ हमारा राष्ट्र परमाणु युग से होड़ ले रहा है, भारतीय समाज अभी भी पाषाण युग के स्वर अलाप रहा है। यही कारण है कि देश का समाज के साथ तालमेल नहीं बैठ पा रहा है। लोकमत से समाज में गतिशीलता आयेगी। राष्ट्रीय भावना जागेगी और आकाश स्वर्गलोक में कल्पना ले कर देश को सर्वोपरि समझने लगेगा, जिसकी रक्षा में सबकी रक्षा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८. देश अनेकता में एकता की भावना जागृत कर अपना सहयोग देश की रक्षा में देगा तो वह हर्षित होगा। यही राष्ट्रीय एकता है।

९. आज देश में जो कुछअस्थिरता देखने को मिल रही है। उस सबके पीछे हमारी सामाजिक विकृतियों का उन्माद है। बाबरी मस्जिद विवाद, आतंकवाद, दहेज का विवाद, भाषावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद प्रान्तवाद, अलगाववाद, पलायनवाद, आदि सभी समस्याओं के पीछे दासता की विकृति का उन्माद कार्य कर रहा है। इन सभी समस्याओं को केवल सामाजिक स्तर पर सुलझाया जा सकता है।

१०. सारा देश आज परिवर्तन के कगार पर आकर खड़ा हो गया है। देश को यदि कोई निश्चित दिशा नहीं मिलती तो वह कोई भी उन्मादी करवट ले सकता है।

कोई राजनैतिक निकाय न होकर एक स्वायत्त संस्था होगी। संस्था के प्रतिनिधि सर्वप्रथम अपने विचारों को क्रमबद्ध कर लोकमत के लिए देश की समस्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित करेगा। जो विज्ञान समस्त विचार होंगे, उनको लेखक के नाम से, प्रकाशित करेगी और पुनः छोटी-छोटी पुस्तकों के रूप में व्यवहार के लिए देगा। इस कार्य में लाखों युवक-युवतियाँ, समाज, देश की संस्थायें लगेगी। तब कहीं हम अपनी दासता को मेट सकेंगे और राष्ट्रीय एकता को लोकमत को केन्द्र मानेंगे। ※

★राजू और रवि का झगड़ा हो गया और बोलचाल बन्द हो गई। दो दिन बाद रवि का जन्म दिन आने वाला था। उसके पापा ने कहा कि, "रवि राजू को भी जन्म दिन पर जरूर बुलाना।" रवि का दिल तो नहीं करता था, फिर भी वह राजू के घर जा पहुंचा और बोला—"परसों मेरा जन्म दिन है, हिम्मत हो तो आ जाना।"

★यह मूर्ति विष्णु भगवान की है और वह उधर वाली प्रतिभा जवाहर लाल नेहरू की है और...।" नौकर ग्राहक को मूर्तियों के बारे में बता ही रहा था कि ग्राहक टोकते हुए बोला—"जरा यह बताइए कि वह कोने में किस राक्षक की मूर्ति है?"

"धीरे बोलिए साहब वह तो दूकान का मालिक खड़ा है।" नौकर घबरा कर बोला।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काम में बाधा डालने वालों से न घबराएं

—विनायकप्रसाद हिम्मतसिंहका

किसी भी नये कार्य का विरोध होना स्वाभाविक है। कार्य की उपयोगिता परखने वालों का अपना भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण होता। किसी को एक काम अच्छा लगता है तो किसी को वही बुरा, परन्तु जिन्हें अपने स्वार्थ पर चोट पहुंचती दीखती है तो वे विरोध, निन्दा, आलोचना पर उतर आते हैं। उस स्थिति में विरोधों के समाधान का एक उपाय है कि उन पर कोई ध्यान न दिया जाये। यदि ध्यान दिया जाने लगा तो हम अपने लक्ष्य से भटक जायेंगे। जैसे कुछ कार्यकर्त्ता किसी गांव में कोई स्कूल चलाने के लिए पहुंचे, इस तरह की तैयारियां भी कर ली गईं और स्कूल आरम्भ भी हो गया। निःस्वार्थ भाव से आरम्भ किये गये इस कार्य का प्रभाव गांव वासियों पर होना स्वाभाविक ही है। लोक-सेवियों के बढ़ते हुए प्रभाव से कुछ व्यक्ति ईर्ष्या अनुभव कर उनका विरोध करने लगे, लोगों से उनके बारे में तरह तरह की बातें फैलायें या विरोध का कोई और ढंग अपनायें। ऐसी दशा में यदि प्रति-शोध लेने का विचार किया जाने लगा तो स्वाभाविक ही पाठशाला चलने की ओर ध्यान कम होगा तथा उस कार्य में शक्ति भी कम लगने लगेगी। धीरे-धीरे सारा ध्यान सारी शक्ति और सारा मनोयोग विरोधियों को परास्त करने में ही लग जायेगा और मूल उद्देश्य बहुत पीछे छूट जायेगा।

महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए उधेड़-बुन में लगे रहने पर सेवा की बात मन-मस्तिष्क से हट जाती है तथा पद, अधिकार और सर्वस्व की बात रह जाती है। फलस्वरूप लोक-सेवी अपने समर्थक ढूंढता हैं, उनके गुट बनाता है, दलबन्दी करता है और तरह-तरह के षड़यन्त्र रचता है ताकि उसका वर्चस्व बना रहे या बन सके। और उसके लिए वह उचित-अनुचित के विवेक को छोड़ कर षड्यन्त्र व कुचक्र रचने में लग जाता है।

यह सभी कृत्य खुले रूप में नहीं किये जाते। इनके लिए सिद्धान्तों की आड़ ली जाती है, नैतिकता की दुहाई दी जाती है। प्रतिपक्षी को नीचा दिखाने के लिए उसे अनैतिक और दोषी ठहराने का प्रयत्न किया जाता है। ताकि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पक्ष नैतिक और उचित दिखे। छिद्रान्वेषण की यह दृष्टि इतना विकृत रूप धारण कर लेती है कि उसे दूसरों के राई बराबर दोष पहाड़ बराबर दिखने लगते हैं तथा अपने में कितने ही दोष भरे हों उनकी ओर कोई उंगली उठाये यह भी सहन नहीं होता। निस्सन्देह यह वृत्ति वैर-भाव और ईर्ष्या द्वेष को जन्म देती है, फिर लोक-सेवी अपने मार्ग से एकदम विरत हुए बिना भी नहीं रहता। उदाहरण के लिए लोक-सेवियों में इतना वैर-वैमनस्य उत्पन्न हुआ कि वे अपने शत्रु को विनष्ट हुआ ही देखना चाहते है एवं लोक-सेवी लोगों को करुणा कष्टपीड़ितों को उबारने की प्रेरणा देती है लेकिन कभी प्रतिद्वन्दी के मकान में आग लग जाती है तो उसके हृदय में आग बुझाने के लिए सहायता करने के स्थान पर यही भाव उठता है कि मेरे इस प्रतिद्वन्दी का घर पूरी तरह ही जल जाये तो अच्छा। उसके परिवार को भी हानि हो तो अच्छा। इस दुर्भावना में लोक-सेवी की सेवा-निष्ठा और उसके चरित्र की सद्भावना परक विशेषता कहां रह जाती है ?

बहुत से लोगों के मन में सेवा की उमंग उठती है पर वे यह सोचकर चुप रहे जाते हैं कि अभी हम योग्य नहीं। जब हम पूर्णतः योग्य और सक्षम हो जायेंगे, तब सेवा करेंगे। स्मरण रखा जाना चाहिए कि आज तक संसार में पूर्णतः योग्य न कोई हुआ है और न होगा। क्योंकि जो पूर्ण होता है वह भवबन्धनों से ही मुक्त हो जाता है। उस पूर्ण पुरुष को इस संसार में आने की आवश्यकता ही कहां रह जाती है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए है उनके व्यक्तित्व में कहीं न कहीं कोई त्रुटि अवश्य रहती है। उन त्रुटियों के सुधार का प्रयत्न करते हुए भी वे सेवा के पथ पर निरन्तर अग्रसर होते रहे हैं।

यह सुविदित तथ्य है कि संसार में योग्यता, क्षमता, स्तर और परिस्थिति की दृष्टि से सभी समान नहीं, एक व्यक्ति की समता का दूसरा व्यक्तित्व भी नहीं खोजा जा सकता। योग्यता, क्षमता, स्तर और परिस्थिति की दृष्टि से न्यूनता, अधिकता का अन्तर प्रत्येक व्यक्ति में रहता है। अतः अधिक योग्यता का व्यक्ति कम योग्य का शिक्षण कर सकता है, अधिक सक्षम व्यक्ति कम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्षमता वाले की क्षमता बढ़ाने में सहायता कर सकता। व्यावहारिक जीवन में भी जहां दूसरों को शिक्षित करने और सहायता देने की बात आती है यही नियम काम करता है। प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाला अध्यापक अनिवार्य रूप से उच्च शिक्षित कहां होता है। ग्यारहवीं कक्षा पास करने वाले छात्र प्रायः प्राथमिक कक्षा में अध्यापक बना दिये जाते हैं। पांचवी-छठवीं तक पढ़ी हुई मां अपने बच्चों का अक्षर-ज्ञान करा देती है। छोटे पहलवान अपने से छोटे पहलवान को पहलवानी का अभ्यास कराते हैं। यहां तक कि अगर कोई चोर भी सिखाना चाहे, समझाना चाहे तो डाकू को मारकाट करके हत्यायें और अपहरण करने की बुराइयां तथा दोष समझा सकता है, क्योंकि वह स्वयं का उदाहरण दे सकता है। चोरी करने में वैसी बुराईयां न होने की बात कह सकता है। कहने का अर्थ यह कि कम बुराई वाला व्यक्ति अधिक बुराईयों वाले व्यक्ति को शिक्षा दे सकता है।

लोकसेवी यदि अपने आस-पास के वातावरण को देखें तो पता चल सकता है कि कहां किस स्तर की सेवा आवश्यक है और वह उस आवश्यकता को पूरा कर सकता। सेवा से यहां इतना ही प्रयोजन है कि अपने से निम्न-स्थिति के व्यक्तियों को ऊँचा उठाने, उनकी उन्नति के लिए पथ को उत्थान में बदलने और पीड़ा का निवारण करने लिए प्रयत्न करें।

जहां भी मान-सम्मान की भूख जागती है वहां सेवा-मार्ग से भटकाव आरम्भ हो जाता है और सेवी अपनी सेवा-साधना से भी अधिक मान सम्मान की चिन्ता करने लगता है। उसका सारा ध्यान प्रसिद्धि और प्रचार पर ही चला जाता है। अनेक संस्थायें जिनमें बहुत से पदाधिकारी होते हैं, चुनाव चक्कर और प्रचार एवं प्रोपेगण्डा की राजनीति केन्द्र हो जाती है और उनका सेवा-लक्ष्य समाप्त होता चला जाता है। अतएव जो लोग सेवा के प्रति निष्ठा रखते और उसे अपने जीवन-धर्म में अंगीकार करते है उन्हें चाहिए कि वे किसी सार्वजनिक संस्था में रहते हुए पद और अधिकार से बचें। उत्तरदायित्वों से विमुख होने की बात यहां नहीं कही जा रही है। उत्तरदायी बनने के बाद स्वाभाविक ही अधिकार भी मिलेंगे पर उन अधिकारों को न अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यक्तिगत प्रचार का साधन बनाया जाये और न ही उनका प्रयोग किसी पर दबाव डालने या अपनी बात मनवाने के लिए किया जाये।

सफलता और असफलता प्रत्येक कार्य के दो पहलू हैं और उनमें से कोई सा भी पहलू सामने पड़ सकता है। महापुरुषों को अपने जीवन-काल में शायद ही आशा-जनक सफलता मिल सकी हो। महात्मा ईसा ने चालीस वर्ष तक धर्म का प्रचार किया और इस पूरे समय में उनके १२ शिष्य ही ऐसे बने कि उनमें से एक ने तो ईसा को पकड़वाने के लिए, उन्हें गिरफ्तार कराने के लिए पैसे ले लिए तथा उन्हें पकड़वा दिया और उन्हें सूली हो गयी। बाकी शिष्यों ने भी अन्य समय में ईसा का साथ दिया। यदि ईसा अपने जीवनकाल में इन असफलताओं का या नाम मात्र की सफलता को देखकर हतोत्साहित हो जाते तो ईसाई धर्म शायद ही आज संसार का धर्म दिखाई देता।

जो वृत्ति आत्मप्रचार के किए काम करती है उसी वृत्ति से प्रेरित होकर लोग ध्वंसात्मक रूख भी अपनाते हैं। इसका उद्देश्य भी लोगों पर अपना प्रभाव डालना तथा उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना है। बहुत से श्रमिक संगठनों में श्रमिक हितों के लिए लड़ने वाले मजदूर नेता अपना प्रभाव सिद्ध करने के लिए मजदूरों को तरह-तरह से भड़काते हैं और बिना कारण ही हड़तालें करवा देते हैं। कोई महत्वपूर्ण कारण हो जिसके लिए अधिकारसम्मत लड़ाई लड़ी जाए तो बात भी समझ में आती है। पर ऐसा कोई कारण न होने पर भी ऊल-जलूल मांगों को लेकर हड़तालें करवा देना फिर स्वयं पंच बनकर उनका फैसला करवाना या समझौते के लिए मध्यस्थ का काम करना किसी भी दृष्टि से सेवा स्तर का कार्य नहीं हो सकता अपने वर्चस्व को बढ़ाने के लिए लोकसेवियों में निन्दात्मक या आलोचनापरक प्रवृत्तियाँ भी दिखाई है। निन्दा-आलोचना की नीति को अपने प्रचार का माध्यम बनाने वाली अनेक सामाजिक संस्थाएं भी खड़ी हुई है जिनका मूल आधार ही दूसरे के प्रति घृणा है। दूसरों के प्रति घृणा पैदा करने से कोई रचनात्मक उपलब्धि तो होती नहीं, थोड़े बहुत रचनात्मक कार्य जो चल रहे होते हैं उनके प्रति भी लोगों में वितृष्णा के भाव उत्पन्न होते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोक-सेवी को अपना दृष्टिकोण रचनात्मक रखना चाहिए। आत्मप्रचार के झमेले से दूर ऐसे रचनात्मक कार्यक्रमों को ही हाथ में लिया जाये जिनमें लोगों का वास्तव में हित होता हो। समाज की उल्लेखनीय सेवा करने में अब तक वे ही लोग सफल हो सके हैं जिन्होंने रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया तथा आत्म-प्रचार और निन्दा-आलोचना से दूर रहकर सेवा करते रहे।

इस तरह के अनेक उदाहरण है, हीरा लाल शास्त्री का वनस्थली विद्यलय इसी प्रकार आरम्भ हुआ। शास्त्री जी ने अपने योजना न किसी अखबार में छपाई और न उसके लिए कहीं प्रचार करने गये। अपने पास उपलब्ध साधनों से ही उन्होंने विद्यापीठ का कार्य छोटे रूप में शुरू किया और धीरे-धीरे जन सहयोग भी मिलता गया। फलस्वरूप विद्यापीठ देश की प्रतिष्ठित संस्थाओं में से एक है। हाथरस के कन्या गुरुकुल की स्थापना भी इसी प्रकार हुई। स्वामी केशवानन्द अनपढ़ थे और चरवाहे का काम करते थे। उनमें सेवा वुद्धि जागी और शिक्षा के प्रचार को उन्होंने अपना जीवन-ध्येय बना लिया। उन्हीं के रचनात्मक प्रयासों से सांगरिया विद्यापीठ उन्नत और समृद्ध रूप में खड़ा है। कुछ रोगियों के उपचार और उनकी सेवा के लिए बाबा साहब आम्टे ने पूरा में आश्रम खोला। साधारण व्यक्ति कोढ़ियों से दूर रहता है उन्हें अपने पास भी नहीं आने देता। पर बावा साहब आम्टे ने आत्मप्रचार से दूर चुपचाप अपना सेवाकार्य आरम्भ किया और आज उनका कुष्ठ आश्रम देश में में कुष्ठ रोगियों की सेवा का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है। झांसी का लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर भी इसी प्रकार की रचनात्मक सेवा का उदाहरण है। झांसी के पास जंगल में बहुत-सी खाली जमीन पड़ी हुई थी। अन्नाजी ने स्वास्थ्य संवर्धन के लिए वहां एक व्यायाम मन्दिर चलाने की बात सोची। इसका श्रीगणेश भी किया। बाद में कई अवरोध आये पर अन्नाजी उनका दृढ़ता-पूर्वक सामना करते रहे। उनके प्रयासों के फलस्वप लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर आज समृद्ध और साधनसम्पन्न व्यायामशालाओं में से एक है।

कलकत्ता में स्व० सीताराम सेकसरिया ने शिक्षायतन जैसी सस्था खड़ी करके शिक्षा क्षेत्र में एक नई क्रान्ति को जन्म दिया जबकि वे स्वयं अधिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पढ़े-लिखे नहीं थे। एक रोचक सत्य घटना है। कलकत्ते की एक बड़ी जूट मिल नीलाम हुई। खरीद ली एक अनपढ़ राजस्थानी ने। जूट मिल के मैनेजर के पास पहुंचा मिल चलाने की व्यवस्था के बारे में विचार करने के लिए। अंग्रेज मैनेजर अपने सामने घुटनों तक धोती बांधे लम्बा कोट पहने पगड़ी बांधे अनपढ़ व्यक्ति को देखकर भौंचक्का रह गया। जब उसे मालूम हुआ कि इन्होंने ही यह मिल खरीदी है, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, उसकी ये समझ में नहीं आ रहा था ये सज्जन मिल चलायेंगे कैसे ? उन्हें मैनेजर के चेहरे के भाव समझते देर न लगी। उन्होंने पूछा अभी इस मिल का मालिक कहां रहता था। उत्तर था लन्दन में। दूसरा सीधा प्रश्न था इसे अभी तक कौन चलाता था ? अंग्रेज का उत्तर था मैं। उन्होंने कहा अब भी आप ही चलायेंगे। बस, आपका मालिक अब कलकत्ते में ही है। आज से आपके पांच सौ रुपये नौकरी के बढ़ा दिये हैं। अंग्रेज हक्का-बक्का रह गया। उन्होंने कहा, अब भी मिल अवश्य चलेगी। कार्य में प्रगति करने एवं सफलता पाने के लिए आवश्यक है दृढ़ निश्चय एवं सूझबूझ। ❋

आप हमें इस प्रकार भी सहयोग दे सकते हैं।

५०१ रु० भेज कर

जन-ज्ञान मासिक

के आजीवन सदस्य बनिये।

तथा १५१ रु० का उपहार साहित्य

१०१ रु० का अमूल्य ग्रन्थ वैदिक सम्पत्ति और

५० रु० मूल्य का संक्षिप्त महाभारत हिन्दी भाष्य सहित

प्राप्त कीजिये।

२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग

नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

संस्कृत के प्रति उपेक्षा से भारतीयता नहीं रहेगी

— डा. प्रशान्त वेदालंकार

नई शिक्षा नीति में संस्कृत के सम्बन्ध में दो परस्पर विरोधी स्थापनाएं की गई हैं। एक ओर संस्कृत में उच्चस्तरीय शोध की महती आवश्यकता अनुभव की गयी है, उसके लिए शोध संस्थान बनाए जाने की योजना भी बनाई है, पर दूसरी ओर माध्यमिक स्तर पर त्रिभाषा सूत्र लागू करने का प्रावधान करके संस्कृत को पूर्णतया छोड़ दिया गया है। प्रश्न है कि जब छात्र माध्यमिक स्तर पर ही संस्कृत का अध्ययन नहीं करेगा तब उसके लिए संस्कृत का उच्चस्तरीय अध्ययन किस प्रकार सम्भव होगा? वस्तुतः शिक्षा के क्षेत्र में संस्कृत की यह उपेक्षा पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के अन्ध प्रभाव तथा अदूरदर्शी दृष्टिकोण के कारण है।

त्रिभाषा सूत्र बनाते हुए संस्कृत के महत्व का ध्यान नहीं रखा गया। इसे एक क्लासिकल भाषा मानकर ग्रीक, लैटिन के समकक्ष रखा गया है और भारतीय भाषाओं की सामान्य धारा से इसे हटा दिया गया है। नई शिक्षा नीति में त्रिभाषा सूत्र के अनुसार केवल आधुनिक भारतीय भाषाओं के अध्ययन की योजना है, जिस कारण विद्यालयों में इसके अध्ययन को समाप्त करने का अप्रत्यक्ष प्रावधान है।

यदि संस्कृत की इसी प्रकार से उपेक्षा होती रही तो हमारे राष्ट्र को अनेक हानियां उठानी पड़ेंगी। संस्कृत केवल अध्यात्म विद्या का ही भण्डार नहीं है, वरन् यह अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, नीतिशास्त्र, राजतंत्र, शिल्पकला, भौतिकी, रसायन, आयुर्वेद आदि का अक्षय कोश है। दर्शन, ज्योतिष एवं काव्य-शास्त्र का जैसा तात्विक विवेचन इस भाषा में हुआ है वैसा विश्व की किसी भी भाषा में अनुपलब्ध है। इसका साहित्य भी अन्य भाषाओं के साहित्यों की तुलना में अद्वितीय है परवर्ती भाषाओं में सब से अधिक प्राचीन होने के कारण भाषा-विज्ञान की दृष्टि से इसका महत्त्व विश्व की प्रत्येक भाषा से अधिक है, परिणामतः विश्व का प्रत्येक विश्वविद्यालय इसके अध्ययन-अध्यापन की विशेष व्यवस्था कर रहा है। पाणिनि ने इस भाषा का व्याकरण सूत्र-रूप में जितनी वैज्ञानिक पद्धति से प्रस्तुत किया है वह विश्व की

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हर भाषा के लिए अनुकरणीय है। संस्कृत की उपेक्षा का अर्थ है अपने गौरव पूर्ण इतिहास एवं वसुधैव कुटुम्बकम् के सन्देश पर आधारित संस्कृति को मटियामेट कर देना। अपने इतिहास और अपनी संस्कृति के नष्ट होने पर इस देश को भारत कहने का कोई अर्थ नहीं होगा।

संस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जिसका अध्ययन-अध्यापन परम्परा से इस राष्ट्र के प्रत्येक प्रदेश में स्वतः ही हो रहा है। संस्कृत ही एक ऐसी कड़ी है जो इस देश के एक प्रदेश को दूसरे प्रदेश के साथ सम्बद्ध कर रही है, क्योंकि इसके विद्वान् सर्वत्र उपलब्ध हो जाते हैं। संस्कृत ही एक ऐसा माध्यम है जो हमारे संस्कारों, धार्मिक आस्थाओं, रीतिरिवाजों एवं परम्पराओं में समान रूप से प्रत्येक प्रदेश में प्रयुक्त होता है।

नयी शिक्षा नीति में संस्कृत के प्रति जो उपेक्षा की गयी हैं, उससे जो संकट संस्कृत पर आएगा वैसा न मुस्लिम काल में आया था और न ब्रिटिश काल में। संस्कृत के प्रति उपेक्षा से राष्ट्र की एकता खण्डित हो जाएगी। राष्ट्रवृक्ष समूल छिन्न-भिन्न होकर गिर पड़ेगा।

मैं राष्ट्र की भाषा-समस्या के प्रसंग में संस्कृत का पक्ष केवल संस्कृत के उपर्युक्त महत्त्व के कारण नहीं ले रहा, वरन् भाषाविज्ञान का एक विद्यार्थी होने के करण मैं यह समझता हूँ कि संस्कृत के बिना भारतीय भाषाओं को महान् हानि होगी। आज हमारी भाषाओं को विभिन्न विषयों के पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता है। इन पारिभाषिक शब्दों की पूर्ति संस्कृत साहित्य के महान् शब्द भंडार से ही सम्भव है। संस्कृत का शब्द भंडार इतना विस्तृत है कि उससे गणित, विज्ञान भूगोल, इतिहास, दर्शन, राजनीति, अर्थशास्त्र, विधि आदि अनेक विषयों के शब्दों की प्राप्ति हो सकती हैं। संस्कृत में विरचित स्मृति ग्रन्थ, रामायण, महाभारत, कौटिल्य अर्थशास्त्र, शुक्रनीति, विदुरनीति आदि में सामाजिक विज्ञान से सम्बद्ध प्रत्येक शब्द विद्यमान है। इसके अतिरिक्त भारत संघ में चालू प्रत्येक भाषा संस्कृत की पुत्री है अथवा उसका इससे घनिष्ठ सम्बन्ध है। पुत्रियों को मां से पृथक् करने का प्रयत्न अपने आप में ही निन्द्य है। यहां की भाषाओं में अधिकतर शब्द संस्कृत के हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के हैं। संस्कृत एक ऐसा सूत्र हैं जो हर भाषा में समान रूप में पिरोया हुआ है। नए शब्दों के निर्माण के लिए प्रत्येक भाषा ने संस्कृत का आधार ही ग्रहण किया है।

सुनीतिकुमार चटर्जी के अनुसार बंगला के ९६ प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं। इनमें से ७५ प्रतिशत शब्द ऐसे हैं जो हिन्दी में भी प्रचलित हैं। यही स्थिति असमिया की है। इसी प्रकार मराठी व उड़िया में भी ९५-९६ प्रतिशत, गुजराती में ९३ प्रतिशत तथा पंजाबी में ९० प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं। कश्मीरी में भी कम से कम ८० प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं।

डा० टेलर, डा० गुण्डर्ट, प्रो० राइस डेविड्स तथा ताम्बी पिल्ले एवं श्री अय्यंगार आदि के अनुसार दक्षिण भारत की भाषाओं का संस्कृत से सम्बन्ध नहीं है। किन्तु वस्तुतः यह सत्य नहीं है। इस प्रकार की मिथ्या धारणायें उत्तर तथा दक्षिण के लोगों तथा आर्यों और द्राविण अथवा ब्राह्मणों और ब्राह्मणेतरों में परस्पर विद्वेष उत्पन्न करने के लिए प्रचारित की गयी हैं। इन भाषाओं की भी संस्कृत के साथ अद्भुत समानता है। मलयालम में ८० प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं। उनमें गीत, भूमि, दृढ़, मति, कर्मयोगी, प्रसव, हिमनद, विन्ध्याचल, मध्यदेश, सम, शील, सिंह आदि अनेक संस्कृत के ही शब्द हैं। तेलगू में ७५ प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं। तेलगू में पानी के लिए नीरु, अन्न के लिए अन्नमु, भोजन के लिए भोजनमु, जल्दी के लिए त्वरबत अथवा शीघ्रमुगा, साफ के लिए स्वच्छुम, कपड़े के लिए वस्त्रुम, पुस्तक के लिए पुस्तकंमु, दिए के लिए दीपमु आदि का प्रयोग हो रहा है। कन्नड़ में ६५ प्रतिशत शब्द संस्कृत के ही हैं। दुःख निवृत्ति, श्रवण, मनन, निदिध्यासन, साधना उपदेशानुसार आदि इसमें शुद्ध संस्कृत शब्द हैं। मैंने स्वयं आकाशवाणी से कन्नड़ भाषा सुनी है तथा कन्नड़ के नाटक देखे हैं। मुझे कन्नड़ भाषा के समझने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

तमिल का सम्बन्ध संस्कृत से बिलकुल नहीं माना जाता। किन्तु यथार्थ स्थिति इसके विपरीत है। इसमें भी नगर, शिव, मनुष्य, अतिशीघ्रम्, विवाह, प्रजा, दम्पति, संतोष आदि संस्कृत के शब्द हैं। इसी प्रकार ग्रामम्,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पट्टणम् (पत्तनम्), जलम्, हृदय, पुस्तकम्, आदिहमु (अधिकम्), पशु, मात्रम, वार्त (वार्ता), शुद्धम् पच्चिरम (पवित्रम्) पलम् (फलम्), पाठम् (पाठ) आदि अनेक संस्कृत शब्दों का प्रयोग तमिल में हो रहा है। वस्तुतः तमिल में पाँचों वर्णों(कवर्गादि) के प्रथम चार वर्णों (क, ख, ग, घ) आदि के स्थान पर केवल प्रथम वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का ही प्रयोग होता है जिसके कारण अपभ्रंश को समझने में कठिनाई होती है। वस्तुतः तमिल में भी ५० प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं।

इस प्रकार हमने देखा कि भारतीय भाषाओं का संस्कृत से घनिष्ठ संबंध है। इन भाषाओं में ध्वनि, शब्द, रूप, अर्थ, वाक्य एवं मुहावरे सभी संस्कृत से आये हैं। साथ ही इन भाषाओं का लेखक विचार भी संस्कृत से ही ग्रहण करता है। साहित्यकार संस्कृत कवियों की कल्पनाओं को ही अपने साहित्य में स्थान देता है। इस देश की एक भी भाषा ऐसी नहीं है जिसका साहित्य रामायण व महाभारत से प्रभावित न हो।

व्यावहारिक दृष्टि से संस्कृत का लाभ यह है कि संस्कृत ही ऐक ऐसा माध्यम है जो एक भाषा को दूसरी भाषा के निकट ला सकता है। जब किसी अन्य भाषी प्रदेश के ग्राम में अंग्रेजी असफल हो जाती है और प्रादेशिक भाषाएं समझ में नहीं आतीं तब संस्कृत का ही कोई शब्द व्यवहार को सुगम बनाने में समर्थ सिद्ध होता है।

यों तो मैं किसी भाषा के स्वरूप को निर्धारित करने के पक्ष में नहीं हूं। भाषाओं का विकास स्वतः होता है और उनका स्वरूप अपने आप निश्चित होता है। किन्तु यदि राज्यभाषा हिन्दी का स्वरूप निर्धारित करना आवश्यक ही हो तो उसे संस्कृत-निष्ठ बनाना होगा। तभी वह सभी प्रदेशों के लोगों के लिए स्वीकार्य होगी। हमारे संविधान के ३५१वें अनुच्छेद में यह व्यवस्था की गई है कि हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाएं अपनी शब्दावली संस्कृत से ही ग्रहण करें। संस्कृत को पाठ्यक्रमों से हटाकर भारत की सभी भाषाओं के लिए हम एक संकट उत्पन्न कर देंगे।

भारतीय भाषाओं को संस्कृत शब्द भण्डार से भर कर सभी भाषाओं के निकट लाया जा सकता है। यदि सभी भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर दी जाए तो सभी भाषाएं सीख लेना कठिन नहीं है।

संस्कृत के उपर्युक्त महत्त्व को देखते हुए भारत के प्रत्येक छात्र के लिए किसी न किसी स्तर पर संस्कृत का अध्ययन अनिवार्य है। इसके लिए एक तो संस्कृत को लोकप्रिय विषय बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। नई शिक्षा नीति में इसकी अनिवार्यता अपेक्षित है। एक विषय के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक भारतीय भाषा के पाठ्यक्रम में उच्चस्तर माध्यमिक कक्षाओं तक ५० अंकों का प्रश्नपत्र संस्कृत का निर्धारित कर देना चाहिए। इससे जहाँ देश की सभी भाषाएं संस्कृत के सम्पर्क से समृद्ध होंगी वहां वे सभी लाभ भी होंगे, जो हमने ऊपर बताए हैं। सच तो यह है कि संस्कृत की उपेक्षा राष्ट्र का कोई प्रदेश स्वीकार नहीं करेगा। ★

डॉ सत्यकेतुजी दिवंगत

सोलह मार्च को गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलाधिपति और इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् व लेखक डाक्टर सत्यकेतुजी विद्यालंकार का हरिद्वार के समीप बहादुराबाद नामक स्थान पर एक सड़क दुर्घटना में देहान्त हो गया। वे गुरुकुल के वर्त्तमान कुलाधिपति प्रो. शेर सिंह, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान डा. धर्मपाल और भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मन्त्रालय के भूतपूर्व अधिकारी श्री सुभाष विद्यालंकार के साथ गुरुकुल जा रहे थे। जिस वैन में ये सब जा रहे थे, उसके ड्राइवर का तो निधन हो गया और ये सब सज्जन घायल हो गये।

डाक्टर सत्यकेतुजी ने सात खंडों में आर्य समाज का इतिहास लिखा है। उनकी लिखी पुस्तकें एम. ए. के कोर्स में हैं। वे बारह वर्ष तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद् के सदस्य रहे। उनका दयानन्द संस्थान के प्रति गहरा सद्भाव था।

जनज्ञान उनकी स्मृति में नतमस्तक है और परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राज्य और राजा क्यों बने ?

—जगदीश विद्यार्थी

प्रलय के पश्चात् जब सृष्टि-रचना आरम्भ हुई, और जब सृष्टि मनुष्य के रहने के योग्य हुई, तब मानव का पदार्पण इस धरा-धाम पर हुआ। वह आदि-मानव-सृष्टि अमैथुनी थी। हम लोगों की तरह उनके कोई सदेह सांसारिक माता-पिता नहीं थे। यही कारण है कि ईश्वर ने उन्हें बालक, अज्ञानी तथा असहाय अवस्था में उत्पन्न नहीं किया। उनके माता-पिता, गुरु और आचार्य सब कुछ ईश्वर ही था। अतः परम कृपालु परमात्मा ने अपने अनन्त सामर्थ्य से सृष्टि के आदि में हजारों युवक-युवतियों को एक साथ उत्पन्न किया, जो यौवन-ज्ञान-सामर्थ्यवान् थे। वे सब आर्य थे। सभी व्यवहारों तथा संसार के पदार्थों का यथावत् ज्ञान रखते थे। उन्हें किसी दूसरे की सहायता की आवश्यकता नहीं थी। सत्त्वातिशय के कारण सभी नर-नारी सुन्दर-गुण-शील-स्वभाव से युक्त थे। योगाभ्यास द्वारा ईश्वर से अति सामीप्य होने के कारण धर्म, न्याय, दया, प्रेम, सहानुभूति आदि सद्गुणों का पालन उनका स्वभाव था। शान्तिमय, भोगमुक्त, योगयुक्त, श्रेष्ठ जीवन था। मानव के आदर्श रूप थे। सब एक ईश्वर के आर्य-पुत्र थे। दूसरी कोई जाति नहीं थी, सबकी एक ही मातृ-भाषा संस्कृत थी, एक सत्य-सनातन ईश्वरोक्त वैदिक धर्म था, सभ्यता-संस्कृति, आचार-विचार, आहार-व्यवहार सब एक-जैसा था। इस एकता और समानता के कारण सब सन्तुष्ट तथा सुखी थे। अहिंसा उनके शरीर का उपाङ्ग था। कोई किसी को सताता नहीं था, सब परस्पर प्रेम से रहते थे। अभिप्राय यह है कि 'न राज्यं न च राजासीन्न दण्डो न च दाण्डिकः। धर्मेणैव प्रजाः सर्वाः रक्षन्ति स्म परस्परम्।। अर्थात् उस समय कोई राज्य नहीं था, न कोई राजा था, ज्ञानी-योगाभ्यासी-धर्मात्मा होने से सब एक-दूसरे की परस्पर रक्षा करते थे। सबका एक-दूसरे पर विश्वास था। कन्द-मूल-फल खाते थे, प्रकृति की गोद में रहते थे, ईश्वर के साथ अधिक सम्बन्ध रखते थे, पाप नहीं करते थे, अतः भय भी नहीं था इसलिए आनन्द और मस्ती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का जीवन जीते थे। धरती स्वर्ग थी लोग मोक्ष के समान सुखानन्द पाते थे। यानी वह युग स्वर्णयुग था।

किन्तु परिवर्त्तन के शाश्वत नियम के सामने संसार में किसकी अवस्था सदा एक-सी बनी रह सकी है, जो रहती। कालक्रम से गुण-वृत्ति-विरोध होने के कारण आर्य परिवारों में ही कुछ कलुषित-पापात्माएँ जन्म लेने लगीं, जो कालान्तर में सब दुःखों और बुराइयों की जड़ सिद्ध हुईं। ये प्रारम्भ के कुछ भिन्न विचार के थे। धीरे-धीरे अन्तर बढ़ता गया। एक-दूसरे से पृथक् होते गये और आपस की दूरियाँ तथा खाइयाँ बढ़ती गईं। इनमें तमोगुण प्रधान था अतः इनका स्वभाव आर्यों से भिन्न, ज्ञान, दया, प्रेम और सहानुभूति से रहित, मूढ़, क्रूर, द्वेषी था। हिंसक था। इनकी रुचि ज्ञान और योग में नहीं थी, स्वभावानुसार स्वेच्छाचरण करने लगे। सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने लगे। वेद और धर्म का मजाक उड़ाने लगे। योगाभ्यास, यज्ञादि धार्मिक कृत्यों को ढोंग समझकर त्याग दिया। सामाजिक कार्यों में सहयोग के बदले दबी आवाज में निन्दा करनी आरम्भ कर दी। उत्तरोत्तर पाशविक वृत्तियाँ बढ़ती देख सबकी सन्तानें बिगड़ न जाएँ इस भय से सभी आर्य सज्जनों ने मिलकर विचार किया कि इन्हें समाज से ही बहिष्कृत कर दिया जाये ताकि अपने को समाज से अलग पाकर ये अपमान अनुभव कर सकें तथा पाप करने का फल पाकर पुनः अपना सुधार कर सकें। सभा में यह निर्णय किया गया कि जब ये अपने दुष्कृत्यों का पश्चात्ताप कर शुद्ध होकर नियमानुसार चलने की प्रतिज्ञा करें तो उन्हें पुनः समाज में सम्मिलित कर लिया जाएगा। किन्तु सम्मिलित करने की सोची बात सत्य न निकली और बहिष्कार का सिलसिला जारी रहा। फल यह हुआ कि इन्होंने पृथक् अपना परिवार और समाज बना लिया। अज्ञानता के कारण इनकी भाषा भी अपभ्रंशित होकर भिन्न हो गई। प्रतिकार की भावना बढ़ने लगी, इस कारण ये सब कार्य आर्यों के विरुद्ध करने लगे। संगठित होकर आर्यों पर अत्याचार करने लगे। दिन-दहाड़े चोरी-जारी, लूटमार होने लगी। कन्याओं का अपहरण होने लगा। हिंसा और आगजनी भड़क उठी, सर्वत्र आतंक फैल गया। घर से बाहर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निकलना भी मुश्किल कर दिया। अभक्ष्य-अपेय मद्य-मांसादि का सेवन करने लगे।

इस प्रकार एक नई आर्येतजाति का जन्म हुआ, जिसकी भाषा, धर्म, सभ्यता-संस्कृति, आहार-व्यवहार सब आर्यों से भिन्न (विपरीत) होने के कारण सब आर्य उन्हें 'दस्यु' कहने लगे। उक्त अत्याचारों से पीड़ित होकर तथा वैदिक संस्कृति को खतरे में देखकर आर्य चिन्तित हुए। विचार करने लगे कि अब क्या हो ? जिन्हें सुधार के लिए समाज से बहिष्कृत किया था, वे तो पूरे बिगड़कर अत्यन्त घातक सिद्ध हुए हैं। अब तो ये अस्त्र-शस्त्र तथा संगठन से शक्तिशाली हो गये हैं। इन्हें दण्ड देकर सुधारने की शक्ति तो किसी के पास है नहीं, न ये वाणी मात्र से सुनने ही वाले हैं। अतः सब मिलकर एक ऐसी शक्ति पैदा करें जो बल और ऐश्वर्य में इन्द्र के समान तथा सूर्य के समान तेजस्वी तथा पराक्रमी हो, जो इन पापियों, दुराचारियों को दण्ड देकर शान्ति स्थापित कर सके। वेद और धर्म को लुप्त होने से बचाये। धर्म-ध्वंसकों को दण्डित कर उनका ध्वंस करने में समर्थ हो। क्योंकि 'दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड वाभिरक्षति। दण्डः सुप्तेषु जागर्त्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः ॥' अर्थात् दण्ड से धर्म की रक्षा होती है। अतः दण्ड देना धर्म है। इस प्रकार 'राज्य' और 'राजा' के निर्माणार्थ दूर-दूर तक घोषणा करके बड़ी सभा आयोजित की गई। आर्यों में से जो सबसे अधिक योग्य तथा प्रभावशाली धार्मिक विद्वान् था, उसे आर्यों तथा धर्म की रक्षार्थ सर्वसम्मति से राजा घोषित किया गया। इसी प्रकार एक पौराणिक कथा आती है कि जब जनता दुष्टों के अत्याचार से व्याकुल हो गई तो सब मिल के रक्षा के उपाय या रक्षक मांगने ब्रह्माजी के पास गये तथा ब्रह्माजी के अनुग्रह से उन्हें इन्द्र, वरुण, सूर्य, चन्द्र, कुबेर के सम गुणों से युक्त राजा प्राप्त हुआ। इसके बाद जनता ने चैन की सांस ली।

अभिप्राय यह है कि संसार में सदा से दो प्रकार के मनुष्य रहते आए हैं, जिन्हें हम आर्य-अनार्य, पापात्मा-पुण्यात्मा, धर्मी-अधर्मी कुछ भी कह सकते हैं। इनमें प्रथम जो उत्कृष्ट कोटि के आर्य हैं, सो तो प्रभावतः वेदानुसार आच-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रण करते ही हैं। उनके लिए राज्य और राजा की कोई आवश्यकता नहीं होती है। किन्तु इनके विरुद्ध विद्याहीन आर्येतर दस्यु होते हैं, जो समाज के नियम और व्यवस्था को तोड़ते है तथा अन्यों को भी प्रेरित करते हैं। गरीबों को सताते है एवं धर्म की निन्दा करते हैं। जो किसी की बात नहीं सुनते, ऐसे उद्दण्ड-उच्छृंखल लोगों के अत्याचार से सज्जनों की रक्षा कैसे की जाय तथा उन्हें, धर्म के मार्ग पर कैसे लाया जाय। इन्हें बलात् धर्माचरण कराने के उद्देश्य से राज्य और राजा को जन्म दिया गया। जैसे आदि काल में एक जाति एक धर्म, एक भाषा, एक सभ्यता-संस्कृति, एक आहार विहार के कारण लोग शान्त, संतुष्ट और सुखी थे। वैसी ही एकता लाने के उद्देश्य से राष्ट्रपति का निर्माण हुआ। और यह सब वही कर सकता है जो आर्य हो, इसलिये आर्य ही सर्वप्रथम राज्य एवं राजा के आविष्कारक हुए जो अनार्यों पर शासन कर एकता तथा शान्ति बनाये रखें।

किन्तु आज हम देख रहे हैं, कि सर्वत्र अनार्य-म्लेच्छों का जोर है। जातियाँ और बोलियाँ तो गिनती में नहीं आती हैं। विकृत असंस्कृत म्लेच्छ भाषाएँ बोली जा रही हैं। आसुरी सभ्यता का बोलबाला है। वेद और वैदिक धर्म लुप्तप्राय हो गया है। राक्षस मत बढ़ते जा रहे हैं। आर्यों पर अत्याचार हो रहा है। पिशाचों का शासन है। हिंसा, युद्ध, लूट-मार का ताण्डव हो रहा है। घूसखोरी और अन्याय अपूर्व स्थिति में हैं। सामाजिक बुराइयाँ जड़ जमा चुकीहै। युवतियाँ दहेज के कारण जलाई जा रही हैं। नर-बलि और बाल हत्याएँ हो रही हैं। गौओं का शाप इस देश को बढ़ने नहीं दे रहा है। पारिवारिक सम्बन्ध भ्रष्ट हो चुके हैं। भाई-बहन में अवैध सम्बन्ध, पिता-पुत्री में निन्द्य व्यवहार, पिता पुत्र की हत्या कर रहा है, पुत्र पिता की हत्या कर रहा है। पति और पत्नी एक-दूसरे को कत्ल कर रहे हैं। माँ सन्तानों के साथ जल-मर रही है। कौन-सी पिशाच वृत्ति शेष है जिस पर हम गर्व करें?

सम्पूर्ण विश्व खतरे में है, आर्य जाति खतरे में है, संस्कृत भाषा खतरे में है, भारत देश खतरे में है, भारतीय आर्य खतरे में हैं, भारतीय सभ्यता खतरे में है, भारतीय संस्कृति खतरे में है। आज का बूढ़ा खतरे में है, युवा खतरे में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है, शिशु खतरे में है, किशोर खतरे में है, प्रत्येक कर्मचारी खतरे में है, पशु-पक्षी खतरे में है यानी आज कल प्रत्येक प्राणी खतरे में है और इन सबको तारने वाले 'आर्य' मोह में फंसे हैं, ये भूले हुए हैं सुधार के उस सूत्र को, जिसे इन्होंने पहले-पहल अपनाया था। जिस शासन-सूत्र को अपना कर सृष्टि के आरम्भ से लेकर पांच हजार वर्ष पूर्व पर्यन्त जाति, धर्म, भाषा, सभ्यता तथा संस्कृति में एकता कायम रखकर विश्व शान्ति-स्थापित की थी, उसकी अवहेलना कर रहे हैं। राजनीति रूप लगाम को छोड़कर प्रजा-रूप दुष्ट घोड़ों को बश में करना चाहते हैं। ये भूल चुके हैं कि "उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये" केवल उपदेश से मूढ़-हठ धर्मी नहीं सुधर सकते अपितु विष-शमन के लिए दूध पिलाये सर्प की भांति अधिक विषैले हो रहे हैं। ये भूल चुके हैं कि जब तक आर्य राजा रहे तबतक वैदिक राज्य रहा, पुनश्च जितने भी मत सम्प्रदाय तथा विचारधाराएँ उत्पन्न हुई सब शासन की बदौलत ही फैल सकी हैं। जिस धर्म-रूप पुरुष की सेवा के लिए हमने राजनीतिक रूप पतिव्रता नारी को नियुक्त किया था आज उसीको त्याग कर वेश्या कहने लगे हैं। क्या इसी के शाप से हमारी दुर्गति हो रही है? क्या यह ही पाप हमारी दुर्दशा का मुख्य कारण नहीं है? क्या इसे पुनः सम्मान अपनाए बगैर पाप-शाप और सन्ताप से मुक्त हो सकते हैं। पश्चात्ताप का क्या और कोई उपाय है? धर्म की सेवा का क्या इससे भी कोई उत्तम उपाय है? कोई नहीं

अतः भारत हितैषी आर्य पुरुषो। धुरन्धर विद्वानों तथा बुद्धिमानो। आर्यावर्त के नवयुवको! उठो। अपने देश धर्म जाति राष्ट्र और विश्व के रक्षार्थ कल्याणार्थ पुरुषों के हाथ में पड़ी राजनीति-देवी को फिर से अपने घर प्रतिष्ठित करें। हमने ही इसे जन्म दिया है पाल-पोष कर बड़ा किया है, इसमें गुण और दोष भी हमारे कारण हैं। हमसे विगड़ी है अतः हमें ही सुधारना भी होगा। आर्यों तैयार हो जाओ! राजनीति का शस्त्र लेकर सब बुराइयों का शिकार करने के लिए। विश्व-शान्ति के लिए, दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने के लिए, वेदाज्ञाओं के प्रचार के लिए, वैदिक धर्म

(शेष पृष्ठ ६७ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन्दिरों पर बनी ये मस्जिदें

—अरुण शौरी

मुद्दों को छिपाना या उनसे बचना हमारी राष्ट्रीय आदत बन गई है। इसके परिणाम भी भयावह होते हैं। सर्वप्रथम मैं कुछ पृष्ठभूमि बताना अनिवार्य समझता हूं।

लखनऊ का नदवातुल उलमा भारत में इस्लामी अध्ययन के प्रमुख केन्द्रों में से एक है। इसकी स्थापना १८९४ में हुई थी। आज देवबन्द के दारुल उलूम के बाद दूसरे स्थान पर यही संस्थान है। सरकारी प्रकाशन 'भारत में इस्लामी अध्ययन के केन्द्र' (centres of Islamic learning in India) में स्मरण कराया गया है कि किस प्रकार इस संस्थान के संस्थापकों ने "ऐसे सक्षम विद्वानों को तैयार करने का उद्देश्य निर्धारित किया था जो प्रभावशाली ढंग से आधुनिक विश्व के सामने इस्लाम की सही छवि प्रस्तुत कर सकें"। इस पुस्तक में यह भी कहा गया है कि 'अपने स्वीकृत लक्ष्य को पूरा करने के लिए शैक्षणिक सुधार के रूप में इसने एक आदर्श शैक्षणिक संस्थान की स्थापना करने का निर्णय लिया, जिसका उद्देश्य न सिर्फ मजहबी और सांसारिक विज्ञानों की शिक्षा देना बल्कि तकनीकी प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराना था।' सरकार द्वारा प्रकाशित उक्त पुस्तक में बताया गया है कि नदवातुल उलमा आज किस स्थिति में है। इसके पास अपना कालेज है, बढ़िया भवन में विशाल एवं सम्पन्न पुस्तकालय है और अनुसंधान व प्रकाशन विभाग है। यह संस्थान इस्लामी विद्या में सर्वाधिक अग्रणी संस्थाओं में से है।

पुस्तक के अनुसार 'स्वतंत्र अनुसंधान पर जोर देना' इस संस्थान की विशिष्टता है। यह भी कहा गया है कि मुख्य भवन के केन्द्रीय कक्ष तथा उसके साथ लगे हुए कमरों में स्थित पुस्तकालय में ७५ हजार से अधिक पुस्तकें हैं, जिनमें से लगभग तीन हजार पुस्तकें हस्तलिखित हैं जो मुख्यतः अरबी में हैं और फारसी, उर्दू, अंग्रेजी आदि में भी हैं। यह इस महाद्वीप के सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालयों में से एक है। यह विवरण दस वर्ष पूर्व लिखा गया था। अब इस पुस्तकालय में लगभग १ लाख २५ हजार पुस्तकें हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आजकल इस संस्थान के प्रमुख मौलाना अब्दुल हसन अली नदवी हैं। अली मियां के नाम से विख्यात मौलाना नदवी जन-सामान्य, सरकारी क्षेत्रों, विद्वानों और विदेशी सरकारों के बीच निर्विवाद रूप से सर्वाधिक प्रभावशाली मुस्लिम अध्यापक और प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

अली मियां कट्टरपंथी संगठन जमात-ए-इस्लामी के संस्थापकों में से एक हैं किन्तु मौलाना मौदूदी के साथ मतभेदों के कारण उन्होंने कुछ दिन बाद उससे नाता तोड़ लिया था। आजकल वे मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के अध्यक्ष हैं। विश्व इस्लामी संस्था राब्ता आलम-ए-इस्लामी के संस्थापक सदस्य भी हैं। इसका मुख्यालय मक्का में है और यह संस्था अन्य बातों के अलावा विश्व भर के विभिन्न इस्लामी संगठनों को दी जाने वाली धन राशि भी तय करती है।

१९६१ से दारुल उलूम नदवातुल-उलमा के नाजिम या प्राचार्य भी हैं। नदवातुल-उलमा को अली मियां की प्रतिष्ठा, विद्वत्ता और राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का महत्त्वपूर्ण लाभ मिल रहा है। राजीव गांधी, विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा चन्द्रशेखर सरीखे राजनेता उनसे मिलने को उत्सुक रहते हैं।

अली मियां ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें बहुचर्चित पुस्तक है 'इंसानी दुनिया पर मुसलमानों के उरूजो-जवाल का असर।' वे इस्लमी कानून, न्याय व्यवस्था, अध्यात्म और विशेष रूप से इतिहास के अधिकृत प्रवक्ता माने जाते हैं। भारत की मुस्लिम राजनीति पर उनका गहरा प्रभाव है।

उनके पिता और उनकी पुस्तक

अली मियां के पिता मौलाना हकीम सईद अब्दुल हई भी उनके समान प्रतिष्ठित और प्रभावशाली विद्वान् थे। नदवातुल उलमा के पहले नाजिम (प्राचार्य) मौलाना मुहम्मद मुंगेरी ने अब्दुल हई को मददगार नाजिम (सहायक प्राचार्य) चुना था। मौलाना मुंगेरी वही विद्वान् थे जिनकी पहल पर १८९२ में उस पहली बैठक का आयोजन हुआ था, जिसने बाद में नदवातुल उलमा की स्थापना का रास्ता खोला।

अब्दुल हुई मददगार नाजिम के रूप में जुलाई १९१५ तक कार्यरत रहे। इसके बाद उन्हें नाजिम बना दिया गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी विद्वत्ता और संस्थान व इस्लाम की सेवाओं के कारण १९२० में उन्हें पुनः नाजिम नियुक्त किया गया। वे इस पद पर अपनी मृत्युपर्यन्त फरवरी १९२३ तक आसीन रहे। उन्होंने भी तमाम पुस्तकें लिखीं। उनकी पुस्तकों में वह बृहत् कोश भी शामिल है जिसमें उन हजारों मुसलमानों का विवरण है जिन्होंने भारत में इस्लाम की सेवा, विशेषकर इस्लाम में धर्म परिवर्तन की संख्याओं की दृष्टि से की। इस पुस्तक का अभी हाल में हैदराबाद से पुनः प्रकाशन किया गया है।

कुछ कार्य के दौरान मैंने उनकी एक पुस्तक के संदर्भ देखे और उसकी तलाश शुरू कर दी।

ऐतिहासिक दस्तावेज

लखनऊ नदवातुल उलमा के प्रकाशन विभाग मजलिस तहकीका नाशियात इस्लाम द्वारा प्रकाशित उस पुस्तक की प्रकाशन संख्या ६६ है।

उस पुस्तक का अरबी संस्करण १९७२ में हैदराबाद से और उर्दू संस्करण १९७३ में लखनऊ से प्रकाशित किया गया था। अंग्रेजी संस्करण १९७७ में प्रकाशित हुआ। मैं उद्धारण के लिए पुस्तक के उर्दू संस्करण का उपयोग करूंगा।

मौलाना अब्दुल हसन अली नदवी ने जो अली मियां स्वयं हैं, उसकी भूमिका लिखी है। यह लगभग काव्यात्मक भूमिका है।

यह स्मरण करते हुए कि किस प्रकार मौलाना को एक ही विषय पर हजारों पृष्ट पढ़ने पड़ते थे, अली मियां लिखते हैं कि सिर्फ वही जिसने इस विषय पर कार्य किया हो, अध्ययन के उस प्रयास की प्रशंसा कर सकता है।

स्पष्टीकरण

जब इतना महत्त्वपूर्ण लेखक हो, इतनी अधिक महान् उसकी कृति हो तो वह कृति कट्टरपंथियों की मार्गदर्शक क्यों नहीं है ?

इस सवाल का जवाब उसी पुस्तक का अध्याय 'हिन्दुस्तान की मस्जिदें' है। इस अध्याय में करीब १७ पृष्ठ हैं जो बहुत साधारण ढंग से लिखे गए हैं। प्रमुख मस्जिदों में से कुछ के बारे में तथ्य सर्वविदित हैं। वे बिल्कुल प्रारम्भिक हैं और मात्र कुछ पंक्तियों में लिखे गए है। वे किसी का ध्यान आकर्षित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं करते लेकिन फिर भी हम देखेंगे कि उनके बारे में, आंखें चुराने का भाव है। क्यों ? सात मस्जिदों का विवरण इसका उत्तर दे देगा।

मौलाना के रिकार्ड के अनुसार मुस्लिम श्रद्धालुओं ने तमाम मस्जिदें बनाईं। उन्होंने बहुत बड़ी धन राशि और श्रम शक्ति उनमें लगाई जिससे वे कभी नष्ट न हों। हर शहर, कस्बा और एक गांव एक मस्जिद की पहुंच में आ गया। वे कहते हैं कि वे कुछ बहुचर्चित मस्जिदों के बारे में तथ्य देंगे।

सात मस्जिदो के बारे में उन्होंने जो कुछ लिखा वह इस प्रकार है—

मेरी खोजबीन के अनुसार दिल्ली की पहली मस्जिद कुल्वत अल इस्लाम या कुव्वत अल इस्लाम है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह मस्जिद कुतुबुद्दीन ऐबक ने पृथ्वीराज द्वारा बनाए गए मन्दिर को तोड़कर ५८७ हिजरी में बनवाई थी और मन्दिर के अवशेष (ठीक मस्जिद के बाहर) छोड़ दिए थे। और जब वह ५९२ हिजरी में गजनी वापस आया तो शहाबुद्दीन गौरी के आदेश से उत्कृष्ट लाल पत्थर से विशालकाय मस्जिद का निर्माण शुरू कराया और मन्दिर के बहुत-से अवशेष मस्जिद में प्रयोग किए। इसके बाद जब शमसुद्दीन अल्तमश बादशाह बना, उसने इसके दोनों तरफ पत्थर की मेहराबें बनवाईं और इसके एक तरफ सबसे ऊंची वह मीनार जिसकी खूबसूरती और मजबूती का सानी दुनिया में नहीं है।

जौनपुर की मस्जिद

यह मस्जिद जौनपुर के सुल्तान इब्राहीम शरकी ने तराशे हुए पत्थरों से बनवाई थी। मूलतः यह एक हिन्दू मन्दिर था जिसे ध्वस्त करके उसने मस्जिद बनवाई थी। यह अटाला मस्जिद के नाम से विख्यात है। सुल्तान इसमें जुम्मे और ईद की नमाज अदा करता था और काजी शहाबुद्दीन खुतबा पढ़ते थे।

कन्नौज की मस्जिद

यह मस्जिद कन्नौज के किले के भीतर ऊंचे स्थान पर खड़ी है। यह सर्वविदित है कि इसका निर्माण यहां बने हुए कुछ हिन्दू मन्दिरों की नींव पर किया गया था। यह बहुत खूबसूरत मस्जिद है। कहा जाता है कि इसका निर्माण ८०९ हिजरी में इब्राहीम शरकी ने कराया था। जैसा गरवत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निगार में (दर्ज) है।

इटावा की जाम मस्जिद

यह मस्जिद इटावा में यमुना के तट पर बनी है। यहां पर एक हिन्दू मन्दिर था जिसके स्थान पर यह मस्जिद बनवाई गई। यह कन्नौज की मस्जिद की तर्ज पर बनी है। शायद यह शरकी सुल्तानों के कीर्ति स्तम्भों में से एक है।

अयोध्या की बाबरी मस्जिद

यह मस्जिद बाबर द्वारा अयोध्या में बनवाई गई, जिसे हिन्दू रामचन्द्रजी का जन्मस्थान कहते हैं। उनकी पत्नी सीता के बारे में एक कथा बहुत विख्यात है। कहा जाता है कि यहां पर सीताजी का एक मन्दिर था जिसमें सीताजी रहती थीं और अपने पति के लिए भोजन बनाती थीं। ठीक उसी जगह पर बाबर ने ९६३ हिजरी में यह मस्जिद बनवाई।

आलमगीर की मस्जिदें

यह कहा जाता है कि विश्वेश्वर मन्दिर के स्थान पर बनारस में आलमगीर (औरंगजेब) ने यह मस्जिद बनवाई थी। यह मन्दिर बहुत ऊंचा और हिन्दुओं के लिए बहुत पवित्र था। ठीक उसी जगह और उन्हीं पत्थरों से उसने ऊंची मस्जिद बनवाई और उसके प्राचीन पत्थर मस्जिद की दीवारों पर जड़ दिए गए। यह हिन्दुस्तान की विख्यात मस्जिदों में से एक है। बनारस की दूसरी मस्जिद गंगा के तट पर है जिसका निर्माण आलमगीर ने तराशे हुए पत्थरों से कराया था। वह भी हिन्दुस्तान की विख्यात मस्जिद है। इसमें २८ मीनारें हैं। हर एक की ऊंचाई २३८ फुट है। यह गंगा के तट पर है और इसकी बुनियाद पानी की गहराई तक है।

आलमगीर ने मथुरा में भी एक मस्जिद बनवाई थी। यह कहा जाता है कि यह मस्जिद गोविन्द देवजी के मन्दिर के स्थान पर बनाई गई, जो (मन्दिर) बहुत मजबूत, खूबसूरत और उत्कृष्ट था।

"यह कहा जाता है"

लेकिन मौलाना तथ्यों की पुष्टि नहीं करते। उन्होंने तो सिर्फ वही लिखा है जो विश्वास किया जाता है। उन्होंने बार बार 'यह कहा जाता है' लिखा है।

ऐसा लगता है कि 'यह कहा जाता है' मौलाना का तकिया कलाम है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उदाहरण के लिए जब वे कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा निर्मित कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद के बारे में लिखते हैं, वे तकिया कलाम 'यह कहा जाता है' इस्तेमाल करते है।

यदि तथ्यों के बारे में सन्देह था तो अली मियां जैसे महत्त्वपूर्ण और प्रतिबद्ध विद्वान् ने पुस्तक की लम्बी-चौड़ी भूमिका में उस पर टिप्पणी क्यों नहीं की ? बनारस की मस्जिद की तरह मन्दिरों के स्थान पर बनाई गई तमाम मस्जिदें, जिनमें ठीक मन्दिरों के पत्थर प्रयोग में लाए गए और ठीक उसी उद्देश्य के लिए उन्हें तोड़ा गया था, के सन्दर्भ पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण से गायब कर दिए गए। यह कोई संयोगवश नहीं हुआ। वास्तव में सिर्फ वे अंश निकाले ही नहीं गए बल्कि उनका विकल्प भी दिया गया। उदाहरण के लिए कन्नौज की मस्जिद के बारे में उर्दू संस्करण में लिखा है कि 'यह सर्वविदित है कि यह मस्जिद हिन्दू मन्दिर की बुनियाद पर बनाई गई।" लेकिन अंग्रेजी संस्करण में इस बारे में कहा गया है कि "यह व्यापक क्षेत्र में फैली हुई है। यह विश्वास किया जाता है कि यह पहले कोई पुराना खण्डहर किला था।" यह तथ्य कि मन्दिर तोड़कर उनके स्थान पर मस्जिदें बनाई गईं, जग जाहिर है। यह तथ्य कि मन्दिरों के अवशेष, पत्थर और मूर्तियां मस्जिदें बनाने के प्रयोग में लाए गए, कोई नया समाचार नहीं है। यह सोचा गया था कि यही वह तरीका है जिससे अपनी सत्ता प्रकट की जा सकती है। यह भी सोचा गया था कि इसी तरह विजित जनता के दिलों पर चोट की जा सकेगी, क्योंकि उन दिनों मन्दिर सिर्फ पूजा का स्थान नहीं थे बल्कि समाज के जीवन, गतिविधियों और विद्या का केन्द्र थे। ('इण्डियन एक्सप्रेस' से साभार)

उद्धार के लिए। तुम्ही समर्थ हो सब करने में, अतः नही करने से दोष और पाप के भागी भी तुम्हीं हो। तुम्हीं जब चाहते हो सबके दुःख-दर्द को मिटाते हो। इसलिए आज संसार का प्रत्येक प्राणी वैसे ही तुम्हारी ओर टकटकी लगाये है जैसे ग्रीष्म ऋतु में प्रत्येक प्राणी बादल को ओर आशाभरी दृष्टि से देखते हैं। अतएव उसी राजनीति का तीर-धनुष लेकर शत्रुओं के बादल को नष्ट कर सुख की वर्षा तरो। और यह याद रखो—

उज्ज्वल रहा अतीत, भविष्य भी महान है, यदि सम्भल जाये वो, जो वर्तमान है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय राजनीति "माफिया तंत्र" की ओर बढ़ रही है

— डा. विद्यासागर

दिसम्बर १९८८ में कांग्रेस (इं) के विधायक श्री मोहन रंगाराव विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) में तथा जनवरी १९८८ में गाजियाबाद की नगरपालिका के चुनावों में कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्स.) के प्रबल समर्थक श्री सफदर हाशमी की दिनदहाड़े तथाकथित राजनीतिक हत्याओं ने भारत की राज्य व्यवस्था पर एक नये प्रकार से सोचने पर विवश कर दिया है। यद्यपि भारत में राजनीतिक हत्याएं कोई नई बात नहीं हैं और चुनावों की सरगर्मियों में ऐसा होना आम बात है, परन्तु इन दो हत्याओं से आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्र और दिल्ली में जिस प्रकार की प्रतिक्रिया हुई है, वह अनपेक्षित है, जबकि आंध्र प्रदेश में जन-धन की व्यापक हानि हुई है और काफी बड़े क्षेत्र में कई दिन तक जीवन अस्त-व्यस्त रहा है।

हाशमी की हत्या की गूंज दिल्ली में बारहवें अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भी सुनाई दी है। कांग्रेस नेता और मार्क्सवादी व अन्य वामपंथी समर्थक अपने-अपने नेता की हत्या को राजनीतिक हत्या बताते हैं परन्तु सम्बन्धित सरकारें इन्हें आपसी वैर-भाव के कारण हुई हत्याएँ बताती हैं। पिछले स्वतन्त्रता दिवस पर कांग्रेश शासित गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र में एक कांग्रेसी विधायक की हत्या हुई थी। परन्तु तब इस प्रकार की व्यापक प्रतिक्रिया नहीं हुई थी। इसका कारण यह था कि दोनों तत्त्व एक ही दल के थे और शासन भी कांग्रेस का था।

अन्य तंत्रों की अपेक्षा जनतंत्र का मुख्य लाभ यह है कि इसमें प्रत्येक को अपने विचारों को निष्पक्ष रूप से व्यक्त करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिये साथ ही, एक निश्चित अवधि में चुनाव होने के कारण जनमत संगठित कर सरकार बदलने की संभावना और अधिकार भी है। अतः राजनीतिक उद्देश्य से किसी की हत्या करने का प्रश्न ही नहीं उठता। इसके विपरीत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसी स्थिति केवल उन देशों में आती है जहां निरंकुश शासक हों तथा किसी प्रकार के विपक्षी विचारों को व्यक्त करने की स्वतन्त्रता न हो। अफ्रीका व लैटिन अमेरिकी देशों में यह आम बात है और यही कारण है कि इन देशों में बल प्रयोग से ही सत्ता परिवर्तन होता है। साथ ही अपदस्थ हुए नेता के सत्ता में वापिस आने की कोई सम्भावना ही नहीं होती बल्कि उसकी जान के ही लाले पड़ जाते हैं। वास्तव में इन देशों में कोई नहीं जानता कि कब किस का अंत आ जाये।

इन हत्याओं के दो पहलू हैं। यदि ये हत्याएं राजनीति से प्रेरित नहीं हैं और आपसी गुंडागर्दी के कारण हैं तो ऐसे व्यक्तियों को चुनाव के टिकट ही क्यों दिये गए और यदि टिकट दिये भी गए तो वे, चुनाव में कैसे सफल हो गए। इससे यह निष्कर्ष निकालना असंगत न होगा कि असामाजिक तत्त्वों का राजनीति में समावेश हो चुका है तथा समाज की मान्यताएं बदल रही हैं। स्मरण रहे कि गत वर्ष हुए अहमदाबाद नगर निगम के चुनावों में एक व्यक्ति बंदीगृह में रहने के बावजूद ६ या ७ स्थानों से चुनाव जीता था। इसी प्रकार पिछले वर्ष उत्तर प्रदेश के मेरठ नगर निगम के चुनावों में ऐसे दो व्यक्तियों ने चुनाव जीता था, जो पिछले वर्ष जातीय दंगों में सरकार द्वारा बंदी बनाए गए थे। क्या ऐसे प्रत्याशियों का चुनाव में जीतना सरकार को चुनौती है या सरकार के विभिन्न कार्यों के प्रति अविश्वास व्यक्त करना?

सामान्यत: सभी राजनीतिक दल शांति व उचित उपायों की बात करते हैं। परन्तु व्यावहारिक रूप में ऐसा नहीं है। भारतीय मार्क्सवादी पार्टी व उसके अन्य सहयोगी वामपंथी दल, जो केरल व पश्चिमी बंगाल में सत्ता में हैं, अपने लक्ष्यों की पूर्ति के लिए निरन्तर हिंसा का सहारा लेते रहे हैं। मार्क्सवादी पार्टी के महामंत्री श्री ई. एम. एस नम्बूदिरीपाद के विरुद्ध इस प्रकार के आरोप बहुधा लगाए जाते रहे हैं। परन्तु सब से विशिष्ट बात यह है कि इनके अधिकारी इस प्रकार की हत्याओं को उचित ठहराते हैं तथा सत्ता का भी दुरुपयोग करते हैं।

स्वतन्त्र भारत की विगत ४० वर्षों की राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेपण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करने से स्पष्ट हो जाता है कि जैसे-जैसे राज्य तंत्र का शिकंजा देश की व्यवस्था पर ढीला होता जाता है, शासक व अन्य राजनीतिक दल अपनी ध्येय पूर्ति के लिए असामाजिक तत्त्वों का सहारा लेने लगते हैं। दूसरी ओर राजनीतिक प्रभाव के कारण असामाजिक तत्त्व समाज में धिक्कारे जाने के स्थान पर प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। यह स्थिति एक ऐसी समान्तर व्यवस्था को जन्म देती है जो देश के लिए अन्ततः घातक सिद्ध होती है। यह समान्तर व्यवस्था "काले धन" की समान्तर व्यवस्था के समान हैं जो सारे शासनतन्त्र को धीरे-धीरे खोखला कर माफिया राज को जन्म दे रही है। इनके सामने सत्ता प्राप्ति ही सब कुछ है; शेष बातें गौण हैं।

हत्या की राजनीति की वर्तमान व्यवस्था का आरम्भ १९७५ में श्री ललितनारायण मिश्र की हत्या से आरम्भ हुआ कहा जा सकता है। इसके बाद श्रीमती इंदिरा गांधी के चुनाव को इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा अवैध ठहराये जाने पर एक नयी व्यवस्था ने जन्म लिया। शासन के नियमों को चुनौती देने के लिए ऐसे तत्त्वों का सहारा लिया गया जो अर्ध-शिक्षित व अपराधी प्रवृत्ति के थे। श्री संजय गांधी ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए सारे तन्त्र को तहस-नहस कर दिया। भारत की तथा कथित "लौह नौकरशाही" लड़खड़ा गई और वह सभी उचित अनुचित आदेशों का पालन करने लगी। इसकी परिणति १९७७ में श्रीमती इंदिरा गांधी व संजय गांधी के चुनाव हारने पर हुई। अब तक जो तत्त्व बाहर रहकर अपने उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिए मनमानी करते थे, अब वे शासन तन्त्र के अभिन्न अंग बन गए। श्रीमती इन्दिरा गांधी की शासन में वापसी के बाद इन तत्त्वों का जो नंगा नाच हुआ है वह अवर्णनीय है। पांडे-बन्धुओं द्वारा विमान का अपहरण और उसे राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित ठहराना एक क्षोभजन घटना थी। पांडे-बन्धु अब उत्तर प्रदेश के विधायक हैं।

इस स्थिति और इनसे देश और समाज को होने वाली हानियों से सभी परिचित हैं। और शायद इसी बात को ध्यान में रखते हुए १९८५ में श्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजीव गांधी ने कांग्रेस को सौवीं वर्ष गांठ पर बम्बई में हुए अधिवेशन पर इन तत्त्वों को दूर करने का वादा दिया था। परन्तु ऐसा कुछ न हो सका। शायद उन्हें शीघ्र ही वास्तविकता का ज्ञान हो गया होगा कि वर्तमान शासन व्यवस्था में सत्ता के ऐसे ठेकेदारों व बिचौलियों का प्रमुख स्थान हैं। इन्हें हटाने से कहीं उनकी स्वयं की गद्दी ही न चली जाये। अतः इन दलालों को हटाने का उनका वायदा केवल वायदा ही रह गया।

इस संदर्भ में यह स्पष्ट कर दिया जाए कि गुंडों और असामाजिक तत्त्वों का सहारा लगभग सभी राजनीतिक दल ले रहे हैं, यद्यपि सीमा अलग-अलग है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या इन तत्त्वों को समाप्त कर इनके प्रभाव को राजतन्त्र से दूर किया जा सकता है? क्या वे इन तत्त्वों के विरुद्ध कड़ा से कड़ा कदम उठाने के लिए तैयार हैं?ऐसा करने पर देश व राज्य के नेताओं पर इस प्रकार के दबाव पड़ने स्वाभाविक हैं कि उनकी अपनी ही सत्ता खतरे में पड़ जाये।

किसी भी ध्येय की प्राप्ति के लिए उसका मूल्य चुकाना पड़ता है और बिना मूल्य चुकाये सफलता संदिग्ध हैं। आज हम इसी चौराहे पर खड़े हैं। श्री रंगाराव व श्री हाशमी की हत्या के संबंध में सरकारों ने दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है। परन्तु पिछले आश्वासनों के समान कहीं यह कोरा आश्वासन ही न रह जाये। क्या सदा की भांति जांच अधिकारियों पर कुछ न करने के लिए दबाव नहीं पड़ेगा? यदि नेतागण भी दलगत नीति में फंसे रहे तो देश "माफिया राज" बन कर रह जायेगा। राज्य का संचालन कुछ सिद्धान्तों और मूल्यों पर आधारित होता है। उनको तोड़ना अन्ततः सभी के लिए घातक सिद्ध हो सकता है आशा है कि हमारे नेता इस चुनौती को स्वीकार कर देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैकल्पिक चिकित्साएं

—अशोक गौड़

शरीर से गन्दगी निकालने की प्राकृतिक कोशिश ही रोग है और रोग के उभरते लक्षण इस कोशिश का प्राकृतिक इलाज हैं। वहीं पर प्राकृतिक इलाज इस शरीर से गन्दगी को निकाल फेंकने में पूरी मदद पहुंचाते हैं और मनुष्य को स्वस्थ बनाते हैं। इस नैसर्गिक इलाज में उपवास, फलाहार, सन्तुलित भोजन, पानी, मिट्टी, धूप, हवा, प्राणायाम, आसन, कसरत और मालिश बहुत सहायक होते हैं, जिससे रोग दबते नहीं वरन् जड़ से ही नेस्तोनाबूद होते हैं।

धूप, हवा, मिट्टी, पानी और आकाश जो मनुष्य के भौतिक तत्त्व हैं, इनके माध्यम से ही प्राकृतिक चिकित्सा की जाती है। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को सर्वप्रथम पश्चिमी जर्मनी में अमल में लाया गया। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को नए आयाम दिए गए। डा० कुलरंजन मुकर्जी, डा० लक्ष्मीनारायण चौधरी, डा० जानकीशरण शर्मा तथा गोरखपुर के विट्ठलदास मोदी ने प्राकृतिक चिकित्सालयों के माध्यम से प्राकृतिक चिकित्सा को लोकप्रिय बनाने में भरपूर शिरकत की है।

प्राकृतिक चिकित्सा में शारीरिक विकारों एवं अवरोधों को ही रोगों का केन्द्र-बिन्दु माना जाता है तथा उन्हें दूर करने के लिए धूप, मिट्टी, जल, उपवास, आसन एवं उत्सर्जन में एनीमा जैसी चिकित्सा विधियों पर अमल किया जाता है और उनके द्वारा नाना रोगों से छुटकारा पाया जाता है।

वैसे तो प्राकृतिक चिकित्सा सभी रोगों के लिए वरदान है। अलबत्ता डायबिटीज, अस्थमा, चर्म रोग और पेट के सभी रोग जिनमें सभी दूसरी चिकित्सायें निरर्थक रही हों, उनमें प्राकृतिक चिकित्सा सफल होती है। प्राकृतिक चिकित्सकों ने अपने तजुर्बे से यह सिद्ध कर दिया कि अंग्रेजी दवायें बीमारी को ठीक करना तो दूर उलटे बाहर निकलते हुए रोग को दबा देती हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धूप से चिकित्सा हेतु रोगी के सिर पर ठण्डे पानी का तौलिया लपेट कर धूप में बिठाया जाता है। इस धूप स्नान में त्वचा से पसीना बहने लगता है। त्वचा के रोग कुछ अवरुद्ध होकर कई रोगों को जन्म देते हैं और इनके खुलने पर रोगों के विकारों एवं अवरोधों से छुट्टी मिलती है। जी घबराना, सिर दर्द होना, चक्कर आना तथा शरीर में थकावट जैसे रोग इस विधि से दूर किये जाते हैं।

मिट्टी से चिकित्सा हेतु भूतल के नीचे से आधा हाथ गहरी मिट्टी को उपयोग में लाया जाता है, जिससे फोड़ा पककर फूट जाता है। यदि आंखों में दर्द है, जलन है तब आँखों पर गीली मिट्टी को गेंद बनाकर रखने से आंखों की तकलीफ दूर हो जाती है। पेड़ पर मिट्टी की गेंद बनाकर रखने से कब्जियत जाती रहती है। यदि सांप काट खाये तो सम्बन्धित व्यक्ति को गले तक मिट्टी का लेप कर थोड़े समय तक रखने पर मिट्टी त्वचा के द्वारा सारा जहर सोखकर आदमी को चंगा कर देती है।

जल चिकित्सा के लिए गरम, ठण्डे और गुनगुने पानी को काम में लाया जाता है। थकान दूर करने के लिए गरम पानी में घुटने तक पैर रखना तथा टांसिलों के लिए गले पर ठण्डे पानी की पट्टी चढ़ाने एवं अधिक बुखार में पूरे शरीर में गीली चादर लपेटने से सम्बन्धित रोग दूर हो जाता है।

आसन और योगासन नैसर्गिक क्रिया का मुख्य आयाम कहा जा सकता है शलभासन सभी रोगों के लिए, चक्रासन नाड़ी शक्ति को बढ़ाने के लिए, सर्पासन पेट के अंग-प्रत्यंग एवं मांसपेशियों को सबल बनाने के लिए उपयोगी है। प्राणायाम द्वारा ली जाने वाली गहरी व लम्बी सांसों से शारीरिक अंगों को तरोताजा रखकर मानसिक तनाव दूर किया जाता है।

यदि भारत सरकार दूसरी चिकित्साओं का सौवां हिस्सा भी इस पर व्यय करे तो यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि आज जो लोग प्रतिदिन ऐलोपैथी की ओर भाग रहे हैं वे प्राकृतिक चिकित्सा को अपनाने लगेंगे, क्योंकि यह चिकित्सा सुगम एवं अल्प साधनों में भी महत्त्वपूर्ण असर करती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संतुलित आहार

—जया भण्डावरी

अपने शरीर को खूबसूरत और आकर्षक बनाने के लिए लड़कियां कृत्रिम सौन्दर्य-प्रसाधनों का जितना उपयोग करती हैं उनका सौन्दर्य व आकर्षण उतना ही विकृत होता जाता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं आकर्षण के लिए स्वस्थ व नीरोग रहना आवश्यक है तथा स्वास्थ्य के लिए जरूरी है पौष्टिक और संतुलित आहार। आहार में फलों और हरी सब्जियों का अधिक प्रयोग करने से शारीरिक सौन्दर्य विकसित होता है। रोगों से भी सुरक्षा मिलती है।

फलों एवं सब्जियों का अधिक प्रयोग करने से शरीर को शक्ति मिलती है, रक्त का अधिक मात्रा में निर्माण होता है और त्वचा में निखार आता है। टमाटर, मूली, गाजर, चुकन्दर, खीरा, फूल-गोभी, नींबू, हरी मिर्च खाने से पाचन क्रिया तीव्र होती है। नींबू, हरी मिर्च, गाजर से शरीर को विटामिन "सी" अधिक मात्रा में मिलता है और भोजन शीघ्र पच जाता है। मसूड़े स्वस्थ होते हैं।

नींबू, टमाटर, खीरा, प्याज आदि से अनेक प्रकार के सौन्दर्य प्रसाधन भी बनाये जा सकते हैं। १० ग्राम नींबू के रस में १० ग्राम टमाटर का रस मिलाकर चेहरे और शरीर के कोमल अंगों पर मालिश करें। फिर कुछ देर रुक कर शीतल जल से स्नान करें। आपकी त्वचा में निखार आयेगा। सर्दी के मौसम में हल्के गरम पानी से भी स्नान किया जा सकता है। इस तरह के स्नान से चेहरे की झुर्रियाँ भी नष्ट हो जाती हैं।

संतरों के सेवन से शरीर को बहुत लाभ होता है। सन्तरा उत्तम सौन्दर्य प्रसाधक भी है। संतरे से शरीर को पर्याप्त मात्रा में विटामिन "सी" मिलता है। इसके छिलके को सुखा कर, बारीक कूट कर पीस लें। फिर उसमें बेसन मिलाकर थोड़े-से जल के साथ लोशन बनाकर रख लें। प्रतिदिन स्नान से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहले अपने चेहरे पर उसी लोशन को रगड़ें। चेहरे की कालिमा नष्ट हो जाएगी, क्योंकि छिलके को रगड़ने से रक्त संचार तीव्र हो जाता है और चेहरे पर स्वाभाविक लालिमा उतर आती है।

सेब के रस को शहद के साथ मिलाकर चेहरे और त्वचा पर मलने से रंग-रूप निखरता है। खस-खस और सरसों के दाने पीसकर बेसन के साथ दूध डालकर लुगदी बना लें और स्नान करने से पहले शरीर पर मालिश करें। त्वचा निखर उठेगी। चिकनाई और मैल हट जाने से पसीने के छिद्र खुल जाते हैं, त्वचा स्निग्ध हो जाती है।

नींबू के सेवन से पाचन क्रिया संतुलित होती है। पानी में नींबू का रस निचोड़ कर पीने से कब्ज तो नष्ट होती ही है, विटामिन "सी" भी पर्याप्त रूप में मिलता है। जुकाम नष्ट होता है। नींबू का रस सिर में लगाने से बालों में चमक आती हैं और सिरकी नष्ट होती है।

नींबू का रस १० ग्राम, गुलाब जल ५ ग्राम और ग्लिसरीन ३० ग्राम मिलाकर मिश्रण बनाएं। रात्रि को मिश्रण को चेहरे पर मलने से शीत ऋतु में विकृत हुई त्वचा ठीक होती है। खुरदरापन दूर हो जाता है।

खीरा भी कम गुणकारी नहीं है। इसमें जल की मात्रा अधिक होती है। खीरे के बारीक टुकड़े काटकर दो औंस ग्लिसरीन या जैतून के तेल में डालकर सुबह इन टुकड़ों को उंगलियों से थोड़ा-सा मसल कर कपड़े से छान लें। छने हुए तेल को चेहरे पर मलने से त्वचा का रंग साफ होता है। शरीर के दूसरे अंगों को इस लोशन की सहायता से खूबसूरत बनाया जा सकता है।

सन्तरे के छिलके, थोड़ा-सा केसर, बादाम की दो गिरी लेकर दही के साथ पीस कर चेहरे पर मलने से त्वचा की अनावश्यक लालिमा ठीक होती है। हरा धनिया जल से साफ करके खाने से मुंह की दुर्गन्ध दूर होती है। हरा धनिया खाने से रक्त शुद्ध होता ह।

नारियल के जल और मलाई को मिलाकर शरीर के विभिन्न भागों पर मलने से त्वचा साफ होती है। मेथी भी स्वास्थ्य व सौन्दर्य विकास के लिए गुणकारी होती है। मेथी की सब्जी अधिक मात्रा में खाने से पाचन क्रिया

(शेष पृष्ठ १०८ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बकरीद के अवसर पर जानवरों की कुरबानी गैरकानूनी

—डॉ. श्रीराम आर्य एटा

लखनऊ, २८ मई। अतिरिक्त मुन्सिफ मजिस्ट्रेट (षष्ठ) श्री एस. पी. शुक्ल ने बकरीद के अवसर पर एक वर्ग द्वारा भैंसे या अन्य जानवरों की कुर्बानी को गैर-कानूनी ठहराते हुए कहा है कि कुरान शरीफ अथवा इस्लाम किसी जानवर की कुरबानी की इजाजत नहीं देता हैं।

एक रोचक मुकदमे में फैसला देते हुए विद्वान् मजिस्ट्रेट ने कहा कि कोई धार्मिक कृत्य शांति, व्यवस्था, नैतिकता और स्वास्थ्य के विपरीत नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए हिन्दू धर्म में भी सती प्रथा अथवा आत्म-दाह किसी पाप के प्रायश्चित्त करने के प्रकार बताये गये हैं परन्तु यह कृत्य उपरोक्त तीनों चीजों के प्रतिकूल होने के कारण न्यायालय किसी को ऐसा करने की इजाजत नहीं दे सकता।

रामआसरे, रामभरोसे आदि बनाम शमशाद वगैरह के इस वाद में लखनऊ के महिलामऊ ग्राम निवासी रामआसरे सहित गाँव के ६ अन्य लोगों ने अदालत में वाद दायर करते हुए कहा था कि उन्हीं के गांव के कुछ लोग १ नवम्बर १९७९ को बकरीद के अवसर पर सार्वजनिक स्थान पर भैंसा काटना चाहते हैं। उनके इस काम से जहां सार्वजनिक स्वास्थ्य को खतरा उत्पन्न होगा वहीं दूसरे वर्ग के लोगों की धार्मिक भावना को भी ठेस पहुंचेगी। वादी का कहना था कि प्रतिवादियों का यह कार्य नैतिकता के विरुद्ध है इसलिए उन्हें ऐसा करने से रोका जाय।

तत्कालीन मुन्सिफ मजिस्ट्रेट श्री एस. पी. मौर्य ने इस मामले में अन्तरिम स्थान आदेश जारी कर अदालत का निर्णय होने तक गांव में भैंस-भैंसा काटने पर रोक लगा दी थी।

उस समय मजिस्ट्रेट ने इस शर्त पर अन्तरिम आदेश जारी किया था

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि चूंकि प्रतिवादी बकरीद पर कुर्बानी देने के लिए भैंसा खरीद लाये हैं, इसलिए १६०० रुपये की राशि प्रतिवादी को अदा करें जिससे वे बकरे ला कर कुरबानी दे सकें। वादी ने उसी समय यह राशि दे दी थी।

मुकदमे की सुनवाई के दौरान वादी की और से गाँव के प्रधान राम-आसरे और महन्त विद्याधर दास ने गवाही देते हुए कहा कि गांव में कभी भी ईद व बकरीद के अवसर पर कोई कुर्बानी नहीं दी गई थी। गवाहों का कहना था कि १९७८-७९ में जब से रफीउद्दीन नामक एक व्यक्ति मस्जिद में आया तभी से उसने गाँव के एक वर्ग के लोगों को बकरीद के मौके पर भैंसे की कुर्बानी के लिए प्रेरित करना शुरू कर दिया था।

वादी ने अपने साक्ष्य में कासगंज, जिला एटा निवासी कुरान शरीफ के विशेषज्ञ डा. श्रीराम आर्य को अदालत में प्रस्तुत किया जिन्होंने अपनी गवाही में स्पष्ट रूप से कहा कि कुरान में कहीं भी यह नहीं लिखा कि गाय, भैंस या भैंसे की कुर्बानी होनी चाहिए। कुरान में केवल एक ही आदेश हज के समय ऊँट की कुर्बानी का है। इसके अलावा किसी दूसरे जानवर की कुर्बानी का आदेश कुरान जैसी पवित्र पुस्तक में नहीं है। गवाह का कहना था कि कोई व्यक्ति भैंस, भैंसे, गाय या उसी तरह के अन्य जानवरों को काटता है तो वह कुर्बानी इस्लाम धर्म के विरुद्ध है।

प्रतिवादी ने अपने साक्ष्य में सय्यद अली, सुन्दरलाल, मो. फारूक, रईस अहमद और रफीउद्दीन को पेश किया।

इसमें कोई भी गवाह अदालत में यह नहीं बता सका कि गांव में इसके पूर्व कुर्बानी होती थी। गवाह सय्यद अली का कहना था कि उन्हें कुर्बानी करने की इजाजत मिली थी। लेकिन वे इसका कोई प्रमाणपत्र प्रस्तुत नहीं कर सके। गवाह का यह भी कहना था कि कुर्बानी करना उनका मजहबी फर्ज है लेकिन यह फर्ज किस किताब में लिखा है इस बारे में भी वे अदालत में नहीं बता सके।

गवाह रफीउद्दीन का कहना था वे गाँव की मस्जिद के हाफिज हैं और उन्हें पूरी कुरान शरीफ रटी हुई है। उनका कहना था कि कुरान की हज्ज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के पारे १७ के रुकू १२ में किसी आयत में आया है कि कुर्बानी फर्ज है लेकिन जब गवाह को अदालत में कुरान शरीफ दी गई तो वे ऐसी किसी आयत को नहीं दिखा सके। गवाह से जब रुकू की आयत ३ के बारे में पूछा गया तो उसने कहा कि इस आयत में लिखा है खुदा को न कुर्बानी का गोश्त पहुंचता है और न ही उसका खून बल्कि खुदा के पास श्रद्धा-भक्ति पहुंचती है।

वादी की ओर से मामले में श्री वेदप्रकाश और रेवती रमण रस्तोगी एडवोकेट ने बहस की जबकि प्रतिवादी की ओर से श्री जैड. जिलानी प्रस्तुत हुए।

दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद विद्वान् मजिस्ट्रेट ने अपने १९-पृष्ठीय निर्णय में लिखा—किसी भी धर्म के आधारभूत सिद्धान्त हिंसा में विश्वास नहीं करते। मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि पाक कुरान शरीफ में भैंस, भैंसे अथवा किसी भी जानवर की कुर्बानी का संदर्भ कही नहीं आया है। हिंसा को कुरान शरीफ में पाप कहा गया है।

विवादित गांव में कोई बूचड़खाना नहीं है। जानवरों को बूचड़खाने के अतिरिक्त किसी अन्य जगह पर नहीं काटा जा सकता। यदि ऐसा किया जाएगा तो निश्चय ही साम्प्रदायिकता भड़केगी और समाज में घृणा फैलेगी उसके खून के बहाव और मास की दुर्गन्ध से बीमारियाँ फैलेंगी इसलिए मैं प्रतिवादी को ऐसा करने का आदेश नहीं दे सकता—मजिस्ट्रेट ने अपने निर्णय में लिखा है।

मजिस्ट्रेट ने प्रतिवादी को आदेश दिया कि वे तीन मास के अन्दर-अन्दर वादी द्वारा दिया गया १९०० रुपया वापस करे वरना वादी को यह अधिकार होगा कि वह डिग्री द्वारा उक्त रुपया ब्याज सहित वसूल कर ले।

(पृष्ठ १०५ का शेष)

तीव्र होती है तथा कब्ज नहीं रहती। इससे शरीर को काफी "लौह तत्त्व" मिलता है। मेथी के दाने जल के साथ पीस कर बालों में लगाने से बालों का झड़ना बन्द हो जाता है। करेले के रस से रक्त-संचार ठीक होता है तथा फोड़े फुन्सी और मुहासे भी नष्ट होते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विषैला वृक्ष

—कन्हैयालाल गौड़

एक बार नारद जी पायूष पावन पर्वत की तलहटी में भ्रमण कर रहे थे।

सहसा उन्होंने एक विचित्र वृक्ष देखा, जिसके तना था, डालियां थीं, पर वे सब ठूंठ सी लगती थीं। वृक्ष में एक भी पत्ता नहीं था फल अवश्य थे पर वे काले थे। उस वृक्ष के नीचे सैंकड़ों जीव जन्तु और पक्षी मरे पड़े थे। नारद ने विचार किया कि ये फल विषैले होंगे। इन जीवों ने इन्हें खाने का प्रयास किया होगा और इसी से अपने प्राणों से हाथ धो बैठे होंगे।

नारद इस विचित्र वृक्ष की विचित्रता ज्ञान करने के लिए ब्रह्मा के पास पहुंचे और अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए विचित्र वृक्ष की बात कही।

महर्षि ब्रह्मा ने गहरी सांस छोड़ते हुए कहा—"दो-तीन वर्ष पहले वहां एक युवक आया था, वह जिससे भी मिलता भक्ति और वैराग्य की बातें करता था। लोगों की दृष्टि में वह पागल लगता था। अतः घर वालों ने उसे निकम्मा समझ कर निकाल दिया। युवक का एक हाथ खराब था, फिर भी वह बहुत मेहनती और स्वाभिमानी था। इसलिए उसने प्राकृतिक जीवन जीने का विचार किया। आहार सम्बन्धी थोड़ी-सी आवश्यकताएं थीं, थोड़ा समय उसमें लगाकर शेष समय वह निःस्वार्थ सेवा और परोपकार में व्यतीत करना चाहता था। अतः उसने अपने खाने के लिए कुछ फलों वाले पौधे लगाने का निश्चय किया। पर बिना किसी उपकरण के उस कठोर भूमि को खोदना कठिन काम था। युवक ने साहस नहीं छोड़ा और अपने हाथ से कभी एक कभी दो ढेले खोद पाता था। इस तरह वह कई दिनों तक खोदता रहा। इन दिनों उसकी बहन आई और हंसती हुई निकल गई, उसकी दृष्टि में भाई जैसा मूर्ख व्यक्ति इस संसार में कोई नहीं था। कुछ देर में पत्नी आई। उसके हाथ में पानी से भरा एक घड़ा था। युवक ने बड़ी आशा से हाथ उठाकर संकेत किया कि इसे थोड़ा सा पानी पिला दे। पत्नी ने पानी पिलाना तो दूर रहा,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दो मीठे बोल भी नहीं बोले। उलटे, मजाक में उसने कहा—"भागीरथ जी ! थोड़ा और खोदिये, शीघ्र ही गंगा जी निकल आएगी।"

निराश युवक धीरे-धीरे पुनः भूमि खोदने लगा। तभी उधर से फलों का टोकरा लिये उसका पिता आया। भूख से व्याकुल युवक ने इशारे से एक फल खाने को मांगा। लेकिन फल के बदले में युवक को वही निराशा मिली और कहा मूर्ख ? दिन भर निकम्मा बैठा रहता है। खाना कहां से मिलेगा ? खाना कहीं आकाश से टपकता है क्या ? उठ, कुछ काम कर, अपनी रोटी-स्वयं कमा।"

युवक की आंखें भर आईं। बेचारा कुछ बोल न सका भूखा-प्यासा ही भूमि खोदने में लगा रहा, पर मन ही मन विचार करता रहा—"विश्व में प्रेम और दया का स्रोत न सूखे तो मनुष्य कितना खुशहाल हो सकता है। जगत् साधनों के अभाव में नहीं, स्वार्थभावना से दुःख बढ़ने की सत्यता आज प्रतीत हुई।"

एक दिन प्रातः काल जैसे ही उसने मिट्टी का एक ढेला उठाया, उसकी आंखें चौंधिया गईं। एक बहुमूल्य मणि का टुकड़ा उसके हाथ आ गया। वह उसमें मणि को लेकर ज्यों ही खड़ा हुआ तो लोग भ्रम में पड़ गये कि आज समय से पूर्व ही सूर्योदय कैसे हो गया ? जहां तक प्रकाश पहुंचा लोग भागते चले आये और युवक के भाग्य की प्रशंसा करने लगे। बहन आई और भाई को नहलाने लगी। पत्नी आई और उसके शरीर पर चन्दन का लेप कर उसे बहुमूल्य वस्त्र पहना गई। पिता मिठाई व पकवान से सजा थाल लेकर आया और बोला—"बेटा ! बहुत भूखे लग रहे हो, लो पहले भोजन कर लो।"

युवक को स्वार्थी लोगों पर हंसी आ गई। उसने सारे वस्त्राभूषण उतार फेंके और भोजन भी नहीं किया। उस स्थान पर मीठे फलों का पौधा लगाकर अपनी मणि लेकर युवक न जाने कहाँ चला गया। उसका लगाया हुआ पौधा कुछ दिनों में वृक्ष होकर मीठे फल देने लगा।

धीरे-धीरे युवक की ख्याति सारे विश्व में फैलने लगी। जो भी मणि निकलने की बात सुनता, उधर ही दौड़ा चला जाता देखते-देखते सैकड़ों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वार्थी मानव मणि पाने के लालच में उस पर्वत की खुदाई करने लगे। मणि तो मिली नहीं, पर एक भारी भरकम पत्थर का टुकड़ा निकला लोग सामूहिक रूप से उस पत्थर को हटाने के लिए जुट पड़े। पत्थर के हटते ही उसके पीछे छिपा भयंकर काला सांप फुंकार मारकर दौड़ा। लोग भागे, पर उस सांप ने उनमें से अधिकतर मनुष्यों को डस लिया सांप का विष -इस वृक्ष में भी फैल गया। उस दिन से इस वृक्ष के सब पत्ते झड़ गये। इसमें फल भी विषैले लगने लगे। नारद ! इसके बाद से आज तक किसी ने भी इस वृक्ष के नीचे बैठकर ठण्डी छाया प्राप्त करने का अवसर नहीं पाया।" नारद ने आश्चर्य से प्रश्न किया—"भगवान् ! क्या यह वृक्ष पुनः हरा भरा हो सकता है ? महर्षि ब्रह्मा ने गंभीर होकर धीरे-धीरे कहा-सृष्टि में कुछ भी असंभव नहीं है, पर आज तो पृथ्वी के अधिकतर मनुष्यों को स्वार्थ और मोह रूपी सांप ने डस लिया है। मानव जितने इस शान्ति रूपी वृक्ष से टकराते हैं, उतने ही अधिक इसके फल विषैले होते चले जाते हैं। उस युवक की भांति कोई निःस्वार्थ, प्रेमी व्यक्ति आए और उस वृक्ष का स्पर्श करे तो यह पुनः शीतल, मधुर फलों वाला वृक्ष बन सकता है। ऋषिवर नारद को इस समाधान से सन्तुष्टि हुई।

तात्पर्य यह है कि यदि मानव अपना स्वार्थ त्याग दे और दूसरों की भलाई को विचारे सबको अपना परिवार समझे, सबसे हिलमिल कर प्रेम से रहे तो यह संसार स्वर्ग के समान आनन्ददायक बन सकता है।

स्वामी दिव्यानन्दजी नहीं रहे

रायपुर (मध्य प्रदेश)। आर्य परिव्राजक स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती का पिछली दो फरवरी को ग्राम खरोरा स्थित वेद मन्दिर से आश्रम में दिल की बीमारी के दौरे से देहान्त हो गया। उनकी आयु ८२ वर्ष थी।

रायपुर, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़, भिलाई, दुर्ग आदि की आर्यसमाजों ने उनके निधन पर शोक प्रकट किया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

● नवीनतम

१. वैदिक भजन सिन्धु — २५ रूपये
गायक - श्री सत्यपाल "सरल"

२. प्रकाश भजन सिन्धु — २५ रूपये
गीतकार - स्व. प्रकाशचन्दजी कविरत्न, गायक - श्री महेशचन्द संगीतरत्न

३-४. विवाह गीत (दो कैसेट) — ५० रूपये
(कन्या-पक्ष एवं वर पक्ष) गीत एवं गायन-माता लज्जारानी गोयल एवं श्रीमती सरोज गोयल। विवाह के अवसर पर प्रत्येक परिवार में बजाने योग्य शानदार गीत एवं संगीत से युक्त नये कैसेट।

५-६. वैदिक नित्यकर्म विधि (दो कॅसेट) — ५० रूपये
मन्त्रोच्चारण-स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रत्येक गृहस्थ के लिये निर्दिष्ट नित्यकर्मों की विधि व्याख्या सहित।

७. वेद भारती — ३० रूपये
- शास्त्रीय रागबद्ध मन्त्र। व्याख्या सहित। सम्पादन - श्री सत्यकाम विद्यालंकार. वेदपाठ एवं संगीत - अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्री सत्यशील देशपाण्डे।

●. हमारे अन्य अति लोकप्रिय कैसेट — प्रत्येक ३० रूपये

८. पथिक भजनसिन्धु ९. मुसाफिर भजन सिन्धु १०. श्रद्धा
११. आर्य भजनावली १२. वेदगीताञ्जलि १३. भजनसुधा।

● हमारे शेष संग्रह करने योग्य कैसेट — प्रत्येक २५ रूपये

१४. वैदिक सन्ध्याहवन १५. गायत्री महिमा १६. भक्तिभजनावलि
१७. महर्षि दयानन्द सरस्वती १८. आर्यभजनमाला १९. आर्यसंगीतिका
२०. योगासन प्राणायाम स्वयं शिक्षक २१-२२. महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कॅसेट) स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन।

डाक से मंगाने के लिये

- कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ भेजिये। चार कैसेट तथा उससे ज्यादा का डाक व्यय हम देंगे। तीन कैसेट तक के लिये १० रूपये डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये।
- वी. पी. पी. के आदेश पर डाक एवं पैकिंग व्यय आपको देना होगा।

विशेष उपहार : १२ कैसेट मंगाने वालों को। तथा २० कैसेट मंगाने वालों को २ कैसेट उपहार स्वरूप दिये जायेंगे।

सूचना - व्यापारिक विशेष छूट के लिये पूछताछ आमन्त्रित है।

संसार साहित्य मण्डल
१४१, मुलुण्ड कालोनी, बम्बई - 400 082.
फोन : ५६१ ७१ ३७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रूप से
छिपा
उनमें

श्री ब्रह्मदत्त स्नातक
संस्मरण सुनाते हुए।

दूर-दूर से श्रद्धालु समारोह में आये : एक दृश्य

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक पं० राकेशरानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय
दिल्ली-36 से मुद्रित एवं प्रकाशित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
P. O. मुखमेल र दिल्ली- ६

वैशाख
संवत् २०४६
अप्रैल १९८९

Delhi Postal
D-C-201
N. R. 10719/65

"वेदभिक्षु जी ने विदेशों में भी वेदों का नाद गुंजाया।"

*

'भाषा' के प्रधान सम्पादक डाक्टर वेदप्रताप वैदिक

आर्यसमाज मन्दिर मार्ग में आयोजित महात्मा वेदभिक्षुः जयन्ती समारोह में उपस्थित जनसमूह की झांकी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi